ज्योतिष और फिल्म व्यवसाय

ड़ॉ.नारायण दत्त श्रीमाली



फिल्मी दुनिया

[लोकप्रिय मासिक फिल्म-पत्रिका]

जिसकी प्रतियां भारत की २५०० से अधिक बुक-स्टालों पर बेची जाती हैं और दो लाख से अधिक पाठक प्रति मास इसे पढ़ते हैं।

यदि आप नहीं पढ़ पाए हैं तो आज ही खरीदिए। भारत के सभी शहरों के न्यूज एजेण्टों से तथा सभी रेलवे बुक-स्टालों से इसे आप खरीद सकते हैं। इसके प्रत्येक अंक में—

भड़कीली आकर्षक कई रंगों में बड़ी तस्वीरें, नई फिल्मों के ड्रामे और सचित्र कहानियां, फिल्मी कलाकारों के प्राईवेट फोटो, आने वाली फिल्मों की सचित्र कहानियाँ और कई तरह के सनसनीखेज लेख आदि रहते हैं। "फिल्मी दुनिया" हाथों हाथ बिकती है और बुक-स्टालों पर पहुँचते ही खत्म हो जाती है। नमूने की प्रति मंगाना चाहें तो कुल २-०० पैसे के डाक टिकट सादे लिफाफे में रखकर भेज दीजिए। पृष्ठ संख्या १०० से अधिक, मूल्य दो रुपया।

"फिल्मी दुनिया" देखिये, फिर आप इसे हर मास पढ़ने को मजबूर हो जायेंगे।

"फिल्मी दुनिया" पूरे भारत में सब से अधिक छपने व बिकने वाला हिन्दी फिल्म मासिक है।

फिल्मी दुनिया कार्यालय १६, दरियागंज, दिल्ली-६

ज्योतिष और फिल्म व्यवसाय

डॉ. नारायण दत्त 'श्रीमाली'

प्रकाशक
सुमन पॉकेट बुक्स
१९, दरियागंज दिल्ली-६
फोन : २७८०८७

वितरक :
रतन एण्ड को० बुकसेलर्स
दरीबा कलां, दिल्ली-६
फोन : २७६९४७

मूल्य :
३) रुपये

मुद्रक :
तिलक प्रिंटिंग प्रेस,
बाजार सीताराम, दिल्ली-६

दो शब्द

फिल्म बीसवीं सदी की सर्वश्रेष्ठ कला है, और यह एक कला ही नहीं, अपितु कई कलाओं का संगम है, यह आज के युग का एक ऐसा सशक्त माध्यम है जिसके माध्यम से व्यक्ति पूर्ण क्षमता के साथ अपनी बात स्पष्ट रूप से लोगों के सामने रख सकता है।

आज की नई पीढ़ी सिनेमा से पूर्णतः प्रभावित है, कौन-सा ऐसा घर है जिस घर में फिल्मी गीत नहीं गुनगुनाये जाते, कौन-सा ऐसा नवयुवक या नवयुवती है जो एक विशेष हीरो या हिरोइन से प्रभावित नहीं है, कौन-सा ऐसा परिवार है जो फिल्म से निकले फैशन को नहीं अपनाता, तात्पर्य यह कि हम चाहते हुए भी इस नई पीढ़ी को फिल्मी वातावरण से, उसके प्रभाव से दूर नहीं रख सकते।

आज हर वर्ष सैकड़ों नवयुवक नवयुवतियां घर से भागकर भाग्य आजमाने बम्बई जा पहुंचते हैं उनकी आंखों में आलीशान बंगला, लम्बी और महंगी कार तथा वैभवपूर्ण जीवन घूमता है, पर बिना ग्रह संयोग के ठोकरें खाते-खाते होटलों में बैरागिरी करते हैं या भूखे पेट पिचके गाल लेकर वापिस घर जा पहुंचते हैं। इस प्रकार से उनके जीवन का काफी मूल्यवान समय बर्बाद हो जाता है।

मैं नई पीढ़ी के अधिक सम्पर्क में रहा हूं, इनमें से अधिकांश जो मुझे मिले उनका एक ही प्रश्न होता कि क्या मेरी जन्मकुण्डली में फिल्मी जीवन का ग्रह योग है? क्या मैं इस क्षेत्र में सफलता प्राप्त कर सकता हूं? कौन-सा मेरा वह समय है जबकि मैं प्रयत्न

प्रवेश !

फिल्म आज के जीवन का एक आवश्यक अंग है। गत पचास वर्षों में सामाजिक जीवन में फिल्म ने जो क्रान्ति की है, वह आश्चर्यजनक है, वस्तुतः आज के युग में फिल्म के बिना रहने की कल्पना ही नहीं की जा सकती।

आज की नवयुवक पीढ़ी चमक-दमक से प्रभावित है, फिल्म व्यवसाय का मूलाधार ही चमक-दमक है, सुन्दर अभिनेत्रियां, नित नये बदलते परिधान, भव्य अट्टालिकाएं, रहने के ठाठ बाट, शान शौकत, चमचमाती कारें और जीवन की रंगीनियां—इन सब से प्रभावित होकर आज के नवयुवक-नवयुवतियाँ स्वाभाविक रूप से इस ओर खिंची रहती है।

मुझे प्रत्येक वर्ग, स्तर और लोगों से नित मिलना-जुलना पड़ता है, नई पीढ़ी का जहां तक प्रश्न है, लगभग निन्यानवे प्रतिशत या यों कहूं कि शत प्रतिशत युवक युवतियों का एक ही प्रश्न है, कि क्या फिल्म क्षेत्र में जाने का मेरे लिए कोई चान्स है ? क्या किसी न किसी रूप में मैं फिल्म क्षेत्र से सम्बद्ध हो सकता हूं, और जब मेरा उत्तर 'ना' होता है, तो उनका चेहरा उतर जाता है, मुस्कराहट बिखर जाती है, और उसे ऐसा लगने लगता है, मानो जीवन एक प्रकार से व्यर्थ सा हो गया है।

नवयुवकों-नवयुवतियों के अतिरिक्त कई ज्योतिषियों एवं प्रबुद्ध पाठकों का भी आग्रह था कि मैं एक ऐसी पुस्तक लिखूं, जिससे यह ज्ञात किया जा सके, कि किन ग्रहों के संयोग से फिल्म से सम्बन्धित हो सकते हैं, ऐसे कौन से योग हैं, जिनसे यह जाना जा सके, कि

अमुक व्यक्ति फिल्म क्षेत्र में प्रवेश पा सकेगा, या अभिनेता, डायरेक्टर, निर्देशक, खलनायक आदि बन सकेगा ।

फिल्म क्षेत्र से मेरा पुराना सम्पर्क रहा है, और अधिकांश अभिनेता, अभिनेत्रियां, डायरेक्टर, निर्देशक आदि से घरेलू सम्पर्क हैं, उनकी जन्मपत्रिकाएं तथा हस्तचित्र देखने का अवसर मिला है । मुझे प्रसन्नता है, कि किसी ने भी कभी कोई मेरी बात नहीं टाली, कई रूपों में फिल्म क्षेत्र से सम्बन्धित होने के आग्रह आने पर भी इस चमक दमक से दूर ही रहा हूं, अस्तु ।

फिल्म का मूलाधार अभिनय है, जिसके इर्द गिर्द अन्य सभी घूमते हैं, संवाद, कहानी, गीत, कैमरा आदि इसी के पूरक हैं, और अभिनय का कारक ग्रह शुक्र है, अतः शुक्र का सांगोपांग अध्ययन इस दृष्टि से परमावश्यक है ।

जन्मकुण्डली के बारह भावों में चतुर्थ भाव 'जनता' का प्रतिनिधित्व करता है । अभिनय का मूलाधार जनता है, अर्थात् जब जनता द्वारा अभिनय सराहा जाता है, तभी उसकी सार्थकता है, और इसका अस्तित्व सम्भव है । इस दृष्टि से चतुर्थ भाव का पूर्ण विवेचन भी परमावश्यक है ।

मैं फिल्म क्षेत्र को बुरा नहीं मानता, बल्कि मैंने तो प्रतिष्ठित घराने के बालकों की जन्म कुण्डलियों में जब ऐसा योग देखा है, तो उन्हें सलाह दी है, फलस्वरूप उनमें से कई आज विख्यात कलाकार हैं, धन और प्रसिद्धि उनके इर्द गिर्द घूम रही है ।

प्राचीन संस्कृत ग्रन्थों में 'फिल्म योग' का कोई उल्लेख नहीं है, कहीं कहीं सूत्र रूप में 'नाट्य योग' का उल्लेख जरूर मिलता है, पर वह भी इतना कम है, कि उसके माध्यम से सही स्थिति पर पहुंचने में काफी कठिनाई होती है । मेरा आधार वे ही सूत्र रहे हैं, पर

वास्तविक अनुभव का योग इस विवेचन में सर्वाधिक रहा है । पाश्चात्य ज्योतिषियों ने भी इस विषय को छूने का प्रयास अत्यन्त ही कम किया है ।

फिल्म योग की पूर्ण जानकारी के लिए निम्न तथ्यों का सांगोपांग अध्ययन परमावश्यक है ।

१—शुक्र ग्रह ।

२—चतुर्थ भाव ।

३—सप्तम भाव ।

४—चतुर्थेश (चौथे भाव का स्वामी)

५—चतुर्थेश का लग्नेश धनेश से सम्बन्ध ।

६—कारक ग्रह, और

७—फिल्म से सम्बन्धित योग ।

अगले अध्याय में शुक्र ग्रह पर पूर्ण विवेचन किया जा रहा है—

शुक्र

शुक्र ग्रह संसार का सर्वाधिक शक्तिशाली एवं देदीप्यमान ग्रह है। इस पर दृष्टि पड़ते ही दर्शक ठगा-सा रह जाता है, एवं लगभग सम्मोहित-सा हो जाता है, इससे तेज किरणें निकलती-सी दिखाई देती हैं। सूर्य के चतुर्दिक परिक्रमा करने वाले जितने भी ग्रह हैं, शुक्र उन सब में प्रभावशाली एवं प्रकाशयुक्त है।

सूर्य आत्मा का, चन्द्रमा मन का, मंगल पराक्रम का, बुध ग्रह बुद्धि का, गुरू ज्ञान का प्रतिनिधित्व करता है, उसी प्रकार शुक्र ग्रह आनन्द, भोग, ऐश्वर्य, मनोरंजन आदि का प्रतीक है, सुन्दरता का यह मूल देवता है, तथा स्त्रियों को भी सुन्दरता का प्रतीक माना गया है, इसलिए शुक्र ग्रह स्त्रियों का प्रतिनिधि ग्रह भी माना गया है।

शुक्र को अंग्रेजी में 'वीनस' (Venus) कहते हैं, तथा इसे प्रेम सौन्दर्य की देवी मानते हैं। पाश्चात्य जगत में 'वीनस' की जो मूर्तियां देखने को मिलती हैं, वे अत्यन्त सुन्दर, कोमल एवं चित्ताकर्षक हैं, तथा उसे एक ऐसी तरुणी के रूप में चित्रित किया है जिसके अंग-अंग से रूप एवं यौवन छलका पड़ता है।

पाश्चात्य विद्वानों के अनुसार शुक्र या (Aphrodite), गुरू और डायने (Dione) की पुत्री थी, जो कि रूप एवं सुकुमारता में अद्वितीय थी। उसका विवाह वल्कान (Vulcan) से हुआ, किन्तु वह पति के प्रति पूर्णतः समर्पित न हो सकी और न सतीत्व का निर्वाह कर सकी। मँगल की प्रेमिका होने के कारण इसमें दृढ़ता एवं ढीठता भी आ गई थी। शुक्र देवी के ही पुत्र कामदेव हैं, जो विश्व में प्रणय के प्रतीक माने जाते हैं।

नैसर्गिक कुण्डली में शुक्र दूसरे तथा सातवें भाव का अधिपति

है। दूसरा भाव कोष, धन, अन्न, वस्त्र आदि का है, मानव की जैवी आवश्यकतायें ही अन्न, वस्त्र और आवास हैं, साथ ही सप्तम भाव स्त्री का प्रतिनिधित्व करता है, इस प्रकार मानव जीवन की मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति "अन्न वस्त्र आवास एवं भोग" से ही सम्भव है, और इन सबका प्रतिनिधि ग्रह 'शुक्र' ही है, एक प्रकार से हमारे जीवन का मूलाधार ही शुक्र ग्रह है।

१—हाथ में यदि शुक्र पर्वत ऊंचा बलिष्ठ एवं श्रेष्ठ हो तो वह जातक निस्सन्देह कुशल ज्योतिषी, वैद्य, चिकित्सक अथवा शल्यविज्ञ (Surgery) होते हैं, जीवन में भौतिक दृष्टि से वे पूर्णतः सफल कहे जा सकते हैं।

२—अंक शास्त्र की दृष्टि से भी छः के अंक पर शुक्र ग्रह का स्वामित्व है, वे व्यक्ति जिनका जन्म किसी भी महीने की ६, १५, २४ तारीख को हुआ है, भोगी, भौतिक सुखों को प्राप्त करने की चेष्टा करने वाले एवं सुन्दर होते हैं।

३—ऊपर जैसा कि बता चुका हूँ, पाश्चात्य विद्वानों के अनुसार शुक्र देवी मंगल की प्रेमिका थी। मेरे अनुभव के अनुसार भी शुक्र प्रधान स्त्री पुरुष, मंगल प्रधान स्त्री पुरुषों की ओर विशेष आकृष्ट होते हैं, शीघ्र ही गहरे मित्र हो जाते हैं, तथा इनकी मैत्री अटूट होती है।

४—दूसरे भाव में स्थित शुक्र जहां धन संपति देता है, वहीं भोग विलास का प्रतीक भी उसे बना देता है। सप्तम भावस्थ शुक्र व्यक्ति को आवारा एवं बदचलन स्त्रियों के जाल में फंसा देता है, इसी प्रकार जिन स्त्रियों के सप्तम भाव में शुक्र होता है, वे परपुरुषगामी अथवा परपुरुषाकांक्षी तो होती ही हैं।

शुक्र का स्वरूप

शुक्र का स्वरूप विभिन्न विद्वानों ने विभिन्न रूपों में चित्रित किया है, आगे प्रत्येक विद्वान ने जो स्वरूप निर्धारित किया है, उसे स्पष्ट कर रहा हूँ—

श्री वैद्यनाथ दैवज्ञ

असित कुटिल केशः श्याम सोन्दर्यशाली
समतत रुचिरागः सौम्य दृक् कामशीलः ।
अति पवन कफात्मा राजसः श्री निधानः
सुखबल सुगुणानां माकरश्चासुरेज्यः ॥

अर्थात् शुक्र काले घुंघराले बालों वाला, श्याम वर्ण होते हुये भी सौन्दर्यशाली, समानुपातिक अंगों वाला, तीक्ष्ण एवं सौम्य दृष्टि, वात पित्त कफ प्रधान, राजसी स्वभाव, भौतिक सुखों से पूर्ण तथा सद्गुणों का भण्डार है ।

इसके आगे विवेचन करते हुए वैद्यनाथ कहते हैं—

शुक्र शुभ्रवर्ण का है, शीर्षोदय है, अर्थात् शिर की तरफ से उदित होता है, मनुष्य एवं जल पर पूरा अधिकार रखता है, सोलह वर्ष का अत्यन्त सुन्दर एवं दूसरों को सहज ही आकर्षित करनेवाला है । रत्नों में हीरा इसका प्रिय है, इसकी दृष्टि तिरछी, तथा वक्री ग्रह होने के साथ होने पर उसे विजयी बनाता है ।

सप्तम भाव में होने पर पति-पत्नी या घरेलू गार्हस्थ सुख में व्यवधान उपस्थित करता है ।

चन्द्र बली होने पर शुक्र का दोषत्व समाप्त हो जाता है, ऐसा अनुभव है ।

श्री वराहमिहिर

दधि कुमुद शशांक कांति भृत्
स्फुट विकत्किरणो बृहत्तनु ।

सुगति रविकृतो जयान्वितः
कृतयुग रूपकरः सिताह्वयः ॥

अर्थात् दही, कुमुद का खिला हुआ फूल अथवा चन्द्रमा के समान शुभ्र कान्ति वाला, निर्मल किरणों से युक्त, श्रेष्ठ गति तथा सर्वत्र विजय दिलाने वाला है ।

एक अन्य स्थान पर "भृगुः सुखी कान्तवपुः सुलोचन, कफानिलात्माऽसित वक्र मूर्द्धजः" कह कर उसे मोहक शरीर वाला, सुन्दर नेत्र, कफ वायु प्रकृति प्रधान, श्याम वर्ण एवं घुंघराले बालों वाला बताया है ।

श्री कल्याण वर्मा

चारू दीर्घभुजः पृथूरुवदनः शुक्राधिक कान्तिमान् ।
कृष्णाकुंचित सूक्ष्मलम्बित कचो दूर्वांकुर श्यामलः ।
कामी वात कफात्मजोऽति सुभगश्चित्राम्बरो राजसो
लीला वान्मति मान्विशाल नयनः स्थूलांस देशः सितः ।

अर्थात् सुन्दर रूप, लम्बी एवं विशाल भुजाएं, उभरा हुआ सीना, आकर्षक मुख, पुष्ट वीर्यवान, घुंघराले महीन श्यामल केश, दूर्वांकुर के समान श्यामल वर्ण, काम प्रधान, वात पित्त कफ प्रकृति, ऐश्वर्यशाली, सुन्दर वस्त्र पहिनने वाला, रजोगुणी स्वभाव युक्त, बुद्धिमान एवं दूसरों को आकर्षित करने में समर्थ शुक्र ग्रह है ।

इसके अतिरिक्त कल्याण वर्मा ने इसे आग्नेय दिशा का स्वामी, ब्राह्मण वर्ण, स्त्रियों का स्वामी, यजुर्वेद का अधिपति तथा पितृलोक का दर्शक माना है ।

पराशर

पराशर ने इसे राजसी स्वभाव, वीर्यदाता, पुष्पों का अधिपति, जलतत्व प्रधान एवं कामी कहा है ।

सर्वार्थ चिन्तामणि

सुलोचनश्चास्फुजिदात कामः
सुखी बली सुन्दर कान्ति पूर्णः ।
आनील वर्णांकित रोमयुक्तो
रजोगुणः सर्वगुणाभिरामः ।।

सर्वार्थ चिन्तामणिकार श्री व्यंकट शर्मा के अनुसार शुक्र सुन्दर नेत्रों वाला, कामातुर, स्त्री को पूर्णतः सन्तुष्ट करने वाला, सुखी, सुन्दर कांतिमान, रजोगुणी तथा चित्ताकर्षक स्वरूप वाला है ।

श्री नीलकण्ठ दैवज्ञ

शुक्र शुभः स्त्री जलगोऽपराह्न
श्वेतः कफी रूप्य रजोऽम्ल मूलम् ।
विप्रोऽग्नि दिङ् मध्य वयोरतीशो
जलावनी स्निग्ध रुचिर्द्विपाच्च ।।

अर्थात् शुक्र ग्रह शुभ समाचारों को देने वाला, स्त्री संज्ञक, जलचर, तीसरे पहर में बलवान, श्वेत वस्त्र या वस्तुओं में रुचि रखने वाला, कफ प्रकृति प्रधान, चांदी का स्वामी, ब्राह्मण जाति, अग्निकोण में वास करने वाला, रति क्रीड़ा का शौकीन तथा मानवों का अधिपति है ।

मंत्रेश्वर

चित्राम्बराकुंचित कृष्ण केशः
स्थूलाङ्ग देहश्च कफानिलात्मा ।
दूर्वाङ्कुराभः कमनो विशाल
नेत्रो भृगुः साधित शुक्लवृद्धि ।

अर्थात् शुक्र चित्र विचित्र वस्त्रों को पहिनने वाला, घुंघराले बालों वाला, स्थूल शरीर, श्यामवर्ण, विशाल नेत्र एवं वीर्यवान ग्रह है ।

एक स्थान पर मंत्रेश्वर ने इसका वास वेश्यागृह बताया है, तथा इसका स्वामी लक्ष्मी को माना है ।

ऊपर के विवेचन से शुक्र के स्वरूप के बारे में निम्न तथ्य स्पष्ट हुए हैं ।

१. स्वरूप—

अत्यन्त ही सुन्दर, अण्डाकार चेहरा, आकर्षण से युक्त एवं दूसरों को प्रभावित करने की क्षमता वाला ।

२. वर्ण—

अधिकतर विद्वानों ने इसका वर्ण श्याम ही बताया है, लग्न पर अथवा लग्नेश पर दृष्टि होने से जातक के वर्ण में श्यामता आती ही है, फिर भी वह "Black Magic-beauty" के नाम से पुकारा या पुकारी जाती है ।

३. अधिकार—

इसका अधिकार काम वासना पर है । शुक्र ग्रह प्रधान व्यक्ति निस्सन्देह प्रबल कामी होता है, तथा उसके अधिकतर संकेत काम से संबन्धित ही होते हैं ।

अष्टम भावस्थ शुक्र जातक को प्रबल वीर्यवान बनाता है, पर इसके आगे के भावों में ज्यों-ज्यों शुक्र सरकता जाता है, व्यक्ति कामातुर होने पर भी नियन्त्रित रहता है ।

मेरे अनुभव में यह आया है, कि लग्न में शुक्र होने पर उसे पत्नी काले या श्याम रंग की मिलती है, साथ ही वह स्वयं कामातुर रहता है, ऐसा शुक्र यदि शुभ ग्रहों से दृष्ट या युक्त हो तो उसकी कामवासना नियन्त्रित रहती है ।

सप्तम भावस्थ शुक्र दाम्पत्य-जीवन में बाधा उत्पन्न करने वाला पति-पत्नी में मनमुटाव रहता है, व्यक्ति का चित्त इधर-उधर भटकता

बरतते हैं, सफेद वस्त्रों की ओर रुझान इनका स्वाभाविक है। बिना मित्रों के ये रह नहीं सकते, एकान्त इन्हें खलता है, इनका मधुर व्यवहार दूसरों को सहज ही आकृष्ट करने में समर्थ होता है।

कविता, चित्रकारी, शायरी के ये शौकीन होते हैं, कोई ऐसा शौक जरूर होता है, जो ललित कलाओंसे संबंधित होता है, औरउस शौक पर ये धन तथा समय भी व्यतीत करते हैं। सुन्दर सुस्वादु भोजन करने एवं मित्रों को खिलाने में भी इन्हें आनन्द आता है।

इनके व्यवहार से स्त्रियाँ इनकी ओर सहज ही आकर्षित हो जाती हैं, जीवन में यह एक से अधिक स्त्रियों से सम्पर्क रखता है, प्रेम करता है, एवं भोग भोगता है, इनका प्रेम स्वार्थ पर आधारित न होकर शुद्ध भावनाओं पर आधारित रहता हैं।

मन्त्र-तन्त्र आदि में भी विश्वास रखते हैं, तथा उपासना आदि में भी पूरा ध्यान लगाते है।

शुक्र प्रधान व्यक्ति अधिकतर अभिनेता, संगीतज्ञ, कवि, लेखक, ज्योतिषी, मंत्र-तंत्र शास्त्री, बड़े होटलों का मालिक, खाद्य पदार्थ बेचने वाले, मणिहारी माल के विक्रेता, फिल्म निर्माता, डिस्ट्रीब्यूटर एजेण्ट, वाहनों के स्वामी, वाहन चलाने वाले, चिकित्सक, शृंगार-प्रसाधन आदि के विक्रेता, मंत्री, डाक्टर, वैद्य, वीर्य एवं पुरुषत्व बढ़ाने वाली औषधियों के निर्माता-विक्रेता, सजावट का काम करने वाले, स्त्रियों, वैश्याओं के दलाल, आदि होते हैं।

शुक्र से प्रभावित व्यक्ति बाल्यावस्था से ही भोग विलास में रुचि लेने लग जाता है, तथा कई बार उन्हें कुटेव भी पड़ जाती है, जो आगे चलकर तकलीफ देती है।

ये व्यक्ति सहनशील होने के साथ-साथ धोखा भी शीघ्र ही खा जाते हैं, किसी भी शिष्ट, सभ्य को देखकर तुरन्त उन पर विश्वास कर लेते हैं।

इनका भाग्योदय अधिकतर चौबीसवें वर्ष के बाद होता है।

जिन व्यक्तियों की कुण्डली में शुक्र दूषित होता है, वे ऐश्वर्य कामी, पर स्त्री गामी एवं निंदा सहन करने वाले, अहंकारी तथा दुराचारी होते हैं, इनके चेहरे कान्तिहीन होते हैं, स्वभाव चिड़चिड़ा एवं रुखा होता है।

ऐसे व्यक्ति अधिकतर मूत्राशय अथवा लिंग गुदा आदि के रोग से पीड़ित रहते हैं, अण्डकोष वृद्धि, वीर्य विकार, जननक्षमता में न्यूनता, प्रमेह, स्वप्नदोष आदि स्वाभाविक हैं।

ऐसी भी कई कुण्डलियां देखने को मिली है, जिनमें दूषित शुक्र होने के कारण स्त्रियों की दलाली या उन्हें भगा ले जाने के अपराध में जेल भोगनी पड़ी है।

मंत्रेश्वर के अनुसार—

पाण्डुश्लेष्म मरुत्प्रकोप नयन व्याधि प्रमेहामयात्
गुह्यस्यामय मूत्रकृच्छ मदन व्यापत्ति शुक्लति स्रुतिम्।
वारस्त्रीकृत देह कान्ति विहति शोषामयं योगिनी
यक्षी मातृगणाद्भयं प्रिय सुहृद् भंगं सितः सूचयेत्॥

अर्थात्—जिन व्यक्तियों की कुण्डली में शुक्र दूषित होता है उन्हें रक्त हीनता, कफ बात से संबन्धित रोग, नेत्रबिकार, पुरुषत्व संबंधी रोग, मूत्रावरोध, गुह्यरोग, पत्नी को भोग में संतुष्ट न कर सकना, वीर्यपात, सूखा रोग तथा कई प्रकार की कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है।

मेरे अनुभव से ऐसे व्यक्ति वेश्यागामी या पर-पुरुषगामी होते हैं, फलस्वरूप गुह्यरोग तो उन्हें सामान्यतः हो ही जाते हैं।

११. वर्ण—

वैश्या ! शुक्र प्रधान व्यक्ति जीवन में नौकरी की अपेक्षा व्यापार

को अधिक महत्व देते हैं ।

१२. वेद—

यह यजुर्वेद का स्वामी है ।

१३. लोक—

पितृलोक ।

१४. देवता—

लक्ष्मी ! शुक्र प्रधान व्यक्तियों को लक्ष्मी का इष्ट रखना चाहिए ।

१५. राशियाँ—

वृष और तुला इन दो राशियों का यह स्वामी है ।

१६. नक्षत्र—

भरणी, पूर्वाफाल्गुनी तथा पूर्वाषाढ़ इन तीन नक्षत्रोंका अधिपति शुक्र है ।

१७. मूल त्रिकोण—

तुला राशि के दस अंशों तक यह मूल त्रिकोण एवं बाद में स्वगृह है ।

१८. उच्च-राशि—

मीन ।

१९. नीच-राशि—

कन्या ।

२०. मित्रादि—

बुध, शनि, राहु मित्र ।
मंगल, गुरु सम, एवं
सूर्य, चन्द्र शत्रु ग्रह हैं ।

२१. सूर्य से दूरी—

सूर्य से इसकी अधिकतम दूरी ४८° होती है ।

२२. परिचय—

यह सूर्य से सर्वाधिक निकट ग्रह है । अपनी धुरी पर यह २३$\frac{1}{2}$ घंटों में घूमता है, इसका व्यास ७७१३ मील है । लगभग २२५ दिनों में यह राशि चक्र का भ्रमण कर लेता है, एक राशि पर यह लगभग २८ दिन तक रहता है ।

२३. बल—

जन्म कुन्डली के चतुर्थ भाव में रहकर यह सर्वाधिक बलवान होता है, क्योंकि चतुर्थ-भाव वाहन सुखादि का भाव है और इन सौन्दर्य प्रसाधनों का यह कारक ग्रह है ।

नीचे प्रत्येक भाव का सामान्य फल स्पष्ट कर रहा हूं—

(i) लग्न में—

लग्न में यदि शुक्र हो तो उसका वर्ण श्याम, कामी, ऐश्वर्य प्रिय, तथा भोगी होता है, उसका विवाह देरी से होता है ।

(ii) दूसरे भाव में—

दूसरे भाव में शुक्र रहकर श्रेष्ठ ध[illegible] प्रदायक योग बनाता है, इसके व्यवहार तथा व्यक्तित्व में कुछ ऐसा आकर्षण होता है, कि नवयुवतियां बरबस इसकी ओर खिंची रहती है ।

(iii) तीसरे भाव में—

तीसरे भाव में शुक्र कौटुम्बिक विवाद, पूज्य या बड़ी स्त्री में आसक्ति तथा स्त्रियोचित कार्यों अथवा स्त्रियों में लोकप्रिय रहता है ।

(iv) चौथे भाव में—

शुक्र इस भाव में सर्वाधिक कारक माना गया है, ऐसा शुक्र वाहन, सुख एवं अचल संपत्ति देने में समर्थ है ।

(v) पाँचवें भाव में—

पांचवे भाव में शुक्र रहकर विद्यार्जन में बाधाएं उपस्थित करता है, सन्तान विलम्ब से होती है, तथा लड़कियों की अधिकता रहती है।

(vi) छटे भाव में—

छटे भाव में शुक्र व्यक्ति को चालाक धूर्त एवं नीति निपुण बनाता है।

(vii) सातवें भाव में—

सातवें भाव में यदि शुक्र हो तो उसका दाम्पत्य जीवन कटु होता है, पति-पत्नी में मतभेद बने रहते हैं, विवाह विलम्ब से होता है। तथा पर-स्त्रियों की ओर अधिक आकृष्ट रहता है।

(viii) आठवें भाव में—

आठवें भाव में शुक्र सामान्यतः धन कारक ही माना गया है।

(ix) नवें भाव में—

नवें भाव में शुक्र भाग्य बाधा, कष्ट एवं उन्नति के मार्ग में व्यवधान ही उपस्थित करता है।

(x) दसवें भाव में—

यदि दशम भाव में शुक्र हो तो व्यक्ति नौकरी की अपेक्षा व्यापार को अधिक महत्व देता है, पिता-पुत्र में प्राय अनबन रहती है।

(xi) ग्यारहवें भाव में—

ग्यारहवें भाव में शुक्र की उपस्थिति मेरे अनुभव में धन-न्यूनता ही देती है, संतान विलम्ब से होती है, अधिकतर पहली सन्तान कन्या होती है, तथा पुत्रों की अपेक्षा कन्या ज्यादा होती हैं।

(xii) बारहवें भाव में—

बारहवें भाव में शुक्र पूर्ण सुख ऐश्वर्य एवं धन प्रदान करता है, विवाह शीघ्र ही हो जाता है, तथा पूर्ण भौतिक सुख प्राप्त करता है

२४. आयु—

सोलहवें वर्ष पर शुक्र का अधिकार माना गया है, मेरी राय में १६ से ४०वें वर्ष तक शुक्र का अधिकार रहता है।

२५. उदय

यह शीर्षोदय ग्रही है।

२६. पाद—

द्विपाद अर्थात् मानवों पर ही इसका स्वामित्व है।

२७. रंग—

विचित्र ! प्रश्न कुण्डली में विचार करते समय यदि शुक्र की प्रमुखता दिखे, तो उस वस्तु का रंग विचित्र विविध या चितकबरा कहना चाहिए।

२८. रत्न—

हीरा ! संस्कृत में इसे 'वज्रमणि' फारसी में 'अलिमास' तथा अंग्रेजी मे डायमण्ड (DIAMOND) कहते हैं।

इसके प्रमुख आठ भेद हैं :—

१. अत्यन्त सफेद
२. कमलासन हीरा
३. वासन्ती हीरा
४. वनस्पति हीरा
५. नीलक हीरा
६. श्यामल हीरा
७. पीत हीरा
८. तेलिया हीरा

हीरे के प्रमुख दस दोष पाये जाते हैं—

१. रक्त मुखी
२. पीत मुखी

३. गड्ढा
४. श्याम जवी
५. सुन्न
६. गन्दमी
७. लकीर
८. बिन्दु
९. धार
१०. काक मक्षी

२९. पक्ष—
शुक्ल पक्ष पर शुक्र का अधिकार कहा गया है।

३०. धातु—
स्वर्ण !

३१. विशेष—
१—वक्री गुरु के साथ या दृष्टि होने पर गुरु को शक्ति देता है।

२—मंगल वक्री हो तथा शुक्र दृष्टि रखता हो तो ऐसा शुक्र मंगल के प्रभाव को चौगुना बढ़ा देता है।

३—शुक्र बलवान होने पर मंगल गुरु का दुष्प्रभाव समाप्त हो जाता है।

४—वक्री बुध, या वक्री शनि के साथ शुक्र की युति या सम्बन्ध हो तो शुक्र अत्यन्त कमजोर होता है।

५—शुक्र स्वराशि में बलवान होता है।

६—चौथे, छठे, नवें तथा बारहवें भाव में शुक्र श्रेष्ठ फलदायक माना गया है।

७—सूर्य से आगे गया हुआ शुक्र ही फलदायक है ऐसा मेरा

अनुभव है। यदि जन्म कुण्डली में शुक्र, सूर्य से पीछे की राशि में हो, या अंशों में सूर्य से कम हो तो ऐसा शुक्र कारक होते हुए भी शुभ फलदायक नहीं होता।

३२. अंक—
छः के अंक पर शुक्र का प्रभाव रहता है।

३३. ध्यान

श्वेताम्बरः श्वेतवपुः किरीटी
चतुर्भुजो दैत्यगुरुः प्रशान्तः।
तथाक्षसूत्रं च कमण्डलुं च
दण्डं च बिभ्रद् वरदोस्तु मह्यम्॥

३४. शुक्र यन्त्र—
पंचकोणं तु भार्गवे।

३५. दान—
हीरा, स्वर्ण, रजत, चावल, मिश्री, दूध, श्वेत बस्त्र, चन्दन।

३६. जप मन्त्र—
ॐ आं ईं ऊं सः शुक्राय: स्वाहा।

३७. जप संख्या—
सोलह हजार

३८. दशा—
विंशोत्तरी मत से बीस वर्ष।
अष्टोत्तरी मत से इक्कीस बर्ष।

वस्तुतः शुक्र एक प्रधान ग्रह है, इसकी अवहेलना कर कुण्डली का फलादेश सहज संभव नहीं। फिलम या फिलम से सम्बन्धित कार्यों के लिए तो इसका ही अध्ययन आवश्यक है।

शुक्र का कारकत्व

शुक्र के कारकत्व के विषय में प्राचीन आचार्यों के मत निम्न हैं:—

महर्षि पाराशर—

साहित्य संगीत कला कलाप
प्रह्लाद कान्ता रति गीत वाद्यम् ।
कलत्र सौन्दर्य विनोद विद्या
बलानि वीर्याणि कवेः सकाशात् ।।

अर्थात—साहित्य, संगीत, कला, रसीली बातें, प्रसन्नता, स्त्री संभोग, पत्नी, सौन्दर्य, विनोद, बल वीर्य आदि का कारक ग्रह शुक्र ही है ।

कल्याण वर्मा—

वस्त्र मणि रत्न भूषण विवाह
गन्धेष्ट माल्य युवतीनाम् ।
गोमय निधान विद्या धन
शुक्ति रजत प्रभुः शुक्रः ।।

अर्थात्—वस्त्र, मणि-रत्न, गहने, विवाह, सुगन्धित वस्तुयें युवती, धन संचय, विद्या एवं चाँदी पर शुक्र का अधिकार है ।

महाकवि कालिदास—

छत्र, वस्त्र, विवाह, आय, मनुष्य, पत्नी, वाद विवाद, मैथुन शुभ कार्य, पुष्प, आज्ञा पालन, यश, यौवन, गर्व, वाहन, दक्षिण दिशा फिल्म, अभिनेता, रंगमंच, राज्य, राजसी वृति, सुन्दरता, प्रेम, घोड़े कविता, नृत्य, यौवन, भाग्य, वीणा, वाद्य यंत्र, ऐश्वर्य, वसन्त ऋतु स्त्रियों से घिरे रहना, वीर्य, कामुकता, सम्मान, भरत नाट्यम्, लक्ष्मी पूजा, मैथुन प्रियता, काव्य, कवि, गुप्तांग, चतुराई आदि ।

मंत्रेश्वर—

गानी धनी विट् वणिक् नट तन्तुवाय
वेश्या मयूर महिषाय भृगौ शुको गौः ।।

अर्थात्—रत्न, भूषण, विवाह, स्त्री, विद्या आदि का कारक ग्रह शुक्र ही है ।

इसके अतिरिक्त भी विभिन्न विद्वानों ने शुक्र के कारकत्व के बारे में अपने विचार प्रगट किये हैं । ये कारकत्व तीन भागों में बाँटे जा सकते हैं—

१. दूसरे भाव से सम्बन्धित—

यथा, धन, कोष, वाद-विवाद, वक्तृता शक्ति, रत्न, भूषण, विद्या, सुगन्ध, शास्त्र चर्चा, यौवन वशीकरण आदि ।

२. सप्तम भाव से सम्बन्धित—

पत्नी, स्त्री, स्त्री रोग, प्रेमिका, वीर्य, काम, काम विकार, व्यापार, विवाह आदि ।

३. अन्य—

आंख, रक्त, कफ, मंत्राभिषेक आदि ।

मेरे मत से शुक्र का कारकत्व निम्न प्रकार से माना जाना चाहिए ।

१. चिकित्सा	२. सर्जरी
३. वैद्यक	४. रसायन शास्त्र
५. नर्स प्रशिक्षण	६. विवाह
७. पत्नी	८. प्रेमिका
९. सुख-सौभाग्य	१०. धन
११. ऐश्वर्य	१२. वीर्य
१३. संभोग	१४. संभोग स्तंभन
१५. वीर्य विकार	१६. नपुंसकता
१७. भौतिक सुख	१८. स्वार्थ-भावना
१९. फोटोग्राफी	२०. स्त्री-अधिकारी

२१. पुरातत्व
२२. प्राच्य विद्या
२३. मंत्र तंत्र यंत्र
२४. नेत्र
२५. चेहरा
२६. यौवन
२७. प्रेम पत्र
२८. सुकुमारता
२९. सुन्दरता
३०. विद्या
३१. स्थाई सम्पत्ति
३२. व्यवसाय
३३. व्यापार
३४. कलाकृति
३५. चौपाये
३६. कपास
३७. वस्त्र व्यवसाय
३८. सब्जी
३९. फूल
४०. स्टेशनरी
४१. तेल
४२. साबुन
४३. इत्र
४४. आभूषण
४५. क्रीम, स्नो, पाउडर
४६. सुगंधित द्रव्य
४७. गुलाब
४८. अगरबत्ती
४९. चन्दन
५०. शृंगार
५१. केश सज्जा
५२. साड़ियां
५३. सट्टा
५४. जूआ
५५. भाग्य
५६. फिल्म व्यवसाय
५७. अभिनेता
५८. निर्माता
५९. निर्देशक
६०. डिस्ट्रीब्यूटर
६१. नृत्य निर्देशक
६२. संगीतकार
६३. स्टेज
६४. अभिनय
६५. रंगमंच
६६. रेशम
६७. मोती
६८. चांदी
६९. कवि
७०. कविता

७१. गीतकार
७२. शृंगार रस
७३. वाद्य यन्त्र
७४. नृत्य निपुणता
७५. जनप्रियता
७६. सम्मोहन
७७. वशीकरण
७८. टोना टोटका
७९. रेस
८०. मटका
८१. इश्कबाजी
८२. बदनामी
८३. यज्ञ
८४. सम्मान
८५. मिठाई
८६. दासी
८७. बलात्कार
८८. व्यभिचार
८९. शराब
९०. कण्ठ, कान, गला
९१. टॉन्सिल
९२. रजस्वला
९३. नाटक
९४. सरस्वती-आराधना
९५. भविष्य ज्ञान
९६. ज्योतिष
९७. वाहन
९८. शयनकक्ष
९९. पलंग
१००. सोफासेट
१०१. सजावट
१०२. बल्ब
१०३. फेन्सीस्टोर
१०४. पान की दुकान
१०५. मसाले
१०६. इलायची
१०७. गाय
१०८. दूध-दही
१०९. घृत
११०. चावल
१११. श्वेत वस्त्र
११२. चांदी
११३. सफेद वस्तुएं
११४. मिठाइयाँ
११५. नमकीन
११६. भोज
११७. जल
११८. फल
११९. गुप्तेन्द्रिय
१२०. गुप्त रोग
१२१. समस्त ऐश्वर्य

उपर्युक्त वस्तुओं के विवेचन में शुक्र का अध्ययन परमावश्यक है। फिल्म तथा फिल्म व्यवसाय से सम्बन्धित जो भी उपकरण हैं, उन सबका कारकत्व शुक्र स्पष्ट है, अतएव यह जरूरी है कि फिल्म के बारे में विचार करते समय शुक्र का सांगोपांग अध्ययन परमावश्यक है।

शुक्र विवेचन

कुण्डली में बारह भाव होते हैं, जिसमें प्रथम भाव से स्वास्थ्य, यश, सम्मान, दूसरे भाव से कोष, धन, सम्पत्ति, तीसरे भाव से भाई, बल, पराक्रम, चौथे भाव से माता, वाहन, पांचवें भाव से विद्या, पुत्र, लॉटरी, आकस्मिक कार्य, छठे भाव से रोग, कष्ट, ऋण, मुकदमा, सातवें भाव से स्त्री, विवाह, आठवें भाव से मृत्यु, नवें भाव से भाग्य, व्यापार, दसवें भाव से राज्य, नौकर, ग्यारहवें भाव से आय तथा बारहवें भाव से व्यय का विचार किया जाता है।

नीचे प्रत्येक लग्न में शुक्र का कारक-अकारक स्पष्ट किया जा रहा है—

मेष लग्न

मेष लग्न वालों की कुण्डली में शुक्र दूसरे तथा सातवें भाव का स्वामी होता है, ये दोनों ही भाव मारक भाव होते हैं, अतः शुक्र इन लग्न वालों के लिए अकारक ही कहा गया है।

पर इसके साथ ही सप्तमेश भी है, अतः यदि कुण्डली में शुक्र की स्थिति प्रबल हो तो ऐसा शुक्र संघर्ष के बाद सफलता भी प्रदान करता है।

वृष लग्न

इसमें शुक्र लग्नेश षष्ठेश होता है, लग्नेश होने के कारण इसका

षष्ठत्व का दोष नहीं रहता, फिर भी इस कुण्डली में शुक्र जीवन के उत्तरार्द्ध को कमजोर ही बनाता है।

मेरा अनुभव है कि वृष लग्न वालों की कुण्डली में यदि सप्तमस्थ शुक्र हो तो विवाह विलम्ब से होता है, काफी प्रयत्नों के बाद ही उन्हें विवाह में सफलता मिलती है।

यदि वे प्रेम भी करते हैं, तो बदनाम होते हैं।

मिथुन लग्न

मिथुन लग्न वालों की कुण्डली में शुक्र पंचमेश-व्ययेश होता है, अतः यह सामान्य ही होगा, इसको व्ययेश-दोष इसलिये नहीं लगेगा, क्योंकि यह त्रिकोणेश भी होगा।

यदि शुक्र पंचम भाव में स्वराशिस्थ होगा, तो दरिद्री जीवन देगा, अर्थात आय की अपेक्षा उसका व्यय बढ़ा चढ़ा रहेगा, जब कि यही शुक्र व्यय भाव में होकर स्वराशिस्थ होगा, तो पूर्णतः लाभदायक एवं भाग्यवर्धक भी होगा।

यदि शुक्र व्यय भाव में होगा, तो उस जातक का विवाह छोटी उम्र में ही हो जायगा।

कर्क लग्न

इसमें शुक्र चतुर्थेश एवं एकादशेश होता है, फलस्वरूप वह अकारक ही माना जायगा, यद्यपि ऐसा शुक्र केन्द्रेश होने के कारण इसमें अकारकत्व की मात्रा कुछ न्यून ही होगी।

सिंह लग्न

इसमें शुक्र तृतियेश तथा दशमेश होता है, तृतियेश होने के कारण वह अकारक तो है ही पर साथ ही केन्द्रेश होने के कारण इसके अकारकत्व में कुछ धूमिलता ही आई है।

कन्या लग्न

कन्या लग्न में शुक्र द्वितियेश एवं नवमेश होता है, सामान्य मारकेश होने के कारण उसमें अकारकत्व ही पाया जायेगा, यद्यपि भाग्येश होने के कारण कुछ शुभता भी देगा। कुल मिलाकर इसका मिश्र फल ही कहा जायगा।

तुला लग्न

तुला लग्न में शुक्र लग्नेश-अष्टमेश होगा। लग्नेश होने के कारण इसे अकारकत्व दोष नहीं लगता, इसीलिये मैं इसे शुभग्रह एवं कारक मानता हूं।

वृश्चिक लग्न

इस लग्न में शुक्र सप्तमेश-व्ययेश है, अतः प्रबल मारक ही कहा जायगा, ऐसा शुक्र यदि अच्छी स्थिति में स्थित न हो तो अशुभ फल ही देते देखा गया है।

धनु लग्न

धनु लग्न में शुक्र षष्ठेश-लाभेश होता है अतः पूर्ण अकारक ग्रह माना जायेगा, ऐसा शुक्र अपना समय आने पर हानि ही देगा।

मकर लग्न

इस लग्न में शुक्र पंचमेश-राज्येश होने के कारण त्रिकोण-केन्द्र का सम्बन्ध बनाता है अतः पूर्ण कारक ग्रह माना जायगा तथा ऐसा शुक्र श्रेष्ठतम फल देने में समर्थ होगा।

कुम्भ लग्न

इसमें शुक्र सुखेश-भाग्येश होने के कारण केन्द्र-त्रिकोण का संबंध बनाता ही है, अतः उसे अनुकूल कहा जायगा एवं सभी रूपों में शुभ फलद ही रहेगा।

मीन लग्न

मीन लग्न की कुण्डलियों में शुक्र पराक्रमेश अष्टमेश होता है फलस्वरूप पूर्णरूपेण अकारक ग्रह ही होगा तथा कार्यसिद्धि में बाधाएं ही उपस्थित करेगा।

यदि मीन के नवांश का ही शुक्र हो तो राज्यपद में वृद्धि करता है।

अब मैं आगे के पृष्ठों में प्रत्येक भाव में स्थित शुक्र का फल स्पष्ट कर रहा हूं—

प्रथम भाव में

प्रथम भाव में शुक्र की उपस्थिति अत्यन्त शुभ मानी गई है, नीचे कुछ विद्वानों के मत दे रहा हूं—

मन्त्रेश्वर

तनौ सुतनु दृक्प्रियं सुखिनमेव दीर्घायुषं।
करोति कवि र्रथगः कविमनेक वितान्वितम्॥

अर्थात् जिसके लग्न में शुक्र हो वह दीर्घायु, स्वस्थ, सुन्दर एवं सुखी पुरुष होता है।

कल्याण वर्मा

सुनयन वदन शरीरं सुखिनं दीर्घायुषं भीरु
युवतिजन नयन कान्तं जनयति होरा गतः शुक्र॥

अर्थात् ऐसा व्यक्ति सुन्दर एवं सम्मोहक नेत्रों वाला होता है, युवतियों को आकर्षित करने में यह सिद्ध होता है।

पाराशर

मेष या तुला लग्न हो, तथा लग्न में शुक्र हो तो ऐसा शुक्र जातक को सफल बनाने में सहयोग देता है।

नारायण भट्ट

लग्नस्थ शुक्र उत्तम स्त्री, उत्तम व्यापार-व्यवसाय तथा उत्तम शरीर प्राप्त होता है।

गर्ग

यह अत्यधिक बोलता है, शरीर सुन्दर एवं आकर्षक होता है, गायन कला अथवा चित्रकारी में रुचि रखता है।

ढुंढीराज

इसका पुत्र दीर्घायु होता है।

कवि कालिदास

स्त्रियों को आकर्षित करने तथा वाद्य यन्त्रों में निपुण होता है।

वशिष्ठ

ऐसा शुक्र शत्रु नाशक होता है।

लखनऊ नवाब

अव्वलखाने जोहरा महबूबं मुकरवं नृपते।
दानिश्मन्दं मनुजं जरदारं जनखूबूरः प्रकुरुते॥

अर्थात् ऐसा व्यक्ति उदार, रूपवान एवं शानशौकत से जीवन करने वाला होता है।

धर्मदेव

यह कुलदीपक होता है।

पाश्चात्य मत

यह स्त्रियों को वश करने में निपुण होता है, स्वभाव से मनमौजी एवं उदार हृदय होता है।

मेरा मत

शुक्र ग्रह मूल रूप से सुख संपत्ति ऐश्वर्य देने वाला तथा सौंदर्य ग्लेमर, भोगविलास तथा रति-क्रीड़ा प्रदायक है।

लग्न में शुक्र रहकर अतुलनीय धन तो नहीं देता, पर दरिद्र जीवन भी नहीं देता, जहां तक मेरा अनुभव है, समाज में सामान्यतः श्रेष्ठ जीवन बना देता है तथा द्रव्य के कारण कोई काम रुकता नहीं।

लग्न में शुक्र की स्थिति विवाह में बाधा उपस्थित करती है, विवाह विलम्ब से होता है, या गृहस्थ सुख में न्यूनता देता है या विवाह कार्य से पूर्व अड़चनें आती रहती हैं।

लग्न में शुक्र रखकर कोई अभिनेता या अभिनेत्री उच्चस्तरीय कलाकार नहीं बन सकती।

धनु और मीन लग्न की कुण्डली में यदि शुक्र लग्न में होता है तो विवाह कई बार ३० वर्ष की अवस्था के बाद होता देखा गया है।

लग्न में ही शुक्र तथा गुरू की उपस्थिति भाग्योदय में विलम्ब तो कराती ही है, काफी पापड़ बेलने के बाद उसे सफलता मिल पाती है।

यदि वृष लग्न हो तथा लग्न में ही शुक्र की उपस्थिति हो तो पति को पत्नी की तरफ से शिकायत ही रहती है, पत्नी दुराचारिणी होती है, तथा उसे दाम्पत्य सुख नहीं मिल पाता।

हां, ऐसे जातक मौका पड़ने पर अपनी पत्नी को अभिनेत्री बनाने के लिए प्रयत्न रत रहते हैं।

मिथुन तथा कन्या राशि का लग्न हो तथा लग्न में शुक्र की उपस्थिति हो तो ऐसा शुक्र जातक को विरक्त स्वभाव का ही बनाता है, विवाह में उसकी रुचि कम होती है, पर-पुरुष या पर-स्त्री की तरफ कम ध्यान देते हैं, जैसी भी पत्नी हो, उसी में मग्न रहते हैं।

शनि की राशियों मकर कुंभ लग्नमें यदि शुक्र हो तो जातक की रुचियां काफी बढ़ी-चढ़ी होती हैं। अप्सरा से कम लड़की से विवाह

करना चाहते नहीं, ख्यालों में उर्बशी होती है, पर विबाह एक साधा-रण रूप रेखा की सांवली सी लड़की से होता है।

मिथुन लग्न या तुला लग्न में शुक्र रहकर व्यक्ति को स्वैच्छिक एवं भोगी भी बनाते देखा गया है।

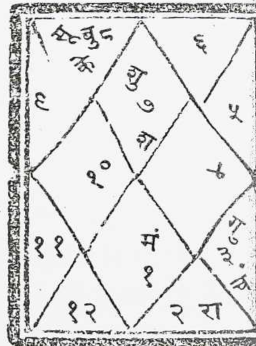
कर्क लग्न में शुक्र की उपस्थिति पूर्ण पत्नी सुख की द्योतक है। वृश्चिक लग्न में शुक्र हो तो जातक पत्नी से उतना स्नेह संबंध नहीं रखता, जितना पुत्रों से, बच्चों से अपने से छोटों से।

मीन लग्न हो और लग्न में शुक्र हो तो जातक या तो दो-तीन बार विवाह करता है, या उसके पत्नी के अतिरिक्त अन्य स्त्रियों से भी सम्बन्ध होते हैं।

फिल्म उद्योग पर विचार करें तो लग्न में शुक्र की उपस्थिति व्यक्ति को संगीत के क्षेत्र में प्रतिष्ठित करता है।

संबंधित जन्म कुण्डली फिल्म के एक विख्यात संगीतकार की है, जिनकी कई फिल्मों ने रजत जयंतियां मनाई है, संगीत के माध्यम से धन यश मान प्रतिष्टा एवं इज्जत प्राप्त की है।

लग्न में शुक्र शनि है, फलस्वरूप लग्नेश चतुर्थेश का पूर्ण सम्बन्ध बना, साथ ही लग्नेश शुक्र स्वराशिस्थ है, तो चतुर्थेश शनि उच्च राशि का है,



।। फिल्म संगीतकार ।।

फिल्मों में संगीत के माध्यम से आने एवं धन यश प्राप्त करने

में इस शुक्र ने प्रमुख भूमिका निभाई है।

सिंह और मकर लग्न में भी यदि शुक्र शनि का प्रथम भाव में सम्बन्ध बने, तो जातक संगीत के क्षेत्र में सफलता प्राप्त करता है, एवं फिल्मों से सम्बन्धित होता है।

नीचे मैं हालीवुड के प्रसिद्ध संगीतकार मिस्टर पाल की जन्म-कुण्डली दे रहा हूं।



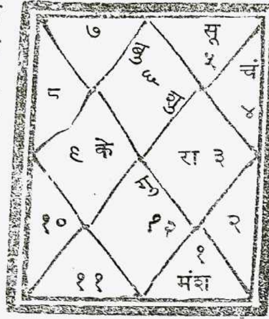
हॉलीवुड के संघर्षपूर्ण वातावरण में मिस्टर पॉल की उपलब्धियां विलक्षण हैं, इसका मूल कारण लग्न में शुक्र एवं मंगल की उपस्थिति है, मंगल, जो कि पूर्ण कारण ग्रह है, तथा कुण्डली में केन्द्र-त्रिकोण का सम्बन्ध बनाता हुआ भाग्येश-सुखेश है, साथ ही संगीत के कारक ग्रह के साथ लग्न में स्थित है।

एक और बात यह है कि मंगल के माध्यम से शुक्र की दृष्टि भी चतुर्थ भाव जनता भाव पर है, अतः लग्नेश सुखेश या व्यक्तित्व एवं जनता का सीधा सम्बन्ध एवं दृष्टि है, इसलिए वे संगीत के क्षेत्र में इतने ऊंचे उठ सके।

लग्न में शुक्र की उपस्थिति फिल्मी गायक भी बनाती है, पर वाणी, गायन आदि का कारक ग्रह बुध है, अतः लग्न में बुध-शुक्र की उपस्थिति व्यक्ति को 'फिल्म गायक' बनाकर सफलता देती है।

नीचे पार्श्व-गायिका अपर्णा सेन की जन्म-कुण्डली स्पष्ट कर रहा हूँ—

पाठक देखें, कि लग्न में शुक्र फिल्म योग बनाता है, तो स्वराशिस्थ बुध वाणी की मधुरता एवं सक्षमता, वग्णी भाषण, गायन, आदि का भाव दूसरा है, इस प्रकार दूसरे भाव के स्वामी शुक्र तथा पहले भाव के स्वामी बुध का पूर्ण सम्बन्ध बना है, यही नहीं, जनता भाव (चतुर्थ भाव) के स्वामी गुरु का भी इन दोनों ग्रहों से सीधा सम्बन्ध बन गया है।



वस्तुतः लग्नेश द्वितियेश तथा चतुर्थेश के संबंध से ही अपर्णाजी ने ख्याति यश एवं सम्मान प्राप्त किया है।

वस्तुतः लग्नस्थ शुक्र प्रबल कारक एवं फिल्मी जीवन में सफलता प्रदान करने वाला होता है, यदि उसका सम्बन्ध शुभ ग्रहों से एवं शुभ भावों से हो जाता है।

दूसरे भाव में शुक्र

यदि यह कहा जाय कि दूसरा भाव ही शुक्र का कारक ग्रह है, तो कोई अत्युक्ति नहीं होगी, क्योंकि दूसरा भाव धन, संपत्ति, बैंक-बेलेन्स आदि का प्रधान भाव है और शुक्र इन सब वस्तुओं का कारक ग्रह है, अतः दूसरे भाव में शुक्र रहकर स्वयमेव धनप्रदाता ग्रह बन जाता है।

नीचे कुछ विद्वानों के मत स्पष्ट कर देता हूँ—

पाराशर—

यह नाना प्रकार से, कई स्रोतों से धन इकट्ठा करता है।

मन्त्रेश्वर—

यह कविता करने में चतुर, भावुक एवं धनी होता है।

काशीनाथ—

यह श्रेष्ठ धनी, विद्वान, गुणी, वाक्चतुर एवं यशस्वी जीवन जीने वाला होता है।

वैद्यनाथ—

ऐसा व्यक्ति कलाकार तथा धनवान होता है।

लखनऊ नवाब—

शीरी सखुन् मनुष्यं जमजे वर्कशी शालैः।
युक् मिहिरो जरखाने जोहरा कुरुते च सदमजं दक्षं ।।

अर्थात्—जिसके दूसरे भाव में शुक्र होता है, वह नये-नये फैसन के कपड़े पहिनता है, मधुर बोलता है तथा भोगी होता है।

भृगु—

ऐसा व्यक्ति नेत्र रोगी, बत्तीसवें वर्ष में उन्नति करने वाला, सुन्दर, परोपकारी तथा भोगी होता है।

मेरा विचार—

दूसरे भाव में शुक्र रखने वाला जातक अधिकतर हृष्ट-पुष्ट, एवं भोगी होता है, अधिकतर विद्वानों ने इस भाव में शुक्र रखने पर जातक को भोगी एवं कामी ही बताया है, यदि स्त्री की कुण्डली में शुक्र दूसरे भाव में हो तो निश्चय ही वह गर्म रक्त की, काम पिपासु एवं पुरुषों को सम्मोहित करने की कला में निपुण होती है।

राशियों को हम दो भागों में बांट सकते है, पुरुष राशियां और स्त्री राशियां।

पुरुष राशियां	स्त्री राशियां
मेष	वृष
मिथुन	कर्क

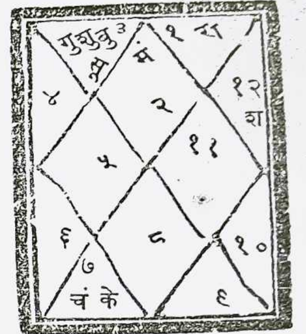
सिंह कन्या
तुला वृश्चिक
धनु मकर
कुंभ मीन

जहां तक मेरा अनुभव है, यदि दूसरे भाव में पुरुष राशि हो तथा दूसरे भाव में शुक्र स्थित हो तो शुक्र का उपर्युक्त शुभ फल मिलता है, अन्यथा उसे शुभ फल देते नहीं देखा गया है ।

यों भी सामान्यतः इस प्रकार की कुण्डलियों से सम्पन्न जातक अत्यधिक भोगी, कामी एवं कामचतुर होते हैं, विपरीत लिंगी को आकर्षित करने की अद्भुत क्षमता इनमें होती है, नैतिक आचार-विचार को ये कम महत्व देते हैं और अपना काम निकालने में सिद्ध हस्त होते है ।

नीचे एक अभिनेत्री की कुण्डली दे रहा हूं जिसके दूसरे भाव में शुक्र है, फिल्मों में आने के लिए इसे अथक संघर्ष करना पड़ा अथक संघर्ष भी इतना, कि एक बार तो निराश होकर आत्म-हत्या करने तक के लिए उतारू हो गई थी, उसी कसमकस एवं संघर्ष के दिनों में एक सेट पर उससे भेंट हुई तो उसने बड़ी आ जीजी से अपनी जन्म-कुण्डली देखने को कहा, शाम को होटल में समय दिया, कुण्डली देखने पर ज्ञात हुआ, कि शीघ्र ही वह फिल्म में स्थान बना सकेगी, मैंने ऐसा कहा भी, पर उसे विश्वास नहीं हुआ···

मगर उसका संघर्ष कायम रहा, आज वह कई फिल्मों में आई है और वे सफल भी रही हैं, उसका स्थान भी निश्चित हो गया है, पर इस संघर्ष के दौरान उसे क्या-क्या पापड़ बेलने पड़े इसकी लम्बी कहानी है, न कहें तभी अच्छा है ।



पाठक स्वयं देखें, कि उसकी कुण्डली भी यही कहानी कह रही है शुक्र बुध का संयोग उसके लिए फिल्मयोग बना रहा था तथा चतुर्थेश सूर्य का योग इस तथ्य को पूर्णता प्रदान कर रहा था परन्तु अष्टमेश गुरु के साथ रहने से इतने संघर्ष झेलने पड़े ।

दूसरे भाव में मिथुन राशि है, जो कि पुरुष राशि है और पुरुष राशि में पड़ा शुक्र शुभफल दे तो इसमें आश्चर्य क्या ?

मगर इस प्रकार के शुक्र ने उसे कामी भोगी एवं ऐयासी भी बनाया···शराब और भोग उसकी दैनिक चर्या के अंग बन गये ।

मीन तथा कर्क लग्न हो एवं दूसरे भाव में शुक्र हो तो वह व्यक्ति धनोपार्जन तो करता है, पर इसके साथ ही उसे कई प्रकार के व्यसन, बुरी आदतें तथा जुआ खेलने की आदत पड़ जाती है, सट्टा खेलना, घुड़दौड़, मटका लॉटरी आदि का एक प्रकार से रोग ही लग जाता है और वह अपनी पैत्रिक सम्पत्ति एवं उपार्जित धन का नाश कर दरिद्र बन जाता है ।

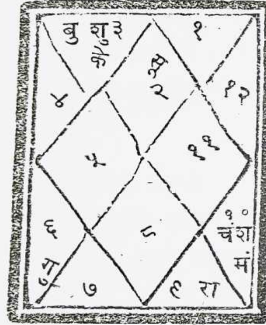
यद्यपि ये व्यक्ति, वे सभी हथकण्डे अपनाते है, जिससे कि धनोपार्जन हो सके ।

मेष, सिंह या धनु लग्न हो तथा दूसरे भाव में शुक्र हो तो जातक को सम्पत्ति प्राप्त करने के लिए कठार संघर्ष करना पड़ता है, मुकदमे बाजी तक की नौबत आ जाती है, फिर भी उसे पैत्रिक संपत्ति मिलती नहीं और मिलती भी है, तो अधिक दिनों तक टिकती नहीं । इनका झुकाव व्यापार की ओर होता है, पर राज्यसेवा में ये प्रगति कर सकते हैं ।

एक बात मैंने और देखी है, विभिन्न स्त्रियों से (स्त्री की कुण्डली हो तो पुरुषों से) इनके सम्पर्क मधुर होते हैं, तथा उनके माध्यम से धनोपार्जन भी करते हैं, स्त्रियों में लोकप्रिय होते हैं, तथा विपरीत सेक्स को प्रभावित करने की क्षमता रखते हैं।

यों ये अच्छे कवि, गीतकार, शायर होते हैं, इनके गीत जनता के गले में रम जाते हैं, अपने गीतों के माध्यम से शीघ्र ही लोकप्रिय हो जाते हैं।

नीचे एक प्रसिद्ध फिल्मी गीतकार की कुण्डली दे रहा हूँ निश्चय ही द्वितियस्थ शुक्र ने इन्हें गीतकार बनाने में सहयोग दिया, तथा बुध के सहयोग ने सुमधुर कंठ, पर इन्होंने पैत्रिक संपत्ति दोनों हाथों से लुटाई, तथा ऐश आराम में कोई कसर नहीं रखी।

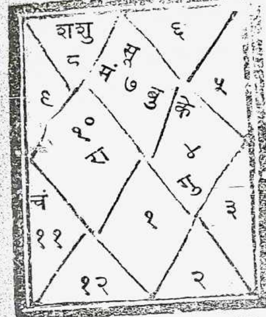


भावुक, अत्यन्त सरल हृदय, दूसरों को आगे बढ़कर मदद देने वाले, तथा यारों के यार हैं, जनता इनके गीतों पर अहंकार जैसे छू भी नहीं गया है।

जब भी मिलते हैं, गले मिलकर झूम जाते हैं, गीत गाते रहते हैं, सुनाते रहते हैं, स्वयं झूम जाते हैं और सामने वाले को मस्ती से भर देते हैं, पता ही नहीं चलता कि कितना समय बीत गया।

वृष, कया या मकर लग्न हो तथा दूसरे भाव में शुक्र हो तो पुत्र वियोग सहन करना पड़ता है, या पुत्र होता ही नहीं, अथवा होता भी है तो कुपुत्र होता है, व्यापारिक कार्यों में ऐसे व्यक्ति विशेष लाभ उठा सकते हैं।

मिथुन या तुला लग्न हो तथा दूसरे भाव में शुक्र हो तो लेखन द्वारा प्रसिद्ध पाते हैं, फिल्मों में सफल कहानी कार बनते हैं, तथा वे विख्यात होते हैं। फिल्मों के एक सफल कहानीकार की कुण्डली दे रहा हूँ जिनकी कहानियों पर सफल फिल्में बनी हैं, तथा धन यश एवं मान प्रतिष्ठा प्राप्त की है—



पाठक देखें, कि दूसरे भाव में शुक्र है साथ ही चतुर्थेक्ष शनि से सम्बन्ध भी स्थापित करके बैठा है, यही नहीं अपितु लग्न भाव में मंगल बुध-सूर्य का सम्बन्ध कथाकार बनने की योग्यता दे सका है।

अधिकतर गद्य लेखकों, कहानीकारों, उपन्यासकरों की कुण्डलियों में दूसरे भाव में शुक्र देखा है और शुक्र की दशा में श्रेष्ठस्तरीय सफलता प्राप्त की है।

एक बात और ऐसे व्यक्तियों को स्त्री सुख कम ही मिलता है, पत्नी होती भी है, तो मतभेद बने रहते हैं, एवं सही अर्थों में उन्हें गार्हस्थ्य जीवन का सुख नहीं मिल पाता। एक से अधिक बार विवाह होते भी देखा गया है, रखेल तो इनके रहती ही है।

मेरे अनुभव में यह भी आया है, कि इनका विवाह के उपरान्त ही भाग्योदय होता है, जीवन में धन सम्बन्धी स्थिरता संभवतः नहीं रहती, अगर होगा, तो ऐश आराम की सीमा छुयेंगे और नहीं होगा तो फकीरी वेश धारण कर लेंगे। जीवन में यौवनकाल सर्व श्रेष्ठ होता है।

दूसरे भाव में शुक्र हो तथा भाग्य भाव पर सूर्य बुध की दृष्टि हो तो ज्योतिष में गहरी रुचि रहती है।

कुल मिलाकर दूसरे भाव में शुक्र रखने वाला जातक धनी,

यशस्वी, परोपकारी, गृहस्थ जीवन से दुःखी, पर-स्त्रिय में रत, एवं मध्यान्हकाल (यौवन काल) में सुखी होता है। भोगी, कामी एवं विलासी तो ये होते ही हैं, जीवन को जीने की कला भी जानते हैं, ऐसे व्यक्ति कल क्या होगा ? इसकी चिन्ता नहीं करते, बल्कि आज का दिन कैसे रंगीन बना रह सकता है, इसकी ही चिन्ता करते हैं।

कहानी एवं गीत के क्षेत्रों में ऐसे व्यक्ति चमकते हैं, तथा यश मान प्रतिष्ठा भी प्राप्त करते हैं, सहज सरल मृदुभाषी भावुक एवं दूसरों के हृदय में उतर जाने की इनमें अद्भुत क्षमता होती है।

तीसरे भाव में शुक्र

तीसरे भाव में शुक्र की उपस्थिति को विद्वानों ने महत्त्वपूर्ण माना है, पर साथ ही यह भी बताया है, कि ऐसा जातक पुरुषत्व प्रधान न होकर स्त्रित्व प्रधान होता है, स्त्रियों की संगति उसे अच्छी लगती है, स्त्रियों को अपने पक्ष में करने का उसमें विशेष गुण होता है।

नीचे ज्योतिष के कुछ उद्‌भट विद्वानों के मत इस सम्बन्ध में स्पष्ट कर रहा हूं—

गुणाकर

स्त्रियोचित गुण पनपते हैं, तथा परिवार के प्रति उसका लचीला रुख रहता है।

पाराशर

ऐसे व्यक्ति का व्यवहार विचित्र सा रहता है, एक बिन्दु या विचार पर जमकर नहीं रह सकता, तथा न जबान का पक्का होता है, फलस्वरूप जीवन में विरोधियों की संख्या बढ़ती है, एवं समय पड़ने पर मित्र सहायता नहीं करते।

ऐसे व्यक्ति ऊलजलूल कार्यों में भी धन अधिक व्यय करते हैं।

वशिष्ठ

जिसके तीसरे भाव में शुक्र होता है वह सादा जीवन बिताने का हामी होता है, पर परिस्थितियां उसे तड़क-भड़क से रहने पर मजबूर कर देती हैं।

कल्याण वर्मा

ऐसा व्यक्ति धनवान होते हुए भी कंजूस होता है, भरे हुए शरीर तथा पुरुषोचित आकृति होते हुए भी पत्नी से दबकर रहता है, कोई भी कार्य अत्यन्त उत्साह के साथ प्रारम्भ करता है, परन्तु कार्य के बीच में ही उसका उत्साह भंग हो जाता है, तथा विपरीत परिस्थितियां निरन्तर आती रहने पर भी सुखी रहता है।

गर्ग

तीसरे भाव में शुक्र हो तो बहिनें ज्यादा होती हैं, तथा ज्यादा से ज्यादा तीन भाई होते हैं, जिसमें से एक भाई और एक बहिन की अकाल मृत्यु होती हैं। बहिनें सुन्दर तथा भोग प्रधान प्रकृति की होती है।

वैद्यनाथ

तीसरे स्थान में शुक्र रखने वाला व्यक्ति सामान्यतः रोगी रहता है, तथा अपनी पत्नी से सन्तुष्ट नहीं रहता, ऐसा व्यक्ति सस्ती और बाजारू किस्म की औरतों से भी सम्पर्क रखता है। बात-बात में झुंझलाना, व्यर्थ में क्रोध प्रकट करना इसका स्वभाव होता है।

पर यदि शुक्र सूर्य से आगे हो तो सुखद होता है।

ढुंढिराज

ऐसा व्यक्ति दुर्बल शरीर वाला, कंजूस अत्यन्त कामी, क्रोधातुर

एवं दुष्ट प्रकृति का होता है, सहज ही इस पर विश्वास नहीं किया जा सकता ।

यवन जातककार

२६ वें वर्ष से पहले भाग्योदय नहीं होता ।

नारायण भट्ट

इसे स्त्री-पुत्रादि का सुख तो मिलता है परन्तु इसकी उन्नति में इसे परिवार वालों से किसी भी प्रकार की कोई सहायता नहीं मिलती । जरा-जरा सी बात पर मन में भय रखता है ।

मंत्रेश्वर

कृपण होता है, तथा जीवन में शत्रुओं की कमी नहीं रहती ।

जागेश्वर

पुत्रों से किसी भी प्रकार का सहयोग या सुख नहीं मिलता ।

लखनऊ नवाब—

जोहरा भवति बिरादर खाने चेन्मानवो जात ।
जोरावरो हरीशः सालस्य सानुजः साश्वः ॥

अर्थात्—यह सिंह के समान बल रखते हुए भी आलसी होता है, जिसके फलस्वरूप लक्ष्मी की कम कृपा रहती है, यह भाइयों से युक्त होता है, तथा सवारी का सुख भोगता है ।

पाश्चात्य मत

पाश्चात्य विद्वानों के अनुसार ऐसा व्यक्ति व्यभिचारी, कामी, एवं जरूरत से ज्यादा रंगीले स्वभाव का होता है, पढ़ने लिखने की अपेक्षा कला के क्षेत्र में ज्यादा सफल होता है, तथा प्रयत्न करने पर एक सफल गायक या एक सफल चित्रकार बन सकता है ।

यात्राओं में इसे आनन्द आता है, तथा स्त्रियों के सम्पर्क से लाभ उठाता है ।

मेरे अनुभव

भारतीय एवं पाश्चात्य विद्वानों ने तृतियस्थ शुक्र के शुभ एवं अशुभ दोनों ही प्रकार के फल बताये हैं ।

१. मेरे अनुसार यदि शुक्र, सूर्य से आगे हो तो अशुभ फलों की अपेक्षा शुभ फल ज्यादा देता है ।

२. यदि तीसरे भाव में शुक्र अकेला हो तथा उसके साथ न तो कोई शुभ ग्रह हो और न किसी शुभ ग्रह की दृष्टि हो तो शुक्र का अशुभ फल ही मिलता है ।

३. यदि जन्म कुण्डली में शुक्र के लिए सर्वाधिक अशुभ स्थान है, तो यही तीसरा भाव है ।

४. तीसरे भाव में शुक्र हो तो निम्न फलों में से एक दो या अधिकतर फल उसे झेलने ही पड़ते हैं—

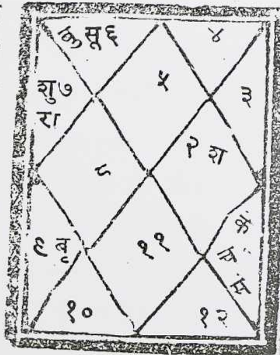
१—पत्नी से वैचारिक मतभेद ।
२—पत्नी के सुख में न्यूनता ।
३—पत्नी का रोगिणी रहना ।
४—अत्यन्त विलम्ब से विवाह होना ।
५—विवाह में बाधाएं आना ।
६—पहली पत्नी की मृत्यु होकर दूसरा विवाह होना ।
७—विवाह के बाद भाग्य-अवनति होना ।

५. ऐसे व्यक्ति कामी, चतुर एवं शान-शौकत वाले होते हैं, प्रत्येक स्त्री को ये प्रेमिका के रूप में ही देखते हैं और प्रयत्न भी करते हैं, फिर भले ही इन्हें सफलता मिले या न मिले ।

अपनी आयु से बड़ी आयु की स्त्री इन्हें पसन्द आती है, स्त्री-संभोग में ये न दिन गिनते हैं, न रात । कामुक प्रकृति कुछ ज्यादा ही होती है ।

६. प्रथम पत्नी की मृत्यु के बाद दूसरा विवाह शीघ्र नहीं होता।
७. पत्नी सुख में न्यूनता रहती है।
८. पत्नी साधारण रूप रंग वाली तड़क-भड़क को पसन्द करने वाली एवं अव्यवस्थित प्रकृति की होती है।
९. यदि मंगल नवम भाव, अष्टम भाव या द्वादश भाव में हो तथा शुक्र तीसरे भाव में हो तो मुष्टि मैथुन या अप्राकृतिक साधनों से कामाग्नि शान्त करते हैं।
१०. आर्थिक क्षेत्र में अनिश्चयता रहती है।
११. पुत्र होते हैं, पर सामान्यतः कन्या सुख नहीं रहता।
१२. 'गैस्टिक ट्रबल' अपच या अजीर्ण की शिकायत बनी ही रहती है।

जहाँ तक फिल्मक्षेत्र का प्रश्न है, यदि तीसरे भाव में शुक्र राहु के साथ हो तो वह पार्श्व गायन में सफलता प्राप्त करता है, यद्यपि उसकी प्रवृत्ति यह होती है कि वह फिल्म उद्योग के सभी क्षेत्रों में दखल जमाने का प्रयत्न करता है तथा अपने आप को सर्वज्ञ समझने का दंभ भरता है, पर काफी कुछ करने के बावजूद भी उसे सफलता नहीं मिल पाती, यदि उसके पाँव टिकते भी हैं तो वह पार्श्व गायन के क्षेत्र में ही।



संबंधित जन्म कुण्डली पाकिस्तान की एक सफल पार्श्व गायिका की है, जो प्रारंभ में एक्टर बनने के लिए जी तोड़ प्रयत्न करती रही। छोटे-मोटे रोल वाली फिल्मों की गणना नहीं रही तथा नायिका के स्तर की दो फिल्में फ्लॉप रहीं और इस चक्कर में आठ-नौ वर्ष बरबाद ही किए।

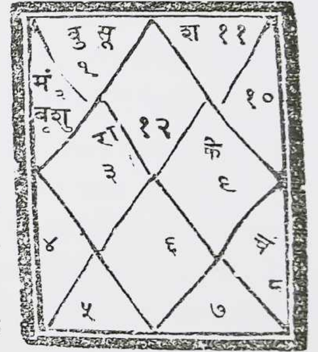
इसके बाद पार्श्व गायिका के क्षेत्र में कदम रखा और शीघ्र ही जनता के गले में रम गई, आज पार्श्व गायन के क्षेत्र में सर्वोच्च है। पाठक स्वयं शुक्र राहु का पूर्ण सम्बन्ध देख सकते हैं।

तीसरे भाव में शुक्र यदि मंगल के साथ हो एवं राहु से दृष्ट हो तो वह निर्देशन के क्षेत्र में कुछ बाधाओं के बाद सफलता प्राप्त कर लेता है।

तीसरे भाव में शुक्र मंगल व राहु तीनों साथ हों तथा प्रत्येक ग्रह एक दूसरे से पांच अंशों से अधिक दूर न हो तो वह व्यक्ति निश्चय ही फिल्म क्षेत्र में निर्देशन कार्य में सफलता प्राप्त करता है।

—लग्नेश तृतियेश के साथ शुक्र यदि तृतियस्थ हो तो व्यक्ति निर्देशन के कार्य में तत्पर रहता है।

– तृतियेश-नवमेश के साथ शुक्र की तीसरे भाव में उपस्थिति भी निर्देशन में सफलता देते देखी गयी है।



संबंधित कुण्डली बम्बई फिल्म क्षेत्र के एक सफल निर्देशक की है, जिन्होंने निर्देशन क्षेत्र में पूर्ण यश, पद एवं प्रतिष्ठा प्राप्त की तथा आज भी सक्रिय है।

पाठक स्वयं देख लें कि इस कुण्डली में तृतियेश स्वयं शुक्र है जो कि नवमेश मंगल एवं लग्नेश गुरु के साथ तीसरे भाव में स्थित है।

इसके अतिरिक्त प्रत्येक लग्न में शुक्र की तृतियस्थ स्थिति निम्न फलद होगी।

मेष लग्न में तृतियस्थ शुक्र सुसराल से धन प्राप्ति कराता है।

वृष लग्न में तृतियस्थ शुक्र भातृ विरोध, कष्ट एवं चिन्ताएं बढ़ाता है, मिथुन लग्न में तृतियस्थ शुक्र सन्तान सुख में न्यूनता देता

है। कर्क लग्न में तृतियस्थ शुक्र भौतिक सुखों का अभाव करता है। सिंह लग्न में तृतियस्थ शुक्र राज्यबाधा उत्पन्न करता है, कन्या लग्न में तृतियस्थ शुक्र अतुल धन प्रदान करने में समर्थ होता है। तुला लग्न में तृतियस्थ शुक्र भातृ विरोध, वृश्चिक लग्न में तृतियस्थ शुक्र पुर्नविवाह, निम्न स्तरीय स्त्रियों से संगति, धनु लग्न में तृतियस्थ शुक्र दरिद्रता, मकर लग्न में तृतियस्थ शुक्र विद्याबाधा एवं राज्योन्नति में अड़चनें, कुम्भ लग्न में तृतियस्थ शुक्र भाग्य बाधा एवं मीन लग्न में तृतियस्थ शुक्र निरन्तर बाधाएं एवं कठिनाइयाँ उत्पन्न करता है।

चतुर्थ भाव में शुक्र

चतुर्थ स्थान में शुक्र विशेष कारक ग्रह माना गया है और यदि चतुर्थ भाव में वृष या तुला राशि पड़ती हो तथा अपनी ही राशि में चतुर्थ भाव में शुक्र स्थित हो तो मालव्य योग का निर्माण करता है, जो कि पंच महापुरुषों में से एक योग है।

चतुर्थ भाव में शुक्र की स्थिति को विभिन्न विद्वानों ने विभिन्न विचारों से व्यक्त किया है—

कल्याण वर्मा

चतुर्थ भाव में शुक्र की स्थिति रखने वाला जातक सुन्दर एवं श्रेष्ठ वाहनों से युक्त, भौतिक साधनों से सुखी सभी पर स्नेह बरसाने वाला तथा गम्भीर स्वभाव का सौम्य होता है।

गर्ग

इसके मित्र बहुत होते है, इसके स्वभाव में विचित्रता है, कब क्या कर बैठेगा, इसका पता नहीं चलता, सनकी स्वभाव का होता है, भोग विलास को जीवन में प्रमुखता देने वाला होता है, नेताओं से सम्मानित व्यक्तियों से इसका निकट का परिचय होता है तथा स्वस्थ प्रसन्न चित्त रहता हुआ दीर्घायु भोगता है।

यवन

देवी देवताओं में इसकी आस्था रहती है, चौपायों को घर में रखने की इच्छा रखता है, तथा स्त्रियों के माध्यम से धन संचय होता है।

ढुंढीराज

सुगन्धित पदार्थ, सुन्दर सजीले वस्त्र तथा भौतिक उपकरणों में ज्यादा से ज्यादा रुचि लेने वाला होता है।

वशिष्ठ

उच्चस्तरीय लोगों (विधायकों, मंत्रियों) से निकट का परिचय रहता है।

वैद्यनाथ

यह स्त्रियों से घिरा रहता है, तथा इस पर स्त्री का ही शासन चलता है।

जयदेव

इसकी प्रवृत्ति धार्मिक होती है, वाहन-सुख लगातार मिलता है, तथा चुटकले कहने में होशियार, दूसरों को अपने पक्ष में करने की कला जानने वाला तथा सुखी गृहस्थी वाला होता है।

काशीनाथ

यह यशस्वी होता है, तथा इसके द्वारा समाज में या समाजो-

पयोगी कुछ ऐसे कार्य होते हैं, जिससे वृद्धावस्था में इसकी ख्याति बढ़ती है, यह विद्वान तथा बात की तह तक पहुंचने वाला होता है।

मंत्रेश्वर

आभूषणों का शौकीन तथा जीवन भर वाहन सुख मिलता है।

नारायण भट्ट

यह अपने हठ का पक्का होता है, सुनता सब की है, परन्तु करता वही है जो इसके मन में होता है, न तो यह लोगों के द्वेष की परवाह करता है, और न उनके प्रेम की चाहना।

धोलप

इसे नौकरों का सुख मिलता है, दुष्टों को यह ललकार कर तो नहीं, परन्तु साम दाम दण्ड भेद की नीति से परास्त कर देता है, स्वभाव में हठ, कामुक प्रकृति, स्थायी सम्पत्ति रखते वाला तथा नाटकीय व्यक्ति होता है।

नवाब लखनऊ

ऐयासो मालदारो नेको कारश्च फारसश्चेत् स्यात्।
जोहरा दोस्त मकाने भवति मनुष्यः प्रियंवदश्चाढयः ।।

अर्थात् ऐसा व्यक्ति ऐयासी, धनी, बुद्धिमान, तर्क करने वाला मित्रता निभाने वाला तथा व्यभिचारी होता है।

हिल्ला जातक

यह युक्ति से काम निकालता है एवं भाइयों के सुख दुःख में सहायक होता है।

भृगु

यह मूलतः बुद्धिजीवी होता है, शारीरिक श्रम से यह घबराता नहीं है, पर यह इसके लिए रुचिकर भी नहीं होता। बड़े से बड़े शत्रु

को भी क्षमा कर देने वाला होता है। माता का सुख मिलता है, पर यह कभी-कभी माता की घोर अवहेलना भी कर लेता है।

वाहन सुख एवं दूध देने वाले पशुओं का पूरा सुख मिलता है, कृषि में हानि उठाता है, तथा गुप्त रूप से कई स्त्रियों से रमण करता है।

पाश्चात्य मत

भारतीय विद्वानों के अतिरिक्त पाश्चात्य विद्वानों ने भी इस पर अपने विचार प्रगट किये हैं, उनके अनुसार ऐसा व्यक्ति भावी घटनाओं को सहज ही भांप लेने वाला, तथा सुखपूर्ण जीवन व्यतीत करने वाला होता है, पिता की सम्पत्ति मिलती है पर यह उसे सहेज कर नहीं रख सकता। जीवन का पूर्वार्द्ध कुछ कठिनाइयों से युक्त होता है, जबकि उत्तरार्द्ध ज्यादा सुखी एवं यशस्वी होता है।

निष्कर्ष

भारतीय और पाश्चात्य दोनों ही विद्वानों ने चतुर्थ भाव में शुक्र की उपस्थिति को शुभ माना है, क्योंकि चतुर्थ भोग प्रधान भाव है, और शुक्र भोग का ही कारक ग्रह है।

वाहन सुख, धन सुख आदि मिलता रहता है, व्यभिचारी तथा कामुक भी लगभग सभी विद्वानों ने माना है। बुद्धिमान, काम निकालने में चतुर तथा गुणवानों की परख करने वाला होता है।

मेरा अनुभव

इस सम्बन्ध में मेरे अनुभव निम्नलिखित हैं :—

१. चतुर्थ भाव में शुक्र यदि पाप ग्रहों से दृष्ट न हो तो जातक निश्चय ही सुख पूर्वक अपना जीवन व्यतीत करता है, विशेषतः उस के भौतिक सुखों में न्यूनता नहीं रहती।

२. ऐसे शुक्र पर यदि मंगल एवं राहु की दृष्टि हो तो माता का सुख नहीं मिलता।

३. सौम्य ग्रहों से युक्त या दृष्ट शुक्र पूर्ण अंशों में हो तो पूर्ण वाहन सुख मिलता है।

४. यदि मकर, मीन, वृष, कर्क, कन्या या वृश्चिक लग्न हो, तथा चतुर्थ भाव में शुक्र हो तो जातक एवं उसकी माता में परस्पर विरोध रहता ही है, या उसकी माता चिररोगिणी रहती है, सही शब्दों में उसे माता से पूर्ण सुख नहीं मिलता।

५. पैतृक सम्पत्ति धोखे से या मूर्खता से नष्ट हो जाती है। कई बार निम्न स्त्रियों के सम्पर्क में आकर भी जायदाद समाप्त कर देते हैं।

६. भाग्योदय २२वें वर्ष से होता है।

७. स्त्रियों में यह लोकप्रिय होता है, अनजान से अनजान स्त्री से सम्पर्क स्थापित करने, मित्रता करने या उससे लाभ उठाने में कुशल होता है, स्त्रियों से आर्थिक लाभ भी होता है।

८. विधवा स्त्रियों से आर्थिक लाभ होने के संयोग ज्यादा होते हैं।

९. जीवन में एक से अधिक कार्य करते हैं' नौकरी करते हैं, तो साथ ही 'पार्ट टाइम जॉब' भी करते हैं। व्यवसायी व्यापारी होता है, तो एक से अधिक उद्योगों का स्वामी होता है।

१०. यदि मेष, मिथुन, सिंह, तुला, धनु, कुम्भ, लग्न हो, और चतुर्थ भाव में शुक्र हो तो जातक एवं उसके पिता के विचारों में निरन्तर मतभेद रहता है, ऐसे जातक को पिता का सुख कम ही मिलता है, इसकी भावनाओं को पिता समझ नहीं पाता।

११. यद्यपि ऐसे व्यक्ति के पास पैसा होता है, पर वह व्यय करने में उदारता नहीं बरतता, तंगी का रोना रोता रहता है।

१२. स्वभाव मधुर होता है, तथा दूसरों से काम निकलवाने की कला आती है।

१३. स्वयं में पूर्ण सावधान एवं सतर्क रहता है, ऊपर से मीठा सहृदय, परोपकारी बना रहता है।

१४. प्रत्येक कार्य, प्रत्येक प्रकार की सहायता करने से पूर्व अपना स्वार्थ सबसे पहले सोचता है, तथा अपने स्वार्थ को सर्वोपरि रखता है।

१५. नौकरी की अपेक्षा व्यापार व्यवसाय में ज्यादा लाभ उठा सकता है।

१६. वृष, कर्क, कन्या, वृश्चिक, मकर और मीन लग्न हो तथा चतुर्थ भाव में शुभ शुक्र हो तो पत्नी सुन्दर सुशील एवं शिक्षित मिलती है, पर यदि मेष, मिथुन, सिंह, तुला, धनु और कुम्भ राशि लग्न हो, तथा चौथे भाव में शुक्र हो तो पत्नी साधारण नाक नक्श वाली एवं अल्पशिक्षित होती है।

१७. पृथ्वी राशि तत्व राशियां अर्थात् वृष, कर्क, कन्या या मकर राशि चतुर्थ भाव में हो, तथा चतुर्थ भाव में शुक्र हो, एवं उस पर मंगल या राहु की दृष्टि हो, तो द्विभार्या योग बनता है।

१८. तुला राशि यदि चतुर्थ भाव में हो, तथा शुक्र उसमें स्थित हो, साथ ही शनि उसके साथ हो या उसकी दृष्टि हो तो वह व्यभिचारी होता है तथा कई स्त्रियों से उसके सम्पर्क रहते हैं।

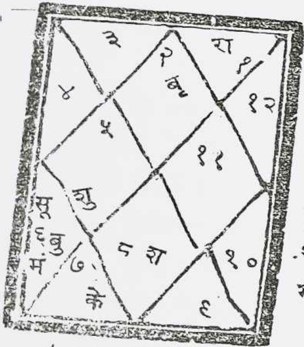
१९. चतुर्थ भाव में शुक्र हो तो यह देखा गया है कि उसके जीवन का उत्तरार्द्ध ज्यादा सुखी एवं सम्पन्न रहता है।

२०. यद्यपि द्रव्य आता रहता है, पर हर समय द्रव्य की चिन्ता भी बनी रहती है।

२१. चतुर्थ शुक्र व्यक्ति को वाहन सुख तो देता ही है, यदि शुक्र निर्दोष हो।

जहां तक फिल्म क्षेत्र का प्रश्न है, चतुर्थ भाव में शुक्र ज्यादा सहायक रहता है, इस सम्बन्ध में निम्न योग मेरे अनुभूत हैं।

(१) चतुर्थ भाव में शुक्र हो, तथा उस पर भाग्येश की दृष्टि हो, साथ ही चतुर्थेश भी शुभ ग्रह से दृष्ट हो तो व्यक्ति फिल्म जीवन में अतुलनीय ख्याति प्राप्त करता है।



(लता मंगेशकर)

सम्बन्धित जन्म कुण्डली स्वर-सम्राज्ञी लता मंगेशकर की है जिसने फिल्मी जीवन में श्रेष्ठ स्तरीय ख्याति अर्जित की है, पाठक स्वयं देखें, कि जन्म कुण्डली के चतुर्थ भाव में शुक्र है, तथा भाग्येश शनि की उस पर पूर्ण दशम दृष्टि है, इसके साथ ही चतुर्थेश सूर्य पर सौम्य ग्रह गुरु की पूर्ण दृष्टि भी है।

(२) चतुर्थ भाव में शुक्र-राहु हो, तथा किसी सौम्य ग्रह की उस पर दृष्टि हो तो वह व्यक्ति फिल्मी जीवन से सम्बन्धित रहता ही है।

(३) यदि किसी लड़की की जन्म कुण्डली में चतुर्थ भाव में स्वराशिस्थ शुक्र हो तथा लग्नेश भाग्येश की युति होकर चतुर्थेश पर दृष्टि हो तो वह फिल्मी जीवन से सम्बन्धित होती है।

(४) चतुर्थ भाव में शुक्र हो, वृश्चिक लग्न हो, तथा चतुर्थेश के साथ भाग्येश लग्नेश कहीं पर भी हो, तो उसका फिल्मी जीवन अल्प तो रहता है, पर चर्चा बहुत अधिक रहती है।

लगभग तीन वर्ष पहले की घटना है, अपने एक परिचित व्यवसायी के साथ बम्बई गया था, विचार लगभग आठ-दस दिन वहां रुकने का था, इसी दौरान एक फिल्मी पार्टी में एक करोड़पति व्यवसायी व उसकी पुत्री से परिचय हुआ, दूसरे या तीसरे रोज उनके बुलाबे पर उनके घर पहुंचा···अन्य जन्मपत्रियों के साथ उनकी लाड़ली पुत्री की भी कुण्डली देखने को मिली, उपर्युक्त नं० चार योग पूर्ण विद्यमान था, मैंने स्पष्ट कहा; यह फिल्म में एक्ट्रेस बनेगी पर लम्बे समय तक नहीं।

पिता का इस सम्बन्ध में नकारात्मक रुख ही था, पर गत वर्ष पुत्री की जिद के कारण उन्हें स्वीकृति देनी पड़ी, तथा पुत्री को एक प्रसिद्ध निर्माता के निर्देशन में काम करना पड़ा, फिल्म आउट होने से पूर्व ही वह चर्चित हो चुकी थी, और बाद में तो उसका विवाह भी एक प्रसिद्ध व्यक्ति से हो गया, अस्तु।

वस्तुतः यदि चौथे भाव में शुक्र हो तथा शुभ ग्रहों से दृष्ट हो तो वह फिल्मी जीवन से सम्बन्धित होने पर प्रबल धनपति हो सकता है।

पंचम भाव में शुक्र

पंचम भाग जन्म कुण्डली का एक महत्वपूर्ण भाव है, जो कि दूसरा त्रिकोण स्थान है, एवं भाग्य भाव से भाग्य भाव पर होने के कारण 'व्यक्ति के भाग्य' का भी प्रतिनिधित्व करता है।

पंचम भाव में शुक्र की उपस्थिति को शुभता प्रदान की गई है, इस सम्बन्ध में भारतीय एवं पाश्चात्य विद्वानों के विचारों से पाठकों को अवगत करा देना अनुकूल होगा—

कल्याण वर्मा

पंचम भाव में शुक्र रखने वाला व्यक्ति सुखी, धनी, बहुपुत्रवान् तथा उच्च व्यक्तियों से सम्पर्क रखने वाला होता है।

गर्ग

यह विद्यावान होता है, तथा कई कलाओं से युक्त होता है, अर्थात् किसी विशेष कार्य में निपुण होता है।

गुणाकर

सन्तोषी होता है, तथा दूसरों को प्रभावित करने की क्षमता रखता है।

वशिष्ठ

कन्या संतति की अपेक्षा पुत्र संतति ज्यादा होती है। जीवन में प्रत्येक कदम सोच-विचार कर उठाता है।

यवन जातक कार

काव्य कला में निपुण होता है, कई प्रकार के वाहन तथा एक

से अधिक भृत्य होते हैं। राज्य में नौकरी करता है, तथा उच्च पदाधिकारियों का प्रिय बना रहता है।

वैद्यनाथ

इसे पुत्रों से सुख मिलता है, तथा पुत्रों के द्वारा प्रसिद्धि मिलती है, आर्थिक दृष्टि से यह सम्पन्न एवं सुखी होता है।

भृगु

इसके कन्या सन्तान अधिक होती है, दामादों के स्वागत-सत्कार में व्यस्त रहता है, इसके साथ ही यह विलासिनी स्त्रियों का प्रिय होता है।

गौरी जातक

कन्या सन्तान अधिक होती है, तथा कई बार जीवन में बदनाम होता है, हां जीवन में द्रव्य की कमी नहीं रहती।

नारायण भट्ट

कवि होता है, तथा पुत्रों से यश मिलता है, पर कन्या सन्तान ज्यादा होने से दुखी भी रहता है।

घोलप

वैभवशाली, धनवान, गुणी, अतिथि स्वागत में तत्पर तथा शत्रु रहित होता है।

जयदेव

मंत्र शास्त्र या वेद आदि में रुचि रखने वाला होता है, दूसरों की मदद करने में तत्पर ऐसा जातक गुणी व्यक्तियों की कद्र करने वाला होता है।

काशीनाथ

यह दीर्घायु होता है, तथा पोतों को खिलाता है।

हरिवंश

कवि, चतुर, सभाविद, वक्ता एवं ज्ञानी होता है, निरन्तर यह क्रियाशील रहता है, खाली बैठना इसे अच्छा नहीं लगता, भाग्य सदैव इसका साथ देता है।

जंगम

इसके जन्म से पांचवें वर्ष में पिता को द्रव्य लाभ होता है।

नवाब लखनऊ

यह व्यक्ति उदार, राज्य के उच्च लोगों में आस्था रखने वाला तथा धनवान होता है।

रत्नाकर

पंचम स्थान में शुक्र रखने वाला माता को सुख नहीं देता।

पाश्चात्य मत

- यह व्यसनी तथा पर स्त्री भोगी, कामुक होता है।
- पुत्र सन्तान की अपेक्षा कन्या सन्तान ज्यादा होती है।
- धनवान तो होता है, पर कन्जूस स्वभाव वाला भी होता है।
- शान्त एवं स्थिर प्रकृति का होता है।
- रंगमंच फिल्म आदि में विशेष सफलता प्राप्त करता है।
- जुआ, सट्टा, लाटरी आदि से आकस्मिक द्रव्य लाभ होता है।
- सोच विचार कर बोलने वाला होता है।
- ललित कलाओं—यथा संगीत चित्रकला आदि में रुचि रखने वाला होता है।
- नया हुनर सीखने को सदैव तैयार रहता है।
- गृहस्थ सुख पूर्ण होता है।
- न्याय करने वाला होता है, तथा अन्याय का विरोधी होता है।
- उच्चस्तरीय व्यक्तियों से इसका निकट का परिचय होता है।

मेरा अनुभव

भारतीय और पाश्चात्य विद्वानों ने पंचम भाव में शुक्र की उपस्थिति को श्रेष्ठ ही माना है तथा सभी दृष्टियों से अनुकूल ही बताया है, परन्तु मुझे जो अनुभव हुए हैं वे विपरीत भी रहे हैं इस सम्बन्ध में मेरे व्यक्तिगत अनुभव निम्न प्रकारेण हैं—

- यदि मेष, सिंह या धनु लग्न हो तथा पंचम भाव में शुक्र स्थित हो तो उस जातक की शिक्षा में निरन्तर व्यवधान आता रहता है। शिक्षा अपूर्ण रहती है, फिर भी उसे सम्मान मिलता रहता है।

- इनका भाग्योदय चौबीसवें वर्ष से होता है, पर इसके बाद भी अनिश्चयता एवं अस्थिरता बनी रहती है, जीवन के छत्तीसवें वर्ष की समाप्ति के बाद से स्थिरता, श्रेष्ठता एवं भाग्य लाभ होने लगता है।

- यदि मेष, मिथुन, सिंह, तुला, धनु या कुम्भ लग्न हो तथा पंचम भाव में शुक्र हो तो उस जातक के पुत्र ज्यादा होते हैं, जबकि वृष, कर्क, कन्या, वृश्चिक, मकर, मीन लग्न हो एवं पंचम में शुक्र हो तो कन्या संतान ज्यादा होती है।

- ऐसे व्यक्ति या स्त्री भोग प्रधान रुचि रखते देखे गए हैं, अत्यन्त कामुक होते हैं, कामुकता में कई बार निम्न स्तर तक जा पहुंचते हैं, या बदनाम होते हैं।

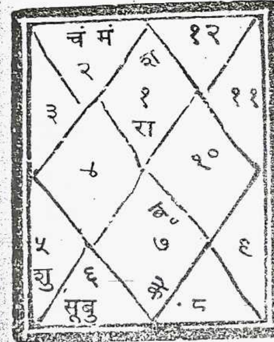
- जीवन में पत्नी के अतिरिक्त अन्य स्त्रियों से सम्पर्क रखता है, स्त्री की कुण्डली में यदि यह योग हो तो परपुरुष से सम्बन्ध होते हैं, कई बार ऐसा योग प्रारम्भिकावस्था में ही घटित हो जाता है।

- अधिकतर ऐसे व्यक्ति आजीविका के लिए शिक्षक, लेक्चरार या शिक्षा का क्षेत्र चुनते देखे गए हैं।
- प्रकाशन, लेखन, पुस्तक विक्रेता, प्रकाशन-एजेंट आदि कार्यों में सफल होते हैं।
- ज्योतिष का शौक होता है, पर इस क्षेत्र में पारंगत नहीं हो सकते।
- यदि किसी स्त्री की जन्मकुण्डली में ऐसा योग होता है तो उसे प्रदर रोग, रक्त स्राव तथा स्त्री सम्बन्धी बीमारी बनी ही रहती है।
- मिथुन लग्न हो तथा पंचम भाव में शुक्र हो तो शिक्षा में 'आर्ट्स' का क्षेत्र चुनते हैं।
- वृष, कर्क, कन्या, वृश्चिक या मकर लग्न हो तथा पंचम भाव में शुक्र हो तो 'विज्ञान' का क्षेत्र चुनते हैं।
- मीन लग्न हो तथा 'पंचम भाव' में शुक्र हो तो पुत्र का सुख कम मिलता है।
- ये अधिकतर घर में उदास एवं बाहर हंसमुख खुश मिजाज रहते हैं।
- पंचम शुक्र पर गुरु की दृष्टि हो तो द्विभार्या योग भी बनता है।
- पंचमस्थ शुक्र सन्तान का अभाव (पुत्र सन्तान) या विरोधी पुत्रों को जन्म देता है।
- जीवन में धन संचय होता है, पर कन्जूस भी होते हैं, कौड़ी के हिसाब के लिए झगड़ा तक कर देंगे पर सैकड़ों रुपयों के नुकशान को चुपचाप पी लेंगे।
- अपने किये गए कार्यों पर पश्चात्ताप करते रहते हैं।

जहां तक फिल्म क्षेत्र का प्रश्न है, पंचम शुक्र सहज ही शुभ फल देने में सहायक होता है, अन्य व्यक्तियों को जहां काफी परिश्रम करने के बाद सफलता मिलती है वहाँ इन्हें इस क्षेत्र में सहज ही सफलता मिल जाती है।

इस सम्बन्ध में निम्न योग स्पष्ट है—

१. चर लग्न हो अर्थात् मेष, कर्क, तुला या मकर लग्न हो; लग्न में राहु हो तथा पंचम भाव में शुक्र हो तो व्यक्ति फिल्म में सफल अभिनेता बनता है तथा यश प्राप्त करता है।



॥ श्री अशोक कुमार ॥

संबंधित जन्म कुण्डली प्रसिद्ध फिल्म अभिनेता अशोक कुमार की है, योग संख्या एक इसमें स्पष्ट है।

लग्न चर राशि का है, तथा लग्न में राहु विद्यमान है, पंचम भाव में शुक्र है ही। अतः फिल्मी जीवन में सफलता मिलना निश्चित था।

यद्यपि इसके अतिरिक्त चन्द्र-मंगल से प्रबल लक्ष्मी योग भी बना है।

२. पंचम भाव में शुक्र हो, एकादश भाव में राहु हो तथा लग्नेश या तो नवम भाव में हो, या कहीं पर भी भाग्येश के साथ हो तो फिल्मी क्षेत्र से लाभ उठाता है।

३. चर लग्न हो, लग्नेश, भाग्येश दोनो स्थिर राशि में हो तथा पंचमस्थ शुक्र पर धनेश की दृष्टि हो तो व्यक्ति फिल्म जीवन से अतुलनीय धन, यश एवं प्रतिष्ठा प्राप्त करता है।

४. पंचम भाव में शुक्र के साथ राहु हो तथा मंगल की उस पर पूर्ण दृष्टि हो तो फिल्म जीवन में वह खलनायक बनता है ।

५. पंचम भाव में शुक्र हो, भाग्येश भाग्य भाव में हो तथा लग्नेश-चतुर्थेश धनेश या तो एक स्थान पर बैठे हों या परस्पर दृष्टि सम्बन्ध रखते हों तो भी व्यक्ति फिल्म जीवन में अभिनय के बल पर अपनी श्रेष्ठता का मानदण्ड स्थापित करता है ।

षष्ठ भाव में शुक्र

षष्ठ भाव या छठा भाव जन्म कुण्डली में अपना एक विशिष्ट स्थान रखता है, क्योंकि इस भाव में शुक्र की उपस्थिति को कुछ विद्वानों ने अधिक महत्त्व दिया है । नीचे हम कुछ पौर्वात्य एवं पाश्चात्य विद्वानों के मत इस सम्बन्ध में स्पष्ट कर रहे हैं—

वैद्यनाथ

छठे भाव में शुक्र हो तो जातक को निरन्तर बाधाएं आती हैं एवं उन्नति के अवसर कम मिलते हैं ।

आचार्य

ऐसा शुक्र विस्फोटकीय होता है अर्थात् उसके जीवन में अचानक उन्नति होती है और उसका पतन या अवनति भी अचानक ही होती है ।

पाराशर

लजीले स्वभाव का ऐसा व्यक्ति जीवन में महत्त्वपूर्ण मामलों में पराजित ही होता है ।

वशिष्ठ

धुनी होता है, कई बार ऐसे भी कार्य कर बैठता है, जो उसे नहीं करने चाहिए । उसके प्लान, उसकी नीतियां अधिकतर असफल ही रहती हैं ।

गर्ग

अधिकतर समय झगड़े टंटे, लड़ाई कलह आदि में व्यतीत होता है ।

कल्याण वर्मा

स्त्री भीरू होता है, शत्रु से बहुत अधिक डरता है तथा नपुंषक व्यक्तित्व होता है, स्वतंत्र चेत्ता या निर्भीक नहीं होता ।

मंत्रेश्वर

निम्न स्तर की स्त्रियों के पीछे यह दीवाना रहता है, उल्टे एवं गलत कार्यों में धन का अपव्यय होता है तथा हर समय धन की तंगी बनी रहती है ।

हरिवंश

कामुक, विविध व्यसनों में रुचि रखने वाला, दुर्बल मनस्थिति वाला, निम्न स्तरीय मित्रों में समय बिताने वाला तथा पाखण्डी होता है ।

काशीनाथ

यह घमण्डी होता है तथा प्रदर्शन में ज्यादा विश्वास रखता है, पिता से सैद्धान्तिक मतभेद रहता है ।

लखनऊ नवाब

यह रोग रहित होता है, पर अव्वल दर्जे का घमण्डी होता है, मित्र इसके कम ही होते हैं ।

विलियम

यह अल्पायु होता है तथा ४१वें वर्ष में इसे घोर कष्ट उठाना पड़ता है।

जेम्स एटर

यह सुखी एवं वैभवपूर्ण जीवन बिताने वाला होता है, तबियत का रईस, शान शौकत से रहने वाला एवं स्त्रियों का प्रिय होता है।

लिलि

यह व्यापार की अपेक्षा नौकरी में ज्यादा लाभ उठा सकता है।

टर्नर

अतिशय भोगी होता है, जीवन में कितनी स्त्रियों से यह सहवास करता है इसका कोई हिसाब नहीं रहता।

जेकब

आर्थिक दृष्टि से सफल एवं सुखी होता है।

गफ्फार

अधिकतर रोग मूत्र, जननेन्द्रिय सम्बन्धी होते हैं।

मेरा अनुभव

ऊपर विद्वानों ने शुभ एवं अशुभ दोनों ही प्रकार के फल बताए हैं, भारतीय विद्वानों में से अधिकतर ने अशुभ एवं पाश्चात्य विद्वानों ने शुभ फल बताए हैं।

मेरे विचार से षष्ठस्थ शुक्र के फल निम्न देखे गए हैं—

मेष लग्न हो तथा शुक्र छठे भाव में हो तो

पत्नी गरीब घराने की पर सुशील मिलती है, वह अल्प शिक्षित होते हुए भी चतुर एवं विवेकवान होती है।

वृष लग्न हो तथा शुक्र छठे हो तो

पत्नी कर्कश स्वभाव की जिद्दी तथा कोमलताहीन होती है, कन्या संतति ज्यादा होती है।

मिथुन लग्न हो तो

व्यक्ति धोखेबाज, अवसरवादी, चतुर, दम्भी एवं उपकारों को भूलने वाला होता है।

कर्क लग्न हो तो

व्यक्ति को २८वें वर्ष के बाद से व्याधि होती है तथा वैवाहिक जीवन दूभर होता है।

सिंह लग्न हो तो

कामुक, हठी, सफल प्रशासक, अधिकारियों की जी हजूरी करने वाला तथा धनी होता है।

कन्या लग्न हो तो

कर्जदार बने रहते हैं तथा निरन्तर एक न एक कर्जा चलता ही रहता है। जीवन में काफी कुछ उतार-चढ़ाव देखने पड़ते हैं।

तुला लग्न हो तो

कन्या संतति ज्यादा होती है तथा कन्या के दुःख से दुःखी भी रहना पड़ता है।

वृश्चिक लग्न हो तो

धीरे-धीरे उन्नति होती है, स्वार्थी होते हैं तथा प्रत्येक कार्य में बाधाएं या व्यवधान आते ही रहते हैं।

धनु लग्न हो तो

पत्नी झगड़ालू होती है तथा पति पर शासन करती है।

मकर लग्न हो तो

व्यभिचारी प्रकृति होती है।

कुम्भ लग्न हो तो

पत्नी के स्वास्थ्य पर जरूरत से ज्यादा व्यय होता है, पर वह जीवन में सहयोगी एवं सहायक भी बनी रहती है।

मीन लग्न हो तो

व्यक्ति व्यवसाय में पूंजी गंवा बैठता है, भागीदारी भी परेशानी पूर्ण ही होती है।

इसके अतिरिक्त यदि छठे भाव में शुक्र हो तो निम्न फल भी देखने को मिले हैं—

१. व्यक्ति विलासी, ऐय्यासी एवं दम्भी होता है, धुन का पक्का होता है, हवाई किले बनाता रहता है।
२. प्रारम्भिक जीवन में अच्छा पैसा मिल जाता है पर कुटिल स्त्रियों से संसर्ग के कारण एवं अपनी मूर्खता से धन गंवा बैठता है।
३. जीवन के ४५वें वर्ष से पुनः भाग्योदय होता है पर ३५वें साल से ४४वें साल तक का समय अत्यंत परेशानीपूर्ण एवं कंटकाकीर्ण होता है।
४. वृद्धावस्था सुखमय बीतती है।
५. इनके पास जिस रफ्तार से धन आता है, उसी रफ्तार से धन चला भी जाता है, टिकता कम ही है।
६. पत्नी से सम्बन्ध मधुर नहीं रहते, न इसके विचार पत्नी से मिलते ही हैं, गृहस्थ जीवन सामान्य ही कहा जा सकता है।

जहां तक फिलम लाइन का प्रश्न है छठा शुक्र अत्यन्त सहायक रहता है, क्योंकि छठे भाव में शुक्र रहकर द्वादश भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेगा जोकि भोग स्थान है और शुक्र योग का कारक ग्रह है। अतः शुक्र की षष्ठस्थ स्थिति अत्यन्त सहायक रहती है।

१. छठे भाव में शुक्र राहु का पूर्ण सम्बन्ध हो, चन्द्रमा नवम भाव में हो तो व्यक्ति सफल अभिनेता (या अभिनेत्री) बनता है।
२. यदि छठे भाव में शुक्र मंगल के साथ हो तथा राहु द्वादश भाव में हो, साथ ही कोई भी एक सौम्य ग्रह उच्च का होकर केन्द्र भाव में बैठा हो तो अभिनय के क्षेत्र में वह बेजोड़ प्रगति करता है।
३. वृष लग्न में तीसरे भाव में राहु तथा छठे भाव में शुक्र हो एवं लग्न में निर्दोष चन्द्र हो तो व्यक्ति फिल्मी जीवन में धूमकेतु की तरह चमकता है।
४. छठे भाव में मंगल शुक्र राहु शनि एवं सूर्य हो तो व्यक्ति फिल्मी जीवन में सफल अभिनेता होकर पूर्ण ऐश्वर्य भोग करता है।
५. केवल छठे भाव में शुक्र हो तथा उस पर किसी भी ग्रह की दृष्टि न हो तो वह खलनायक बनता है पर इस हेतु भी उसे काफी कड़ा संघर्ष करना पड़ता है।
६. लग्नेश-भाग्येश-धनेश के साथ शुक्र यदि छठे भाव में हो तो प्रयत्न करने पर वह अभिनेता बनकर यश मान धन एवं प्रतिष्ठा प्राप्त करता है।

सातवें भाव में शुक्र

कुण्डली का सातवां भाव इतना अधिक महत्त्वपूर्ण है कि डॉ० ग्रॉवर के शब्दों में 'जिसने सप्तम भाव को समझ लिया उसने कुण्डली के पूरे रहस्य समझ लिए।'

सप्तम भाव कुण्डली का तीसरा मुख्य केन्द्र भाव है, इस भाव में शुक्र की उपस्थिति पर विद्वानों ने विभिन्न मत स्पष्ट किए हैं, मैं पहले कुछ भारतीय एवं पाश्चात्य विद्वानों के मत स्पष्ट कर फिर अपने अनुभव व्यक्त करूंगा।

वैद्यनाथ

सप्तम भाव में शुक्र रखने वाला व्यक्ति बहुस्त्री भोगी होता है, इसके विचार आध्यात्मिक कम एवं भौतिकवादी ज्यादा होते हैं। सुन्दर शरीर, आकर्षक आकृति एवं बातचीत में चतुर होता है।

गुणाकर

घोर कामुक एवं स्वार्थी होता है तथा छोटी से छोटी बात पर विरोध करने की प्रवृत्ति होती है।

गर्ग

सप्तम भाव में शुक्र रखने वाले व्यक्ति की पत्नी अत्यन्त सुन्दर सुशील एवं फैशन वाली होती है यौवन के उभार जरूरत से ज्यादा होते हैं।

कल्याण वर्मा

ऐसा व्यक्ति शान्ति प्रिय होता है, पर कामुक होता है, यह बात अलग है, कि इसे अपने उद्देश्य में सफलता मिले या न मिले। आर्थिक दृष्टि से यह सम्पन्न होता है।

वशिष्ठ

पत्नी जरूरत से ज्यादा सुन्दर होती है, और यही इसकी परेशानी का कारण होता है।

पाराशार

यह भोगी, स्वस्थ, खुले दिल और दिमाग वाला तथा कामुक प्रवृत्ति प्रधान होता है।

जयदेव

यह कई क्रीड़ाओं में निपुण होता है, जुआ, संगीत, गायन आदि में यह अपनी श्रेष्ठता सिद्ध करता है।

जागेश्वर

यह पर-स्त्रियों में आसक्त, घर की पत्नी को सुख देने वाला तथा वाक्चतुर होता है, और इसी गुण के कारण यह अपने उद्देश्य में सफल हो जाता है।

काशीनाथ

भाग्य सदैव इसका साथ देता है, तथा जीवन में अनायास धन प्राप्ति के योग भी बनते हैं।

नारायण भट्ट

इसे स्त्री सुख नहीं मिलता, तथा निरन्तर कलह या पत्नी से वैचारिक मतभेद बने रहते हैं, पर यह होशियार इतना होता है कि बिगड़ी हुई परिस्थितियों को अपने अनुकूल बना लेता है।

कालिदास

स्त्रियों के मामले में यह सौभाग्यशाली होता है, तथा फैशन एवं सौन्दर्य प्रसाधनों पर काफी कुछ व्यय हो जाता है।

लखनऊ नवाब

यह वाक्पटु, कार्य करने में चतुर, आलसी तथा परोपकारी होता है। घर की पत्नी की अपेक्षा पड़ोसी की पत्नी की ज्यादा चिन्ता रखता है।

पाश्चात्य मत

विलियम

जिसके सप्तम भाव में शुक्र होता है, उसका विवाह छोटी उम्र में हो जाता है, तथा पत्नी सुख पूर्ण मिलता है।

गफ्फार

ऐसे व्यक्तियों का भाग्योदय विवाह के उपरांत ही होता है, तथा ससुराल से धन प्राप्ति होती है।

लिलि

इसको अपने पुत्रों से विशेष प्रेम होता है, तथा एक से अधिक स्त्रियों से पत्नीवत् सम्बन्ध रहते हैं, प्रेम के मामले में यह असफल नहीं होता।

रोजर

मित्रों से इसे नुकसान होता है, तथा साझेदारी के व्यापार में हानि उठानी पड़ती है।

बर्टन

यह धनवान होता है, पर कामुक परस्त्री रत एवं वाहन सुखी भी होता है, अधिकतर धन भोग-विलास एवं सुन्दर स्त्रियों में व्यय हो जाता है।

मेरे अनुभव

भारतीय एवं पाश्चात्य विद्वानों ने सप्तमस्थ शुक्र के बारे में तीन मुख्य बातें बताई हैं—

१. यह पर-स्त्रीरत होता है।

२. यह धनवान होता है।

३. यह सौन्दर्य प्रिय होता है।

पर मेरे अनुभव इस से कुछ विपरीत भी रहे हैं—

१. अधिकतर यह देखा गया है कि सप्तम भाव में शुक्र होने पर उसका विवाह या तो बाल्यावस्था में ही हो जाता है, अन्यथा फिर विलम्ब से विवाह होता है, और विवाह में काफी बाधाओं का सामना करना पड़ता है।

२. मिथुन या कन्या लग्न हो तथा सप्तम भाव में शुक्र हो तो दो विवाह या बहु विवाह होते हैं, पहली स्त्री की अधिकतर मृत्यु देखी गई है।

३. वृश्चिक या मेष लग्न हो, तथा सप्तम भाव में शुक्र हो तो उसे अनायास धन मिलता है, या ससुराल से काफी धन मिलता है।

४. भाग्योदय विवाहोपरान्त होता है।

५. घर में शासन पत्नी का ही चलता है।

६. यह कामुक होता है, पर-स्त्री गमन की इच्छा हर समय बनी रहती है, पर जितना इस सम्बन्ध में प्रयत्न करता है, उतनी सफलता नहीं मिल पाती।

७. इसके बारे में निरन्तर भ्रम बना रहता है, तथा यह स्वयं प्रदर्शन में विश्वास रखता है।

८. सन्तान कम होती है।

९. तुला, धनु या मेष लग्न हो तथा सप्तम भाव में शुक्र हो तो जातक को पत्नी सुन्दर, सुशील एवं शिक्षित मिलती है, पर वह हुकूमत में ज्यादा विश्वास रखती है ।

१०. मिथुन लग्न हो तथा सत्तम भाव में शुक्र हो तो जातक का वैवाहिक जीवन अधिकतर दूभर ही देखा गया है ।

११. वृश्चिक, मकर, वृष और कन्या लग्न वालों के सप्तम भाव में स्थित शुक्र शुभ फल देते नहीं देखा गया है ।

१२. इन व्यक्तियों में कामुकता ज्यादा होती है ।

१३. तुला, वृष, कर्क तथा सिंह लग्न हो तथा सप्तम भाव में शुक्र हो तो विजातीय विवाह या प्रेम विवाह होने के आसार ज्यादा होते हैं ।

१४. अधिकतर भाग्योदय ४०वें वर्ष के बाद ही होता है ।

१५. विवाह योग की संभावनायें २८ से ३२वें वर्ष के बीच ही देखी गई हैं ।

१६. पुस्तक लेखन, प्रकाशन, मुद्रण आदि व्यापार व्यवसाय में ज्यादा सफल होते हैं, पर साझेदारी से हानि उठाते हैं ।

१७. स्त्री का मूल इनके लिए केवल भोग तक ही रहता है ।

१८. ये स्वतन्त्र चेता, कोमल हृदय एवं मधुर प्रकृति के होते हैं। जहां तक फिल्म जीवन का प्रश्न है, सप्तम भाव में शुक्र रखने वाले व्यक्ति सफल गायक एवं संगीत निर्देशक सिद्ध हुए हैं—

१. सप्तम भाव में शुक्र बुध एवं सूर्य हो तो तथा राहु की इन पर दृष्टि हो तो व्यक्ति सफल संगीत निर्देशक बनता है ।

सम्बन्धित जन्म-कुण्डली एक प्रसिद्ध संगीत निर्देशक की है, जिसने फिल्मी जीवन में रह कर श्रेष्ठ सम्मान ख्याति एवं धन प्राप्त किया, पाठक उपर्युक्त योग इसमें स्पष्ट देख सकते हैं ।

२. सप्तम भाव में शुक्र बुध तथा मंगल हो, एवं सूर्य षष्ठ भाव में हो, तो व्यक्ति सफल फिल्मी गायक होता है ।

३. अकेला ही शुक्र सप्तम भाव में हो, तथा बुध दूसरे भाव में गुरु के साथ हो तो व्यक्ति सफल गायक होता है ।

४. सप्तमस्थ शुक्र स्वगृही या उच्च का हो, तथा उस पर सौम्य ग्रहों की दृष्टि हो तो प्रयत्न करने पर कुछ बाधाओं के साथ वह फिल्म जीवन में गायन के क्षेत्र में सफलता प्राप्त कर सकता है ।

५. सातवें भाव में शुक्र राहु हो तो जातक निःसन्देह पार्श्व गायन में सफलता प्राप्त करता है ।



अष्टम भाव में शुक्र

अष्टम भाव पूर्ण जीवन का प्रतिनिधित्व करता है, अतः अष्टम भाव की उपेक्षा न करके इस सम्बन्ध में विशेष रुचि लेकर अध्ययन करना युक्तियुक्त होगा ।

अष्टम भाव में शुक्र की उपस्थिति को विद्वानों ने विभिन्न फलितार्थों के रूप में देखा है, मैं उनमें से कतिपय पौर्वात्य एवं पाश्चात्य ज्योतिर्विदों के मत उद्धृत कर रहा हूं ।

कश्यप

अष्टम भाव गत शुक्र जातक को विविध रोग देता है, और सामान्यतः उस रोग को चिकित्सक नहीं पहचान पाता ।

कल्याण वर्मा

आठवें भाव में शुक्र हो तो व्यक्ति दीर्घायु धनवान तथा राज्य से सम्मान प्राप्त करता है ।

वशिष्ठ

ऐसे जातक को वीर्य विकार होता है, तथा सन्तानोत्पत्ति में बाधा उपस्थित होती है ।

गर्ग

शुक्र जिस व्यक्ति के अष्टम भाव में होता है, वह कुलदीपक होता है, पिता का उसे सुख कम मिलता है, या पिता-पुत्र में परस्पर मतभेद बना रहता है, तीर्थ यात्रायें होती हैं ।

वैद्यनाथ

जीवन का अधिकतर भाग सुखी रहता है, तथा आनन्दोपभोग

की वस्तुयें अनायास ही प्राप्त होती रहती हैं ।

नारायण भट्ट

ऐसा व्यक्ति फिजूल खर्ची होता है, तथा निरन्तर ऋण बढ़ा चढ़ा रहता है, एक कर्जा उतारते ही दूसरा कर्जा स्वयं ही इस पर चढ़ जाता है । बातचीत में होशियार या पटु नहीं होता ।

जयदेव

यह निर्धन होता है, तथा हर क्षण अज्ञात आशंका से संशकित रहता है ।

जागेश्वर

इसे बोलने में कठिनाई या हकलाहट होती है, दीर्घायु होता है, पर जीवन अधिकतर इसका दरिद्रावस्था में ही बीतता है ।

काशीनाथ

यह आलसी, व्यसनी, फिजूल खर्ची तथा घमण्डी होता है ।

लखनऊ नवाब

इसे पत्नी सुख का अभाव रहता है, तथा छोटी-छोटी बात पर झगड़ता रहता है ।

मंत्रेश्वर

भूमि सम्बन्धी कार्यों से इसे लाभ रहता है ।

पाश्चात्य मत

बर्टन

इसे ससुराल से धन मिलता है, स्त्रियों का अवैध व्यापार करता है, विधवा स्त्री से भी धन लाभ हो सकता है ।

लिलि

एक्सीडेन्ट कम होते हैं, आयु पूर्ण होती है, पर व्यसन जरूरत से ज्यादा करता है ।

गफ्फार

इसे अधिकतर रोग अण्डकोष या मूत्राशय से सम्बन्धित ही होते हैं।

मेरे अनुभव

१. मेरे विचार में अष्टम भावस्थ शुक्र लाभ की अपेक्षा हानि ही ज्यादा करता है।

२. अष्टम भावस्थ शुक्र जातक को आलसी, अपव्ययी, कामुक और ऋणि तो बनाता ही है।

३. ऐसे जातक किसी एक क्षेत्र में प्रसिद्ध होते हैं।

४. पत्नी सुख पूरा होता है, पर पत्नी घमण्डी चतुर एवं होशियार होती है, तथा पति को नियन्त्रण में रखने की कला जानती है।

५. मेष और वृश्चिक लग्न की कुण्डली में शुक्र अष्टमस्थ होने पर पत्नी सुख में न्यूनता देता है, पत्नी झगड़ालू होती है, पुत्र विरोधी होते हैं, तथा गृहस्थ सुख में कमी रहती है।

६. ऐसे जातकों को अधिकतर अण्ड वृद्धि, वीर्य विकार, प्रदर, मधुमेह आदि रोग होते देखे गए हैं।

७. मिथुन लग्न हो तथा शुक्र आठवें हो तो पुत्र नालायक एवं पिता विरोधी होता है।

८. मकर लग्न हो, शुक्र आठवें हो तो जातक दुःखी अस्थिर स्वभाव, तथा परस्त्री रत रहता है।

९. कुम्भ लग्न हो तथा शुक्र आठवें हो तो विवाह के बाद ऋणि ही बना रहता है।

१०. कन्या लग्न हो, शुक्र अष्टमस्थ हो तो अधेड़ विधवा से प्रेम सम्बन्ध होता है, तथा द्रव्य लाभ रहता है।

११. ऐसे जातक या तो शराबी होते हैं, या कोई न कोई ऐसा व्यसन पाले रहते हैं, जिस पर उनका अपव्यय होता रहता है।

१२. हस्त मैथुन या अप्राकृतिक संभोग जैसी कुटेव भी ऐसे व्यक्तियों में पाई गई है।

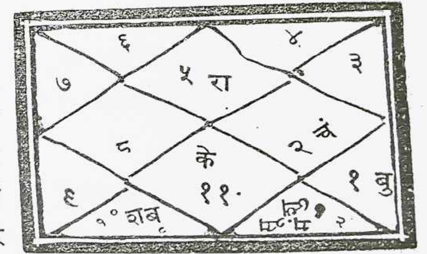
१३. शुक्र के साथ मंगल हो तो कारावास भी जाता है, यदि मंगल से पीछे ही शनि हो तो निस्सन्देह बदनाम होकर जेल जाता है।

१४. संभोग अत्यधिक करते हैं, लाज हया शरम कम होती है।

१५. स्वास्थ्य सदैव निम्न बना रहता है।

जहां तक फिल्म लाइन का प्रश्न है, अष्टमस्थ शुक्र खलनायक बनने में अवश्य सहायक होता है—

१. अष्टम भाव में मंगल शुक्र सूर्य की स्थिति हो तथा लग्नेश बलवान हो तो व्यक्ति खलनायक या विलन के रूप में सफलता प्राप्त करता है।



भारतीय फिल्म लोक के एक प्रसिद्ध खलनायक की यह जन्म कुण्डली है जिसने इस क्षेत्र में वह सफलता प्राप्त की जो आज तक उसकी टक्कर में दूसरा आने का साहस नहीं कर रहा है।

पाठक स्वयं उपर्युक्त नियम इसमें देख सकते हैं।

२. निर्दोष शुक्र अकेला ही खलनायक के क्षेत्र में सफलता देता है पर उसे जरूरत से ज्यादा संघर्षों का सामना करना पड़ता है।

३. अष्टम भाव में शुक्र बुध के साथ हो तथा भाग्येश—लग्नेश या तो लग्न में हो या नवम भाव में हो तो व्यक्ति फिल्म क्षेत्र में सफल विलेन बनता है।

नवम भाव में शुक्र

नवम भाव ही भाग्य भाव है, जीवन का आधार भाग्य है और भाग्य से ही जीवन संवर सकता है, इस भाव में शुक्र की उपस्थिति को सर्वाधिक महत्त्व दिया गया है—

कल्याण वर्मा

नवम भाव में शुक्र रखने वाले जातक को अनायास धन मिलता है, सुन्दर स्त्री एवं धनी ससुराल मिलती है तथा वह समाज में अपने कार्यों से प्रशंसा प्राप्त करता है।

आचार्य

इसकी धार्मिक रुचियां जागृत रहती हैं तथा परिश्रम से धन संचय कर ख्याति लाभ करता है।

यवन जातक

इसे जीवन में तीर्थ-यात्राओं का सुख मिलता है तथा काफी बड़ी मित्र मण्डली होती है, भाग्योदय पच्चीसवें वर्ष के बाद से होता है।

गर्ग

यह उन्नति करता है, समाज में सम्माननीय स्थान प्राप्त करता है तथा परिश्रम के बलबूते पर ही कुछ करके दिखाता है।

वशिष्ठ

ऐश आराम सुखोपभोग की वस्तुएं इसे प्राप्त होती रहती हैं।

हरिवंश

राज्य सेवा में इसकी उन्नति होती है, विद्या के क्षेत्र में अग्रणी रहता हुआ यह कीर्ति लाभ करता है, धार्मिक विचारों का यह व्यक्ति सर्वत्र सम्मान पाता है।

नारायण भट्ट

घर में थोड़ा बहुत धार्मिक कार्य चलता ही रहता है, आर्थिक दृष्टि से यह सम्पन्न एवं सुखी जीवन व्यतीत करता है।

लखनऊ नवाब

यह विद्या के क्षेत्र में सफल रहता है तथा चतुर वक्ता होता है, आर्थिक दृष्टि से यह सुखी एवं सफल होता है। दान देने में तत्पर ऐसा जातक जो भी बात कहता है नाप तोल कर कहता है और प्रामाणिक रूप से कहता है।

लिलि

यह निर्मल स्वभाव वाला, उदार, चतुर एवं धनी होता है, ललित कलाओं में इसकी रुचि बराबर बनी रहती है।

गफ्फार

यह विदेश यात्राएं करता है, इसके घर में सुन्दर एवं दुर्लभ वस्तुओं का संग्रह रहता है, विवाह से इसे प्रचुर धन मिलता है।

रोजर

धार्मिक कार्यों में इसकी रुचि बनी रहती है, पिता दीर्घायु होता है तथा पैतृक धन प्राप्त होता है।

टर्नर

यदि शुक्र के साथ राहु या मंगल होता है तो यह अपने सम्बन्धी या पूज्य व्यक्ति की पत्नी से सहवास करता है।

जेनिथ

वाहन सुख इसे पूर्ण मिलता है तथा आकस्मिक रूप से धन लाभ होता है, गृहस्थ जीवन पूर्णतः सुखी रहता है।

मेरे अनुभव

मुझे इस सम्बन्ध में विशेष और विचित्र अनुभव हुए हैं जो निम्न प्रकार से हैं—

१. नवमस्थ शुक्र शुभ फल ही देता है, ऐसा विभिन्न आचार्यों एवं विद्वानों का मत है, पर मेरी राय में कन्या, तुल, मकर, कुम्भ, वृष और मिथुन लग्न वाले जातक की कुण्डली में यदि नवमस्थ शुक्र होता है तो उसे शुभ फल नहीं मिलता।

२. धन संचय तो होता है पर कंजूस स्वभाव के कारण यह बहुत सोच विचार कर व्यय करता है।

३. भाग्योदय काफी संघर्षों के बाद होता है, और २४वें वर्ष के बाद से ही उन्नत भाग्य प्राप्त होता है।

४. ससुराल से धन मिलता है या पढ़ी-लिखी पत्नी मिलती है जो नौकरी करती है।

५. पत्नी सुन्दर सुशील होते हुए भी भोगी एवं किंचित् व्यभिचारी स्वभाव या प्रवृत्ति की होती है।

६. पत्नी के अतिरिक्त अन्य स्त्रियों की लालसा तो रहती है पर सम्पर्क-सम्बन्ध दृढ़ नहीं हो पाते।

७. पत्नी की मृत्यु के साथ ही भाग्य अवनति भी प्रारम्भ हो जाती है।

८. ललित कलाओं में निपुणता देता है, सिनेमा के दृष्टिकोण से ऐसा शुक्र ज्यादा लाभकारी एवं सहयोगी है।

९. यदि शुक्र गुरु साथ हो तो विजातीय विवाह या प्रेम विवाह की भी संभावनाएं रहती हैं।

१०. राजनीति क्षेत्र में यह शुक्र सफलता नहीं देता।

११. मन में सन्तोष रहता है।

जहां तक फिल्म जीवन का प्रश्न है नवम भाव में शुक्र रखने वाले श्रेष्ठ निर्देशक एवं अभिनेता होते हैं, फिल्म सम्बंधी योग कुछ इस प्रकार से भी हैं—

१. नवम भाव में शुक्र लग्नेश एवं भाग्येश हो तथा सूर्य से अस्त न हो तो व्यक्ति निश्चय ही अभिनेता बनकर ख्याति अर्जित करता है।

२. नवम भाव में चार पाप ग्रहों के साथ शुक्र हो तो व्यक्ति निस्संदेह निर्देशक बनता है।

३. नवम भाव में चन्द्र-शुक्र हो तो अभिनेता होने का प्रबल योग माना जाता है।

४. नवमस्थ शुक्र चार शुभ ग्रहों के साथ स्थित हो तब भी अभिनेता योग माना जाता है।

५. नवम भाव में शुक्र हो तथा तीसरे भाव में राहु मंगल हो, साथ ही लग्नेश प्रबल हो तो वह व्यक्ति अभिनेता बनकर सर्वश्रेष्ठ ख्याति अर्जित करता है।

दशम स्थान में शुक्र

जन्म कुण्डली के चार केन्द्रों में यह दशम भाव सर्वाधिक प्रबल एवं महत्त्वपूर्ण केन्द्र भाव है, इस भाव में शुक्र की उपस्थिति को भी अधिक महत्त्व दिया गया है। भारतीय एवं पाश्चात्य विद्वानों के मत इस सम्बन्ध में निम्न हैं—

वैद्यनाथ

दशम स्थान में यदि शुक्र होता है तो व्यक्ति स्त्रियों से धन प्राप्त करता है, कृषि कार्य में इसे लाभ रहता है तथा जीवन की अन्तिमावस्था में सन्यासी होता है।

कल्याण वर्मा

यह बुद्धिमान होने के साथ-साथ प्रबल तार्किक होता है, अपनी बात को बुद्धिमानी से मनवा देता है। भौतिक दृष्टि से यह व्यक्ति सुखी एवं सफल होता है।

वशिष्ठ

हर समय यह मानसिक परेशानियों से ग्रस्त रहता है तथा जीवन में कई बार विपत्तियां आकस्मिक रूप से आती हैं।

गुणाकर

यह अज्ञात आशंका से डरा-डरा सा रहता है पर आर्थिक दृष्टि से यह सफल होता है।

मंत्रेश्वर

इसके मित्रों की संख्या ज्यादा होती है स्वभाव से विनम्र, बातचीत में सरल, अपने कार्य में होशियार तथा दूसरों पर अपने व्यक्तित्व की छाप छोड़ने वाला होता है।

कालिदास

यह धनवान होता है तथा मनुष्य को भांपने की शक्ति इसमें विशेष रूप से होती है।

काशीनाथ

यह धार्मिक स्वभाव का व्यक्ति होता है तथा राज्य सेवा से विशेष लाभ उठाता है, आर्थिक दृष्टि से यह सुखी एवं सफल रहता है।

नारायण भट्ट

यह पाखण्डी होता है तथा अपने बारे में खूब बढ़-चढ़कर बोलता है, पुत्र सन्तति कम होती है या देरी से होती है।

जीवनाथ

यह सद् विवेकी, सद् विचारी एवं सरल स्वभाव का होता है, अपनी पत्नी पर पूर्ण प्रेम रखने वाला तथा नीति पर चलने वाला होता है।

घोलप

इसे कर्ण रोग रहता है, सुन्दर परिधान पहिनने का शौकीन यह जातक भाइयों की मदद करने वाला होता है, इसे हम पूर्ण भाग्यवान कह सकते हैं।

दण्डी

यह धार्मिक लक्षणों का होता है, राज्य से सम्मानित होता है तथा अपने परिवार पर पूर्ण प्रेम रखता है।

नवाब लखनऊ

यह आर्थिक दृष्टि से श्रेष्ठ, राज्य द्वारा सम्मानित पुरुष होता है या राज्य में उच्च पद पर स्थित होता है, पिता के प्रति यह पूर्ण श्रद्धा रखता है।

गोपाल रत्नाकर

इसे वाहन सुख पूर्ण मिलता है तथा अपने से बड़ों का आदर करता है, जहां तक शिक्षा का प्रश्न है इसे पूर्ण सफलता नहीं मिल पाती।

पाश्चात्य मत

विलियम

जीवन सुख पूर्वक व्यतीत करता है तथा पूर्ण भौतिक सुख एवं ऐश्वर्य प्राप्त होता है।

लिलि

नौकरी में इसे सम्मान मिलता है तथा यह अपने प्रयत्नों से श्रेष्ठ पद प्राप्त करता है, इसे अपने कार्यों से सम्मान एवं ख्याति प्राप्त होती है, इसका स्वभाव सरल, प्रसन्नचित्त एवं मधुर होता है।

टर्नर

ऐसे जातक का विवाह उच्चवंशीय या धनवान घराने की कन्या से होता है तथा लड़की सुन्दर सुशील, शिक्षित एवं सच्चरित्र होती है, इसका भाग्योदय भी ससुराल के सद्प्रयत्नों से होता है।

गफ्फार

यह ललित कलाओं में रुचि लेने वाला होता है तथा नृत्य संगीत वाद्य का इसे शौक होता है, इनका व्यवसाय भी यदि इन कलाओं से सम्बन्धित हो तो ज्यादा उत्तम रहता है।

प्रज

यह जीवन में सम्मानित होता है, नीतियुक्त बात कहता है तथा अधिकतर पक्षपात रहित रहता है।

मेरे अनुभव

१. दशमस्थ शुक्र शुभ फलदायक ही देखा गया है, पर यदि कोई पाप ग्रह इसके साथ हो जाता है, तो यह शुक्र अपना स्वतन्त्र व्यक्तित्व छोड़ उस ग्रह के अनुरूप हो जाता है।

२. दशमस्थ शुक्र पर सूर्य चन्द्रमा की दृष्टि धन देने वाली मानी गई है।

३. यदि दशमस्थ शुक्र के साथ बुध हो तो वाहन सुख में श्रेष्ठता आ जाती है।

४. मिथुन लग्न एवं मीन लग्न वालों की कुण्डली के लिए दशमस्थ शुक्र परेशानियाँ ही देता है ऐसा अनुभव रहा है।

५. अधिकतर वृत्ति अविवाहित रहने की होती है कोशिश यह रहती है, कि अपने पैरों पर खड़े होने के बाद ही विवाह करना श्रेयष्कर रहेगा।

६. सन्तान विलम्ब से होती है, या सन्तान के तथा जातक के विचारों में भारी असमानता रहती है।

७. विवाह एक से ज्यादा होते हैं।

८. माता-पिता के सुख में न्यूनता रहती है, तथा उसकी उन्नति स्वयं के प्रयत्नों से ही होती देखी गई है, उसे परिवार से या दूसरों से सहयोग कम ही मिलता है।

९. रूचि व्यवसाय की तरफ होती है, पर जबरन नौकरी करनी पड़ती है।

१०. ज्योतिष, दर्शन, ललित कला आदि कार्यों में रुचि रहती है, तथा लाभ भी उठाता है।

११. सिनेमा के क्षेत्र में डिस्ट्रीब्यूटर के रूप में ये सर्वाधिक सफल होते हैं।

१२. मशीनरी कार्यों से ये लाभ उठा सकते हैं।

१३. शुक्र के साथ बृहस्पति हो तो उस जातक की स्त्रियों के द्वारा बेइज्जती होती है, या उसे नारी की वजह से निन्दा का पात्र बनना पड़ता है।

१४. पर-स्त्रियों को प्रसन्न करने के लिए धन एवं समय दोनों का अपव्यय करते हैं।

१५. वृष लग्न हो तथा दशमस्थ शुक्र हो तो फलित ज्योतिष के क्षेत्र में सफलता प्राप्त करते हैं।

जहां तक फिल्म क्षेत्र का प्रश्न है, दशमस्थ शुक्र अत्यन्त सहायक है, इस प्रकार के व्यक्ति फिल्मी जीवन से यश मान प्रतिष्ठा एवं धन प्राप्त करते हैं।

१. दशम भाव में अकेला शुक्र हो तथा उस पर किसी भी ग्रह की दृष्टि न हो, तो वह व्यक्ति प्रयत्न करने पर सफल डिस्ट्रीब्यूटर सिद्ध होता है, तथा करोड़ों रुपये कमाता है।

२. दशम भाव में शुक्र के साथ राहु हो तो निःसन्देह वह निर्देशक बनता है, और योग्य निर्देशकों में उसकी गणना होती है, उसके जीवन में यश धन एवं भौतिक सुविधाओं की कमी नहीं रहती।

३. दशम भाव में शुक्र सूर्य एवं बुध के साथ हो तो संगीत निर्देशक बनता है, तथा पूर्ण वाहन सुख प्राप्त होता है।

४. दशमस्थ शुक्र के साथ मंगल या मंगल राहु की युति श्रेष्ठ

मानी गई है, फिल्म क्षेत्र में ऐसे जातक सफल निर्माता-निर्देशक होते हैं, तथा उच्चस्तरीय एवं बड़े बजट की फिल्में बनाकर यश लूटते हैं।

५. दशम भाव में शुक्र उच्च राशि का या स्वगृही हो तथा उस पर मंगल या राहु की दृष्टि हो तो वह व्यक्ति शुक्र में राहु या राहु में शुक्र की दशा अन्तर्दशा में डिस्ट्रीब्यूटर के रूप में श्रेष्ठ स्तरीय द्रव्योपार्जन करता है।

मुझे याद है दो वर्ष पूर्व की एक घटना। जयपुर नगर के ही एक सामान्य व्यापारी थे, और आर्थिक खींचतान चल रही था। उन की मिथुन लग्न की कुण्डली में शुक्र उच्च का दशम में था, और राहु चतुर्थ भाव में। दशा शुक्र में राहु प्रारम्भ हुई ही थी।

एक दिन बोले—डॉ० साहिब ! व्यापार तो किया, पर लक्ष्मी देखी नहीं, कोई मन्त्र बताओ या कोई ऐसी विधि बताओ, कि एक व्यापारी तो कहला सकूं ?

मैंने कहा—भाई, इस टेरीटरी में डिस्ट्रीब्यूट करने के लिए फिल्म खरीद लो, शायद लक्ष्मी इसी प्रकार से आने का उपक्रम कर रही है। उसे मुझ पर भरोसा था, अपनी सारी जमा पूँजी तथा ऊंचे व्याज की दर पर रकम लेकर एक प्रसिद्ध फिल्म खरीद ली, जो काफी समय लेकर बड़े बजट से बनी थी।

थियेटर में पिक्चर लगी, और दो तीन रोज में ही पिट गई, वह बोला तो नहीं, पर ऐसा हो गया जैसे किसी ने उसके शरीर का खून निचोड़ लिया हो, मेरे पास आये, मैं स्वयं अपने आपको अपराधी सा अनुभव करने लगा, पर मन के किसी कोने में यह विश्वास भी था, कि ज्योतिष, मेरी साधना, मेरा अध्ययन सब कुछ गलत नहीं हो सकता…हो नहीं सकता…।

मैंने कहा—असफलता तो सामने है, पर सफलता तुम्हें मिलेगी ही···आज से चार रोज बाद आना।

उसी दिन किसी घटना के घटित हो जाने से फिल्म का मुख्य पात्र चर्चा का विषय हो गया, लोगों की भावनायें एवं संवेदनाएं उस से सम्बन्धित हुई, और जनता वह फिल्म देखने को उमड़ पड़ी।

उस फिल्म ने उस थियेटर में जयन्ती मनाई, और उस डिस्ट्रीब्यूटर ने इतना कमाया, कि उसकी अगली दो तीन पीढ़ियों तक को परेशान होने की जरूरत नहीं रही।

मगर मेरा अनुभव यही रहा है, कि दशमस्थ शुक्र पहले असफलता देता है, और फिर तुरन्त ही असाधारण सफलता भी देता है।

एकादश भाव में शुक्र

आज के भौतिक इच्छा प्रधान व्यक्ति धन को ही जीवन का मूल जानते हैं, और धन का प्रतिनिधित्व करने वाला भाव जन्म कुण्डली में ग्यारहवां ही है, अतः इस भाव का सूक्ष्मता से अध्ययन अपेक्षित है।

एकादश भाव में स्थित शुक्र के बारे में विद्वानों ने विभिन्न मत व्यक्त किये हैं, जोकि निम्नलिखित हैं—

वशिष्ठ

एकादश भाव में बैठ कर शुक्र व्यक्ति को धनवान बनाते हैं, तथा विजयश्री उसके दरवाजे पर खड़ी रहती है।

गुणाकर

एकादस्थ शुक्र कन्या सन्तति ज्यादा देता है, तथा आर्थिक समृद्धि देता है, वह आय के एक ही स्रोत से सन्तुष्ट नहीं रहता, इसलिए उसे आय के कई स्रोत खोलने पड़ते हैं।

गर्ग

स्त्री इसे सुन्दर एवं सुशील मिलती है, तथा घर में भौतिक सुख पूर्ण प्राप्त होता है, घर में कई नौकर होते हैं।

कल्याण वर्मा

सुन्दर घर, सुशील पत्नी, एवं आज्ञाकारी भृत्य मिलते हैं, आजीविका के माध्यम एकाधिक होते हैं, स्त्रियों से धन मिलता है,

तथा खनिज मशीनरी, पत्थर, खान, दलाली आदि कार्यों से लाभ उठाते हैं।

श्रुत सेतु

यह भौतिक प्रकृति प्रधान सुखी एवं सम्पन्न जातक होता है।

वैद्यनाथ

इसका कार्य या व्यवसाय ऐसा होता है, जिसमें ज्यादा घूमना पड़े, या प्रवास में रहना पड़े, पराई स्त्रियों से इसके सम्बन्ध रहते हैं, ललित कलाओं में इसकी रुचि रहती है, आर्थिक दृष्टि से यह सम्पन्न होता है।

घोलप

यह जीवन में पूर्ण सुख भोग करता है तथा ऐश्वर्यशाली होता है।

काशीनाथ

इसे व्यर्थ की चिन्ता बनी रहती है, तथा प्रत्येक कार्य में यश एवं सम्मान मिलता है।

मंत्रेश्वर

यह भोगी, आशक्त एवं धनवान होता है, तथा प्रत्येक कार्य को चतुराई से निपटता है।

जयदेव

ललित कलाओं में इसकी रुचि होती है, तथा इससे सम्बन्धित ही व्यापार करे तो ज्यादा लाभप्रद स्थिति में रह सकता है।

लखनऊ नवाब

उच्चस्तरीय लोगों से इसका परिचय होता है, तथा धार्मिक रुचि बनी रहती है।

पाश्चात्य मत

विलियम

यह राज्य में उच्च पदाधिकारी होता है, इसका व्यक्तित्व आकर्षक एवं श्रेष्ठ होता है तथा दूसरों की भलाई करने वाला होता है।

लिलि

इसके मित्रों की संख्या ज्यादा होती है, तथा विवाह के बाद भाग्योदय होता है। फैंसी स्टोर, सौन्दर्य प्रसाधन के व्यवसाय आदि से ज्यादा लाभ उठा सकता है।

रोजर्स

इसके मित्र ज्यादा होते हैं।

गफ्फार

यह चालाक होता है, तथा लोगों को पहिचानने की इसमें अद्भुत क्षमता होती है।

प्रेज

यह व्यक्ति धनवान होता है, तथा रिश्वत आदि से भी श्रेष्ठ धन लाभ होता है, खर्च ज्यादा होता है।

मेरे अनुभव

भारतीय और पाश्चात्य सभी विद्वानों ने इस स्थान पर शुक्र की उपस्थिति को शुभ ही माना है।

१. यह धनवान होता है, पर व्यय भी बराबर बना रहता है, फिर भी इस पर कर्जा नहीं चढ़ता।

२. सुन्दर स्त्रियों के प्रति इसके मन में कोमल भावनायें रहती हैं।

३. विवाह के बाद भाग्योदय होता है, या ससुराल से धन लाभ

होता है ।

४. वृष और कुम्भ लग्न वालों के लिए एकादशस्थ शुक्र शुभ फल नहीं देता, ऐसा देखा गया है ।

५. मेषादि विषम लग्न वालों की कुण्डली में शुक्र ग्यारहवें हो तो कन्या संतति ज्यादा होती है ।

६. मिथुन, तुला, और कुम्भ लग्न वालों की कुण्डली में यदि शुक्र एकादश भाव में होता है, तो सन्तान सुख में क्षीणता रहती है ।

७. परिवार का सुख इसे तो कम मिलता है, पर यह परिवार की उन्नति के लिए व्यय करता रहता है ।

८. ये भ्रमण के शौकीन होते हैं, तथा ट्रेवेल-एजेन्ट के रूप में ज्यादा सफल होते हैं ।

९. स्त्रियों से सम्बन्धित सामग्री; फेन्सी स्टोर, सौन्दर्य प्रसाधन स्टोर आदि व्यापार में ज्यादा लाभ उठाते हैं ।

१०. पत्नी सुख बना रहता है ।

११. इनके व्यक्तित्व के चतुर्दिक्, भ्रमपूर्ण वातावरण बना रहता है, तथा ये स्वयं भी अपने व्यवहार एवं कार्यों से ऐसी स्थिति बनाने में योग देते हैं ।

१२. जीवन के ३४वें वर्ष से इनका भाग्योदय होता है ।

जहाँ तक फिल्म जीवन का प्रश्न है, एकादश शुक्र काफी सहायक होता है—

१. एकादश भाव में अकेला शुक्र हो तथा उस पर किसी भी पाप ग्रह की दृष्टि न हो तो वह चरित्र अभिनेता बनता है, तथा यश, धन एवं सम्मान प्राप्त करता है ।

२. एकादश भाव में शुक्र के साथ लग्नेश एवं भाग्येश हो तो

भी व्यक्ति फिल्म व्यवसाय में सफलता प्राप्त करता है ।

३. एकादश भाव में शुक्र-बुध की पूर्ण युति हो, तथा चन्द्रमा शुक्र से पीछे हो, तो भी व्यक्ति फिल्मी क्षेत्र में सफल होता है ।

४. एकादश भाव में शुक्र हो, तथा सूर्य, शुक्र से पीछे हो तो व्यक्ति अभिनय के क्षेत्र में पूर्ण सफलता प्राप्त करता है ।

५. एकादश भाव में शुक्र के साथ तीन पापग्रह या क्रूरग्रह हों तो जातक फाइनेंसर बनता है, तथा जीवन में लाभ उठाता है ।

द्वादश भाव में शुक्र

पूरी जन्म कुण्डली में शुक्र की सर्वोत्तम स्थिति द्वादश भाव में ही है, क्योंकि शुक्र भोग कारक ग्रह है, और द्वादश भाव भी भोग प्रधान भाव है, अतः भोग-भाव में भोग कारक ग्रह की स्थिति श्रेष्ठ फलदायक होती ही है, इसमें सन्देह नहीं ।

इस सम्बन्ध में भारतीय एवं पाश्चात्य विद्वानों के जो विचार हैं, उन्हें स्पष्ट कर रहा हूं—

गुणाकर

यह धनवान होता है, पर अट्ठाईसवें वर्ष तक अर्थ सम्बन्धी काफी परेशानियां उठानी पड़ती हैं ।

वशिष्ठ

जरूरत से ज्यादा खर्च करता है, तथा खर्च करने में इसे आनन्द आता है ।

गर्ग

यह परेशानियों से ग्रस्त रहता है, तथा एक न एक कठिनाई इसके सामने बनी ही रहती है।

वैद्यनाथ

इसे भाइयों का सुख नहीं मिलता, यह जो भी उन्नति करता है, अपने ही प्रयत्नों से करता है।

कल्याण वर्मा

यह काम क्रीड़ा में कुशल होता है, तथा परिश्रम से धन लाभ करता है।

कालिदास

इसका बचपन बड़ा ही कष्टमय बीतता है, पर सतत संघर्ष से यह विपरीत परिस्थितियों को अपने पक्ष में कर लेता है।

काशीनाथ

इसके मित्र कम ही होते हैं, पर जो होते हैं, उनके सुख दुःख में पूर्ण सहायक रहता है।

घोलप

यह अत्यन्त सावधान एवं भावुक होता है, ३२वें वर्ष में भाग्योदय होता है।

मन्त्रेश्वर

यह धनवान होता है, इसकी प्रत्येक बात से बुद्धिमत्ता टपकती है, तथा स्त्री का पूर्ण सुख इसे मिलता है।

हरिवंश

यह धनवान एवं सौन्दर्य प्रिय होता है। शत्रुओं को भी अपने पक्ष में करने की युक्ति इसे आती है।

लखनऊ नवाब

इसे क्रोध शीघ्रता से आता है, पर जितनी गति से आता है, उतनी ही त्वरता से उतर भी जाता है, दयालु, सहिष्णु एवं परोपकारी भी होता है।

नारायण भट्ट

बातचीत करने में चतुर एवं धनी होता है, व्यापार व्यवसाय से ही यह लाभ उठाता है, नौकरी से इसे अपेक्षाकृत कम लाभ होता है।

भण्डारे

यह नेत्र रोगी, कन्जूस तथा धनवान होता है, एवं परिश्रम से उन्नति करता है।

रत्नाकर

ज्ञानवान, गुणी एवं धनवान होता है, तथा दूसरों के सुख दुःख में सहायक होता है।

पाश्चात्य मत

पाश्चात्य विचारकों ने भी द्वादशस्थ शुक्र के बारे में अपने विचार प्रस्तुत किये हैं, उनमें से कुछ इस प्रकार हैं—

रोजर्स

यह भावुक होता है, काव्य संगीतादि का प्रेमी होता है, तथा जीवन की कठिन संघर्षमय घड़ियों में से गुजर कर खरा कुन्दन बन जाता है।

विलियम

इसका विवाह बचपन में हो जाता है, तथा पत्नी स्वाभिमानी एवं सुन्दर होती है, पर ससुराल से इसको किसी प्रकार की सहायता नहीं मिलती।

लिलि

इनके गुप्त सम्बन्ध होते हैं, और वे गुप्त ही रहते हैं, यदि शुक्र साथ शनि हो तो समाज में इन सम्बन्धों के कारण बदनाम होता है।

गफ्फार

नौकरी से इसको लाभ नहीं रहता, अपितु व्यापार से ये ज्यादा लाभ उठा सकते हैं। स्त्रियों से इनको किसी भी प्रकार का लाभ नहीं रहता।

ग्रेनर

ये सामाजिक उत्तरदायित्व को पूरी निष्ठा के साथ निभाते हैं, तथा पत्नी को पूर्ण गारिमा एवं सम्मान देते हैं, पर इतना होते हुए भी ये बन्धनों में बंधकर नहीं रह सकते।

प्रेग

यदि द्वादशस्थ शुक्र पर शनि की दृष्टि हो तो पत्नी सुख में न्यूनता रहती है, पर-स्त्री गमन होता है, एकाधिक विवाह होते हैं, तथा पत्नी सदैव रोगी रहती है।

मेरे अनुभव

यद्यपि भारतीय एवं पाश्चात्य विद्वानों ने दबी जबान से द्वादशस्थ शुक्र को अशुभ, दरिद्री एवं कमजोर माना है, पर मेरा अनुभव सर्वथा इससे विपरीत है, मेरी राय में द्वादशस्थ शुक्र अधिकतर सहयोग ही प्रदान करता है।

१. मकर और मेष लग्न वालों की कुण्डली में यदि द्वादशस्थ शुक्र होता है, तो वह विपरीत एवं अशुभ फल ही देता देखा गया है।

२. कुम्भ और मीन लग्न जातकों की कुण्डली में यदि बारहवें शुक्र हो तो पत्नी रोगिणी रहती है। तथा प्रदर, रक्त न्यूनता आदि की शिकायत ज्यादा रहती है।

३. ऐसे शुक्र के साथ यदि चन्द्र हो तो वह अत्यधिक कामी भोगी एवं स्वैच्छिक वृत्ति का बन जाता है।

४. ऐसे जातकों का विवाह बाल्यावस्था में ही हो जाता है।

५. मंगल या राहु के साथ ऐसा शुक्र हो तो भोगी, रोगी और समाज में बदनाम होता है।

६. ये नौकरी की अपेक्षा व्यवसाय में ज्यादा सफल होते हैं।

७. मानसिक अस्थिरता, स्वैच्छिकता उनमें बनी रहती है।

८. जीवन में पूर्ण सुख ऐश्वर्य कीर्ति एवं भोग प्राप्त कर सकता है, यदि द्वादशस्थ शुक्र स्वगृही हो या उच्च राशि का हो।

९. इनका नैतिक व्यवहार सराहनीय कहा जा सकता है।

१०. ये ललित कलाओं में ख्याति अर्जित करते हैं तथा संगीत, काव्य चित्रकला आदि के माध्यम से धन लाभ भी करते हैं।

११. इन व्यक्तियों को भाग्यवान कहा जा सकता है, बचपन इनका कष्ट, संत्रास एवं यंत्रणा में ही बीतता है, पर ३६वें वर्ष से बाद का समय अनुकूल श्रेष्ठ एवं उन्नति कारक होता है।

१२. शनि शुक्र के साथ होने से विजातीय विवाह या प्रेम विवाह भी होता देखा गया है।

जहां तक फिल्म जीवन का प्रश्न है द्वादशस्थ शुक्र अत्यन्त फलदायक एवं सहायक होता है।

१. यदि बारहवें भाव में शुक्र अकेला हो तथा उस पर किसी भी पाप ग्रह की दृष्टि न हो तो व्यक्ति फिल्म क्षेत्र में सफल कहानी लेखक होता है।

२. यदि शुक्र बुध साथ हो, तथा सूर्य से आगे शुक्र हो तो संवाद लेखन में ख्याति यश एवं द्रव्य अर्जन कर जीवन में सफल होता है।

३. द्वादश भाव में शुक्र चन्द्र का सम्बन्ध हो तो वह व्यभिचारी तो होता है, पर नायक के रूप में अद्वितीय सफलता प्राप्त करता है।

४. अकेला द्वादशस्थ शुक्र अनुकूल होता ही है और यदि यह शुक्र उच्च राशि का या स्वराशि का हो तो निःसन्देह वह फिल्म क्षेत्र से किसी न किसी प्रकार से सम्बन्धित रहता है, तथा वहाँ सम्माननीय दृष्टि से देखा जाता है।

५. शुक्र राहु यदि द्वादश भाव में हो तो व्यक्ति सफल साज सज्जा, कला विन्यास, हेयर स्पेलिस्ट, वस्त्र डिजाइन विशेषज्ञ आदि के रूप में फिल्म क्षेत्र में जाना जाता है, तथा यश, धन, मान एवं प्रतिष्ठा प्राप्त करता है।

६. यदि द्वादश भाव में शुक्र-मंगल का साथ हो तो जातक प्रयत्न करने पर खलनायक बनकर सफलता प्राप्त करता है, यद्यपि उसे कई बाधाओं का सामना करना पड़ता है।

यह स्पष्ट है, कि द्वादशस्थ शुक्र व्यक्ति के लिए फिल्म क्षेत्र में सफलता सूचक है, पर उसे प्रयत्न एवं संघर्ष करने पर ही सफलता प्राप्त होती है।



ज्योतिष और फिल्म

जैसा कि मैं पिछले पृष्ठों में कह चुका हूँ, कि फिल्म क्षेत्र में सफलता-असफलता आदि का अध्ययन करते समय शुक्र की स्थिति को विशेष रूप से देखना चाहिए, साथ ही यह भी ध्यान में रखना चाहिए, कि शुक्र किस भाव में है? उसके साथ और कौन-कौन से ग्रह हैं? शुक्र पर किन-किन ग्रहों की दृष्टियां हैं। पाप ग्रह, क्रूर ग्रह, सौम्य ग्रह आदि का भी सम्यक् अध्ययन करना चाहिए।

मेरा भारतीय फिल्म उद्योग से निकट का सम्पर्क रहा है, और इसकी प्रत्येक गतिविधि से परिचित रहा हूँ···फिल्म उद्योग में शायद ही कोई प्रसिद्ध अभिनेता अभिनेत्री, निर्देशक, निर्माता या संगीत निर्देशक होगा, जिनकी कुण्डली का मैंने अध्ययन न किया हो।

फिल्म जीवन का क्षण-क्षण अस्थायी है, परिवर्तित है, साल भर पहले का गुमनाम व्यक्ति आज चोटी का हीरो है, धन का अम्बार है उसके सामने, और देखते-देखते वह गुमनाम की अन्धेरी गलियों में समा जाता है, आज लाखों का स्वामी एक दो फिल्में फ्लाप होते ही रसातल में डूब जाता है।

फिल्म क्षेत्र का यह सिद्धान्त वाक्य है, कि फिल्मी क्षेत्र में रुपया सात फीट की ऊंचाई पर चक्कर लगाता रहता है, आदमी छः फीट का है, समझदारी से हाथ उठा दे, तो अपने आपको रुपयों के स्रोत में एडजेस्ट कर सकता है।

इन सभी कुण्डलियों में मैंने शुक्र की स्थिति को विशेष पाया, शुक्र की श्रेष्ठता ही फिल्मी क्षेत्र में श्रेष्ठता है, ऐसा मेरा मत है, फिर भी राहु, मंगल और सूर्य भी इस क्षेत्र में सफलता-असफलता देने में काफी सहायक रहते हैं, मगर वे सभी शुक्र से किसी न किसी रूप में सम्बन्धित रहते हैं।

अब मैं आगे के पृष्ठों में फिल्म क्षेत्र की विधा को लेकर उनसे सम्बन्धित ज्योतिष-योग स्पष्ट कर रहा हूं—

□ फिल्मी कहानी लेखक

मैंने फिल्मी कहानी लेखकों की कुण्डलियों का अध्ययन किया, तो यह जानकर अत्यन्त आश्चर्य हुआ कि उन सब में कई तथ्य एक से थे, अधिकतर निम्न ग्रह संयोगों से फिल्मी कहानी लेखक बनता है—

१. मेष या वृश्चिक लग्न हो, तथा लग्नेश मंगल छठे भाव में राहु के साथ हो।

२. शुक्र की स्थिति छठे या आठवें न हो, तथा मंगल राहु नवम भाव में हों।

३. शुक्र द्वादश भाव में हो, तथा मंगल चौथे भाव में हो तो इस क्षेत्र में सफलता प्राप्त करता है।

५. सप्तम भाव में चन्द्र मंगल साथ हो, पर चन्द्र नीच राशिगत न हो, और न क्षीण अवस्था में हो।

५. लग्न में राहु के साथ चन्द्रमा हो। मेष, मकर या वृश्चिक लग्न में राहु चन्द्र हो तो श्रेष्ठ स्तरीय ख्याति अर्जित करता है।

६. दूसरे भाव में शुक्र बुध सूर्य हो।

आगे एक विख्यात फिल्मी कहानी लेखक की कुण्डली दी जा



रही है, पाठक नियम संख्या पाँच देखें। वृश्चिक लग्न में चन्द्र राहु की पूर्ण युति है, और यह युति ही इन्हें श्रेष्ठ कहानी लेखक बना सकी है।

यही नहीं अपितु लग्नेश मंगल स्वराशिस्थ छठे भाव में होकर चन्द्र-राहु को पूर्ण बल प्रदान किया है, द्वादशस्थ शुक्र पूर्ण रूप से सहायक है ही। एक साधारण जीवन से उठकर उच्चस्तरीय धन यश एवं सम्मान देने में शुक्र, चन्द्र एवं राहु ने पूर्ण सहयोग दिया है, इसमें सन्देह नहीं।

□ पटकथा लेखक

पटकथा लेखकों की कुण्डलियों में भी अधिकतर वे ही योग हैं, जो कि फिल्मी कहानी लेखकों की जन्म कुण्डली में होते हैं, परन्तु कुछ तथ्य ऐसे भी हैं, जो इन दोनों के अन्तर को स्पष्ट करते हैं, नीचे पटकथा लेखक के ज्योतिषीय योग स्पष्ट कर रहा हूं—

१. शुक्र अकेला द्वादश भाव में हो, तथा सूर्य से ऐसा शुक्र आगे हो, तो व्यक्ति पटकथा लेखन में ख्याति अर्जित करता है।

२. शुक्र मंगल दोनों एकादश भाव में हों, तथा सूर्य बुध दशम स्थान में हों तो वह व्यक्ति निःसन्देह श्रेष्ठ पटकथा लेखक बनता है।

३. लग्न में चन्द्र-शुक्र हों, तो व्यक्ति पटकथा लेखन में मौलिक प्रयोग करता है, एवं सफल होता है।

४. गुरु पंचम भाव में हो तथा एकादश भाव में चन्द्रमा हो एवं शुक्र छठे या आठवें न हो तो पटकथा लेखन में वह ख्याति अर्जित करता है।

५. लग्न (वृष और तुला को छोड़कर) में गुरु हो, तथा उस पर किसी भी पाप ग्रह की दृष्टि न हो तो व्यक्ति पटकथा लेखन में सफलता प्राप्त कर धन यश एवं सम्मान अर्जित करता है।

□ संवाद लेखक

यह आवश्यक नहीं है, कि श्रेष्ठ पटकथा लेखक श्रेष्ठ संवाद लेखक भी हो जाए, निम्न योगों से सम्बन्धित जातक संवाद लेखन के क्षेत्र में सफल होते देखे गये हैं—

१. दूसरे भाव में बुध और शुक्र हो तो निःसन्देह जातक श्रेष्ठ संवाद लेखक के रूप में ख्याति अर्जित करता है।

२. यदि जन्म कुण्डली में एकादश भाव में सूर्य बुध हो तथा द्वादश भाव से शुक्र हो, तब भी व्यक्ति इस क्षेत्र में सफलता प्राप्त करते हैं।

३. अष्टम भाव में शुक्र बुध सूर्य हो तथा चन्द्रमा नवम भाव में हो, तो संवाद लेखक के रूप में श्रेष्ठ धनोपार्जन करता है।

४. चन्द्रमा और बुध कहीं एक साथ हों तथा सूर्य उच्च का हो तो व्यक्ति इस क्षेत्र में अतुलनीय ख्याति अर्जित करता है।

५. केन्द्र में (प्रथम चतुर्थ, सप्तम एवं दसम भाव) शुक्र, बुध और गुरु हों तो जातक संवाद लेखक के रूप में यशोभागी होता है, तथा इस माध्यम से धनी होता है।

□ गीतकार

भारतीय फिलमी गीतकारों एवं पाश्चात्य गीतकारों की तुलनात्मक जन्म कुण्डलियों का अध्ययन किया गया, तो अद्भुत समानतायें मिलीं। निम्न ग्रह स्थितियां एक सफल फिलमी गीतकार बनने के लिए सहायक होती हैं—

१. गुरु पंचम भाव में या चतुर्थ भाव में हो एवं शुक्र स्वगृही या उच्च का हो तो फिलम क्षेत्र में गीतकार के रूप में पूर्ण सफलता प्राप्त करता है।

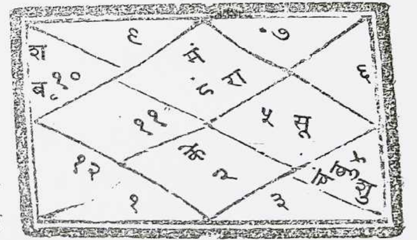
२. चतुर्थ भाव में शुक्र हो तथा चन्द्रमा छठे आठवें या बारहवें भाव में न हो।

३. नवम भाव में गुरु चन्द्र की युति हो, तथा शुक्र दूसरे भाव में हो।

४. लग्न में बुध हो एवं उसके साथ चन्द्रमा हो, तथा सप्तम भाव में मंगल विद्यमान हो तो एक सफल फिलमी गीतकार होता है।

५. शुक्र नवम भाव में चन्द्रमा एवं बुध के साथ हो तो विख्यात गीतकार होता है।

सम्बन्धित जन्म कुण्डली एक प्रसिद्ध फिलमी गीतकार की है, पाठक देखें कि नियम पांच इस में पूर्णतया लागू है।



नवम भाव में चन्द्रमा बुध एवं शुक्र तीनों ही विद्यमान हैं, यही नहीं अपितु चन्द्रमा स्वराशि का होकर इस संभावना को और उज्वल बना दिया है।

गीतकार के रूप में इसने उच्चस्तरीय द्रव्योपार्जन किया, आज इसके पास समस्त भौतिक सुख विद्यमान है, इसके बनाये गीतों ने धूम मचाई है, और जन मानस के कण्ठों में रमे हैं, उच्च कोटि का सम्मान इसके पास है, जनता का दुलार इसके पास है।

इसके अलावा भी मैंने कई कुण्डलियां देखी हैं, जिनमें उपर्युक्त पांच योगों में से कोई योग होने से वे फिल्म उद्योग में गीतकार के रूप में सफल हुए हैं।

□ फिल्म निर्देशक

पूरी फिल्म का दारमदार फ़िल्म निर्देशक पर ही होता है, फिल्म निर्देशक का काम जितना उलझन भरा है, उतना ही कठिन भी। भारतीय ज्योतिष अध्ययन अनुसन्धान केन्द्र के शोध विभाग ने लगभग पचास पचपन निर्देशकों की जन्म कुण्डलियों का अध्ययन कर जो निष्कर्ष प्राप्त किया, वह निम्न प्रकार है—

निम्न ग्रह संयोग होने पर व्यक्ति निश्चय ही फिल्म निर्देशन में सफलता प्राप्त करता है—

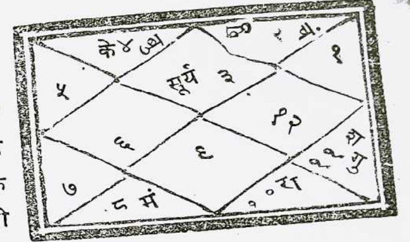
१. वृष, तुला, धनु, मीन और कर्क लग्न वाले अपेक्षाकृत इस क्षेत्र में ज्यादा सफल होते हैं।

२. गुरु और चन्द्रमा दोनों लग्न में हों तथा लग्नेश (वृष तुला लग्न न हो) त्रिकोण या केन्द्र में हो तो व्यक्ति निःसन्देह फिल्म क्षेत्र में निर्देशक बनता है।

३. यदि गुरु, चन्द्र सूर्य और लग्नेश चारों ही ग्रह धनु और मीन राशियों में हो तो व्यक्ति निर्देशक बनकर अतुलनीय ख्याति अर्जित करता है।

४. नवम भाव में गुरु हो, लग्न में सूर्य हो तथा पंचम भाव में चन्द्रमा हो तो व्यक्ति इस क्षेत्र में आदरणीय स्थान प्राप्त करता है।

५. शुक्र बारहवें भाग में हो, लग्न में सूर्य तथा दूसरे भाव में बुध हो तो व्यक्ति निर्देशक बनता है, एवं पूर्ण भौतिक सुख प्राप्त करता है।



सम्बन्धित जन्म कुण्डली एक प्रसिद्ध निर्देशक की है, जिसने कई फिल्में निर्देशित की हैं और उन फिल्मों ने रजत जयन्तियां मनाई हैं। पाठक नियम संख्या पांच इस कुण्डली में देख सकते हैं।

□ सह निर्देशक

सह निर्देशक के लिए भी वही ज्योतिषीय योग होते हैं, जो कि फिल्म निर्देशक के होते हैं, हां, लग्नेश- यदि क्षीणांश में होता है, तो वह निर्देशक बन ही नहीं पाता, उम्र भर सह निर्देशक ही रहता है।

□ संगीत निर्देशक

संगीत निर्देशक फिल्म का प्राण होता है, अयोग्य संगीत निर्देशक के कारण जहां अच्छे से अच्छे गीत की हत्या हो जाती है, वहाँ फिल्म भी पिट जाती है।

निम्न ग्रह स्थितियों के फलस्वरूप ही व्यक्ति संगीत निर्देशक बनता है।

१. दूसरे भाव में बुध और शुक्र हो तो व्यक्ति फिल्म क्षेत्र में संगीत निर्देशक बनता है।

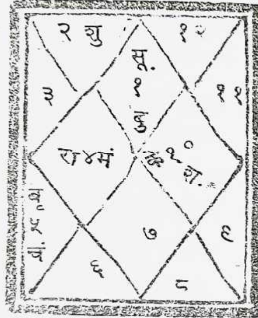
२. दूसरे भाव में शुक्र हो, चौथे भाव में मंगल एवं राहु हो तथा सूर्य स्वराशिस्थ या उच्च राशिस्थ हो तो व्यक्ति सफल संगीत निर्देशक बनता है।

३. नवम भाव में शुक्र चन्द्रमा हो तथा भाग्येश की इन ग्रहों पर दृष्टि हो तो व्यक्ति एक सफल संगीत निर्देशक बनता है।

४. भाग्येश-लग्नेश कहीं पर भी साथ हो तथा केन्द्र में अथवा

मंगल की राशियों पर राहु मंगल हो तो संगीत निर्देशक बनकर पूर्ण यशो लाभ करता है ।

४. लग्न में गुरु हो, तथा कुण्डली में तीन ग्रह नीच राशिस्थ हों तो व्यक्ति सफल संगीत निर्देशक बनता है, एवं ख्याति अर्जित करता है ।



सम्बन्धित जन्म कुण्डली एक सफल संगीत निर्देशक है, जिसका पिछले बीस बर्षों से फिल्म जगत पर एकछत्र राज्य रहा है, और आज भी वह इस क्षेत्र में अग्रणी है, पाठक स्वयं देखें, कि नियम संख्या दो इस कुण्डली में पूर्ण रूप से घटित है. सूर्य उच्च राशि मेष में है, दूसरे भाव में शुक्र है, तथा चतुर्थ भाव में राहु-मंगल की पूर्ण युति है ।

उपर्युक्त योग तो इन्हें सफल संगीत निर्देशक बना ही सके हैं, पर साथ ही भाग्येश की भाग्य भाव पर पूर्ण दृष्टि तथा आयेश का केन्द्र में होना भी स्थायित्व प्रदान करने में समर्थ है ।

□ संगीतज्ञ

संगीतज्ञ वही सफल हो सकता है, जो गीत की टेकनिक समझता हो, उसके आरोह अवरोह तथा मर्म को पहचानता हो, साथ ही उसे इसका भी ज्ञान होना चाहिए, कि किस सिच्युएशन को उभारने के लिए कहां क्या प्रयोग करना है ।

निम्न ज्योतिष योग रखने वाले फिल्म क्षेत्र में सफल संगीतज्ञ होते देखे गये हैं—

१०. चतुर्थ भाव में शुक्र हो, तथा बुध उसे देखता हो, या दूसरे भाव का स्वामी उसके साथ हो ।

२. दूसरे भाव में शुक्र बुध की निर्मल युति हो, तथा उन पर किसी भी पाप ग्रह की दृष्टि न हो ।

३. लग्नेश-द्वितियेश कहीं पर भी एक साथ बैठे हों, तथा शुक्र छठे, आठवें, तीसरे न हो ।

४. दूसरे भाव में तीन सौम्य ग्रह हों ।

५. बुध का द्वितियेश एवं भाग्येश से सम्बन्ध हो, तथा लग्नेश शुभ हो ।

६. लग्न में गुरु हो, केन्द्र में शुक्र एवं बुध हो तथा दूसरे भाव में न तो कोई पाप ग्रह हो और न किसी पाप ग्रह की दृष्टि हो ।

बुध की महादशा अन्तर्दशा, द्वितियेश की दशा अन्तर्दशा इनके भाग्योन्नति में प्रबल सहायक होती है ।

□ पार्श्व गायक

सामान्य से सामान्य गाने को भी चमकदार एवं मधुर बनाया जा सकता है, बशर्ते पार्श्व गायक श्रेष्ठ हो, उसके गले की लोच ही गायन की आत्मा होती है । निम्न ग्रह स्थितियां होने पर पुरुष या स्त्री पार्श्व गायक बनती है ।

१. लग्न में शुक्र एवं चन्द्रमा हो तो व्यक्ति सफल पार्श्व गायक बनता है ।

२. लग्न में गुरु हो, तथा द्वितियेश पर ऐसे गुरु की दृष्टि हो व्यक्ति निःसन्देह पार्श्व गायक बनकर ख्याति अर्जित करता है ।

३. शुक्र केन्द्र में हो तथा सूर्य मंगल की कहीं भी युति हो तो व्यक्ति पार्श्व गायक बनता है ।

४. चन्द्रमा स्वराशिस्थ या उच्च राशिस्थ हो, तथा मंगल की राशियों पर भाग्येश बैठा हो, तो व्यक्ति इस क्षेत्र में श्रेष्ठ सम्मान प्राप्त करता है ।

५. लग्न में बुध हो, दूसरे भाव में सूर्य शुक्र हों, तथा भाग्येश की लग्न पर दृष्टि हो तो व्यक्ति इस क्षेत्र में श्रेष्ठ, धन सम्मान एवं पद प्राप्त करता है।

६. शुक्र मंगल की राशि में होकर केन्द्र में हो, तथा मंगल उच्च राशि का या स्वराशि का हो तो प्रयत्न करने पर वह इस क्षेत्र में सफलता प्राप्त कर सकता है।

□ नर्तक-नर्तकी

फिल्म के दो मुख्य आकर्षण होते हैं संगीत एवं नृत्य ! नृत्य··· केवल नृत्य के बल पर ही कई सुन्दरियां अपना विशिष्ट स्थान बनाये हुए हैं।

निम्न ग्रह संयोग रखने वाले जातक फिल्म क्षेत्र में सफल नर्तक सिद्ध होते हैं—

१. दशम भाव में शुक्र राहु का पूर्ण सम्बन्ध हो तथा द्वादशेश केन्द्र में हो।

२. द्वादशेश स्वगृही या उच्च का होकर मंगल या राहु के साथ हो।

३. नवमेश, दशमेश और एकादशेश तीनों साथ हों तथा इन पर लग्नेश की दृष्टि हो।

४. नवमेश द्वादशेश का स्थान परिवर्तन हो, तथा दशमेश लग्नेश का स्थान परिवर्तन हो।

५. लग्न में लग्नेश राहु मंगल एवं द्वादशेश के साथ बैठा हो।

□ समूह नर्तक

समूह नर्तक में भी वे ही ग्रह संयोग स्पष्ट होते हैं, जो नर्तकी के लिए ग्रह संयोग होते हैं, हां, यदि लग्नेश क्षीणांश में हो तो वह सामान्य नर्तक या नर्तकी मात्र बनकर रह जाता है।

◆नृत्य निर्देशक

नृत्य निर्देशक ऐसा व्यक्ति होता है, जिसे घुंघरू की एक एक खनक का ज्ञान होता है, निम्न ग्रह संयोगों से व्यक्ति सफल नृत्य निदशक सिद्ध होता है—

१. दशम भाव में शुक्र राहु मंगल हो, तो व्यक्ति श्रेष्ठ नृत्य निर्देशक सिद्ध होता है।

२. बारहवें भाव का स्वामी सूर्य मंगल राहु के साथ बारहवें भाव में ही हो।

३. भाग्येश लग्नेश दोनों नवम भाव में हों तथा इन पर गुरु की दृष्टि हो।

४. शुक्र के साथ कहीं पर भी मंगल राहु एवं चन्द्र हो।

५. चन्द्र राहु साथ हों, तथा मंगल-गुरु साथ होकर कहीं पर भी बैठे हों, साथ ही लग्नेश प्रबल हो तो व्यक्ति निःसन्देह सफल नृत्य निर्देशक सिद्ध होता है।

◆सहायक नृत्य निर्देशक

सहायक नृत्य निर्देशक के लिए भी वे ही ग्रह संयोग हैं, जो नृत्य निर्देशक के लिए हैं, हां, भाग्येश या लग्नेश कमजोर होने पर सहायक नृत्य निर्देशक बनकर ही सन्तोष करना पड़ता है।

◆कला निर्देशक

कला निर्देशक के लिए निम्न ग्रह संयोग उत्तरदायी है—

१. लग्न में चन्द्र-गुरु हों, तथा सप्तम भाव में शुक्र हो।

२. नवम भाव में चन्द्रमा हो, पंचम भाव में गुरु हो, तथा केन्द्र में शुक्र हो।

३. शुक्र चन्द्र साथ में हों, तथा उन पर किसी भी पाप ग्रह की या क्रूर ग्रह की दृष्टि न हो।

४. शुक्र स्वगृही या उच्च राशि का होकर केन्द्र या त्रिकोण में हो, तथा उस पर चन्द्रमा की निर्मल दृष्टि हो।

५. चन्द्र गुरु सूर्य तीनों केन्द्र में हों, तथा शुक्र व्यय भाव में हो।

मार पीट निर्देशक

मार पीट निर्देशक के लिए निम्न ग्रह संयोग विचारणीय है—

१. लग्न में राहु-मंगल हो।

२. तीन पाप ग्रह केन्द्र में हों।

३. मंगल, शुक्र एवं राहु कहीं पर भी एक साथ हो तथा सूर्य छठे आठवें नहीं हो।

४. सूर्य राहु साथ हो तथा मंगल की उस पर पूर्ण दृष्टि हो।

५. मंगल उच्च का होकर केन्द्र में हो तथा राहु त्रिकोण में हो।

छायाकार

एक मनोहर पिक्चर के लिए छायाकार प्रमुख हस्ती है, अच्छे से अच्छे नायक-नायिका की 'इमेज' को वह धूमिल कर सकता है, और हल्के से व्यक्तित्व वाले नायक नायिका को भी वह सुन्दर ढंग से उभार सकता है।

एक सफल छायाकार की जन्म कुण्डली में निम्न संयोग देखे जा सकते है—

१. चन्द्रमा उच्च का या स्वराशिस्थ होकर त्रिकोण में हो।

२. चन्द्र शुक्र का सम्बन्ध कहीं पर भी हो, और उस पर राहु की पूर्ण दृष्टि हो।

३. स्वराशिस्थ चन्द्रमा के साथ केतु हो।

४. चन्द्र-राहु साथ में कहीं पर हों, शुक्र केन्द्र भाव में हो, तो सफल छायाकार बन सकता है।

५. चन्द्र-राहु-मंगल का पूर्ण सम्बन्ध केन्द्र या त्रिकोण में हो।

सह छायाकार

सह छायाकार के लिए भी वे ही ग्रह स्थितियां देखी जाती हैं, जो कि छायाकार के लिए हैं।

स्थिर चित्र छायाकार

फिल्म निर्माण करते समय प्रेस पब्लिसिटी और अन्य कई कारणों से स्थिर चित्र छायाकार की जरूरत बनी रहती है, इसके लिए भी वे ही ग्रह स्थितियां उत्तरदायी हैं, जो कि सफल छायाकार के लिए हैं।

साउण्ड रिकार्डिस्ट

साउण्ड रिकार्डिस्ट का योगदान फिल्म के लिए महत्वपूर्ण है, यह पूरे चित्र में इफेक्ट लाने के लिए साउण्ड रिकार्ड करता है, गलत साउण्ड से पूरे चित्र का प्रभाव धूमिल पड़ जाता है, इसलिए साउण्ड रिकार्डिस्ट की अपनी महत्ता है।

ग्रह स्थितियों के अनुसार साउण्ड रिकार्डिस्ट की जन्म कुण्डली में निम्न योग शास्त्र सम्मत हैं—

१. राहु लग्न में बैठा हो, तथा उस पर किसी भी सौम्य ग्रह की दृष्टि न हो।

२. राहु-सूर्य दूसरे भाव में हों, तथा इन पर किसी भी अन्य ग्रह की दृष्टि न हो।

३. राहु चतुर्थ भाव में शुक्र-मंगल के साथ हो।

४. राहु-चन्द्र-सूर्य नवम भाव में हों।

५. लग्न में राहु, पंचम भाव में चन्द्रमा तथा नवम भाव में सूर्य हो।

६. राहु-मंगल कहीं पर भी बैठे हों, तथा इन पर चन्द्रमा की पूर्ण दृष्टि हो।

रि-रिकार्डिंग स्पेशियलिस्ट

इसके लिए भी वे ही ग्रह महत्वपूर्ण हैं, जो कि साउण्ड रिकार्डिस्ट के लिए जरूरी हैं।

विशेष प्रभाव विशेषज्ञ

जहां तक मैं समझता हूं, फिल्म निर्माण में यह कार्य सर्वाधिक कठिन एवं बुद्धि का है, साधारण बुद्धि का व्यक्ति इसमें सफल नहीं हो सकता।

भूकम्प के दृश्य, तेजी से खड्ड में गिरती हुई कार का दृश्य, और ऐसे कई दृश्य होते हैं, जो हमें रोमांचित कर देते हैं, और यह सब

प्रभाव इन्हीं विशेषज्ञों का है।

निम्न ग्रह स्थितियाँ इस प्रकार के व्यक्तियों की कुण्डलियों में पाई जाती हैं—

१. मंगल शनि गुरु एक साथ केन्द्र में हों।

२. चन्द्र-केतु-सूर्य अष्टम भाव में हों।

३. षष्ठ भाव में सूर्य मंगल शुक्र हों।

४. चन्द्र-गुरु-बुध बारहवें भाव में हों।

५. पांच या छः ग्रह एक साथ कुण्डली के किसी भी भाव में बैठे हों।

मेकअप मेन

मेकअप मेन की उंगलियों का जादू जब मैं देखता हूं, तो आश्चर्य चकित हो जाता हूं, भले चंगे स्वस्थ तरुण व्यक्ति का चेहरा ऐसा बना देते हैं मानो अस्सी वर्ष का विगलित वृद्ध हो, जिसकी झुर्री एक एक करके गिन सकते हैं।

वे वृद्ध को तरुण, सौम्य सुन्दर व्यक्ति को भयंकर, और कुरूप लड़की को रंभा उर्वसी बना देने की क्षमता रखते हैं। निम्न ग्रह स्थितियों से व्यक्ति मेकअप मेन बनता है—

१. शुक्र लग्न में हो, तथा चन्द्रमा सप्तम भाव में हो।

२. स्वराशि का या उच्च राशि का शुक्र केन्द्र में हो।

३. शुक्र-चन्द्र साथ में हो, तथा उस पर मंगल की पूर्ण दृष्टि हो।

४. शुक्र चन्द्र मंगल साथ हों।

५. छठे भाव में तीन पाप ग्रह हों।

६. शुक्र द्वादश भाव में हो, एकादश भाव में चन्द्रमा हो, तथा केन्द्र में बृहस्पति या मंगल हो।

केश विन्यासक

आज की तरुण पीढ़ी नायक नायिका की ड्रेस और 'हेयर स्टाइल' की तुरन्त नकल करते हैं, और अपनी केश सज्जा भी इसी प्रकार करते हैं।

फिल्म में 'हेयर स्पिसियलिस्ट' अलग से होते हैं, जो बालों के सम्बन्ध में, जूड़े बाँधने आदि में नये नये स्टाइल निकालते रहते हैं। निम्न ग्रह स्थितियां रखने वाले इस क्षेत्र में सफल हो सकते हैं।

१. बुध-शुक्र केन्द्र में हों, या त्रिकोण में हों।

२. बुध-राहु-मंगल एक साथ कहीं पर भी स्थित हों।

३. बुध-चन्द्र एक साथ हों, तथा उस पर राहु की पूर्ण दृष्टि हो।

४. चन्द्र-केतु-मंगल लग्न में हों।

५. चन्द्र लग्न में, बुध त्रिकोण में तथा शुक्र सप्तम भाव में हो।

ड्रेस स्पिसियलिस्ट

केश विन्यास की तरह ही वस्त्र विशेषज्ञ भी होते हैं, जो कपड़ों की बनावट के नये-नये तरीके सोचते रहते हैं, निम्न ग्रह स्थितियाँ इसके लिए उत्तरदायी हैं—

१. शुक्र चन्द्रमा साथ में कहीं पर हों, तथा उन पर मंगल की दृष्टि हो।

२. शुक्र सूर्य साथ में केन्द्र में हों।

३. शुक्र, सूर्य तथा चन्द्रमा केन्द्र में हों।

४. शुक्र का राहु से सम्बन्ध हो।

५. शुक्र अकेला लग्न में हो, तथा उस पर किसी भी पाप ग्रह की दृष्टि न हो, तो व्यक्ति निःसन्देह ड्रेस स्पिसियलिस्ट बनता है।

स्टूडियो प्रबन्धक

फिलम बनाने के लिए स्टूडियो किराये पर लिया जाता है, स्टूडियो में विभिन्न सेट होते हैं प्रकाश व्यवस्था, ध्वनि व्यवस्था आदि सैंकड़ों तकनीकी कार्य होते हैं, इन सबका जो नियन्त्रण करता है, उसे स्टूडियो प्रबन्धक कहते हैं।

मेरे अनुभव में निम्न ग्रह स्थितियां आई हैं, जो स्टूडियो प्रबन्धक बनाने में सहायक होती हैं—

१. शुक्र द्वादश भाव में हो, भाग्येश नवम भाव में हो, तथा लग्नेश बली हो।

२. लग्नेश-भाग्येश-पराक्रमेश का परस्पर सम्बन्ध हो।

३. शुक्र राहु साथ हो तथा चन्द्र केतु इनसे सर्वथा विपरीत हों।

४. शुक्र राहु छठे या आठवें भाव में हों, तथा इन पर किसी पाप ग्रह की दृष्टि हो।

५. चार ग्रह उच्च के हों।

निर्माण-नियन्त्रक

प्रत्येक फिल्म लाखों में बनती है, और अब तो कई फिल्म करोड़ों की मद तक पहुंचने लगी हैं, इतने बड़े बजट को नियन्त्रित करना मामूली काम नहीं, इस बजट को जो नियन्त्रित करता है, और यह ध्यान रखता है, कि किस मद में कितना व्यय हो, किस प्रकार से व्यय हो, उसे निर्माण नियन्त्रक कहते हैं।

निम्न ग्रह स्थितियों से सम्पन्न व्यक्ति निर्माण नियन्त्रक बनते देखे गये हैं—

१. बुध-राहु परस्पर आमने सामने हों।

२. स्व राशि का या उच्च राशि का बुध हो, केन्द्र में हो, तथा केतु उसके साथ हो।

३. बुध-शनि-मंगल कहीं पर भी साथ में हों।

४. बुध राहु शनि-मंगल का परस्पर दृष्टि सम्बन्ध हो।

५. एकादशेश, द्वितियेश तथा पराक्रमेश का परस्पर सम्बन्ध हो, तथा लग्नेश-भाग्येश का परस्पर सम्बन्ध हो।

निर्माण प्रबन्धक

यह निर्माण नियंत्रक को सहायता देता है, तथा कर्मचारियों का हिसाब, बिजली सेट आदि के वाउचर आदि को व्यस्थित करता है।

निर्माण प्रबन्धक के लिए भी वे ही ग्रह स्थितियां प्रभावशाली हैं, जो कि निर्माण-नियंत्रक के लिए हैं।

एकाउन्टेन्ट

फिल्म के व्यय का जो हिसाब रखता है, वाउचर मिलान करता है, तथा पूरा हिसाब किताब व्यवस्थित करता है, उसे एकाउन्टेन्ट कहते हैं।

जहां तक मेरा अनुभव है, वे ही ग्रह स्थितियां इस पद को दिलाने में सहायक होती हैं, जो निर्माण नियंत्रक की ग्रह स्थितियां हैं।

जब ग्रह क्षीणांश में होते हैं, तब व्यक्ति निर्माण नियंत्रक न होकर निर्माण प्रबन्धक या एकाउन्टेन्ट बन जाता है।

निर्माता

फिल्म की रीढ़ ही निर्माता होता है, पैसा लगाने से व्यवस्था करने और बेचने तक का उत्तरदायित्व उसे वहन करना पड़ता है, फिल्म सफल हुई, चली तो उसके भाग्य और दर्शकों ने पसन्द नहीं की, डूब गई तो उसकी किस्मत। अतः निर्माता अत्यन्त होशियार बुद्धिमान और चतुर होता है।

कई निर्माताओं से मेरे घरेलू सम्बन्ध हैं, उनकी तथा उनके परिवार की जन्म पत्रिकाएं दी हैं उन्हें राय दी है, और वे सफल भी हुए हैं।

मेरे अनुभव में निम्न ग्रह संयोग रखने वाले व्यक्ति सफल निर्माता होते हैं—

१. लाभेश धन स्थान में हो, और धनेश लाभ स्थान में हो।

२. भाग्येश स्वराशिस्थ हो, तथा भाग्य भाव पर धनेश की दृष्टि हो।

३. भाग्येश लाभ स्थान में हो, तथा लाभेश की धनेश पर या धन स्थान पर दृष्टि हो।

४. भाग्येश उच्च का हो, एवं लग्नेश भी स्वराशिस्थ अथवा उच्च राशिस्थ हो ।

५. भाग्येश, आयेश, लग्नेश, धनेश एक स्थान पर हों ।

६. भाग्येश, धनेश, लाभेश का परस्पर दृष्टि सम्बन्ध हो ।

७. लग्नेश भाग्य भाव में, भाग्येश लग्न भाव में हो तथा शुक्र लग्न में हो ।

८. शुक्र बारहवें हो, तथा लग्नेश उच्च का हो ।

९. शुक्र, लग्नेश, धनेश, भाग्येश एवं लाभेश एक साथ स्थित हों ।

☐ वितरक

फिल्म निर्माता से फिल्म लीज़ पर लेकर जो प्रदर्शित करने की व्यवस्था करता है, उसे वितरक कहा जाता है ।

सफल फिल्म वितरक के लिए निम्न ग्रह स्थितियाँ उत्तरदायी हैं—

१. शुक्र राहु साथ में हों ।
२. शुक्र उच्च का या स्वराशिस्थ होकर केन्द्र में हो ।
३. शुक्र का भाग्येश से पूर्ण सम्बन्ध हो ।
४. राहु लग्न में हो ।
५. भाग्येश-राहु एक स्थान पर हो ।
६. राहु चन्द्र भाग्य भाव में हों ।
७. चन्द्र-धनेश व भाग्येश का परस्पर सम्बन्ध हो ।
८. मंगल राहु लग्न में या त्रिकोण में स्थित हों ।
९. राहु चन्द्र एवं लग्नेश एक स्थान पर हों ।
१०. शुक्र त्रिकोण केन्द्र का स्वामी होकर उच्च राशि में स्थित हो ।
११. भाग्येश-धनेश का परस्पर अन्योन्याश्रय सम्बन्ध हो ।
१२. लग्नेश प्रबल हो, तथा पराक्रमेश से पूर्ण सम्बन्ध स्थापित करता हो ।

◆फाइनेन्सर

फाइनेन्सर के लिए भी वे ही ग्रह संयोग देखे गये हैं, जो कि निर्माता के हैं ।

◆प्रचार-अधिकारी

आज का युग पूर्णतः प्रचार का युग है, मामूली से मामूली वस्तु के प्रचार मद में लाखों रुपयों का बजट रखा जाता है, फिर फिल्म पर तो लाखों करोड़ों खर्च होते हैं, अतः उसके प्रचार के लिए अलग से अधिकारी होते हैं, जो सिनेमा-स्लाइड्स से, रेडियो से, पत्र पत्रिकाओं और बैनर आदि के माध्यम से प्रचार करता है ।

प्रचार अधिकारी की कुण्डली में निम्न ग्रह स्थितियां देखी जा सकती हैं—

१. राहु उच्च का होकर सूर्य के साथ हो ।
२. राहु-चन्द्र दोनों ही नीच राशि में हों ।
३. चन्द्र-राहु साथ हों, तथा शुक्र सप्तम में हो ।
४. शुक्र एकादश भाव में उच्च का हो ।
५. शुक्र सूर्य साथ हों तथा चन्द्र मंगल की युति हो ।

◆निजी प्रचारक

प्रत्येक निर्माता, हीरो हीरोइन आदि अपने निजी प्रचारक भी रखते हैं, जो सम्बन्धित व्यक्ति या फिल्म का प्रचार करते हैं, तथा उनका सम्बन्ध दूसरों से स्थापित कराने में सहायता देते हैं ।

ज्योतिषीय दृष्टि से निजी प्रचारकों के लिए भी वे ही ग्रह स्थितियां उत्तरदायी हैं, जो प्रचार अधिकारी की कुण्डली में होती हैं ।

◆फिल्मी पत्रकार

फिल्मी पत्रकार फिल्म की प्रगति, उसकी विशेषता, हीरो-हीरोइन की अन्दरूनी बातें आदि जानकारी पत्र पत्रिकाओं के माध्यम से पाठकों तक पहुंचाता है ।

फिल्म पत्रकार निम्न ग्रह संयोगों के फलस्वरूप बनते हैं—

१. शुक्र बलवान हो, स्वगृही या उच्च का हो तथा केन्द्र या त्रिकोण में हो।

२. शुक्र चन्द्रमा का सम्बन्ध हो।

३. शुक्र-सूर्य की परस्पर पूर्ण दृष्टि हो।

४. गुरु त्रिकोण या केन्द्र में हो।

५. गुरु और शुक्र दोनों केन्द्र या त्रिकोण में हों।

६. शुक्र बारहवें हो।

७. चन्द्रमा-शुक्र की परस्पर दृष्टि हो।

८. सूर्य उच्च का हो, तथा उस पर भाग्येश की दृष्टि हो।

९. गुरु उच्च का हो।

नायक अथवा नायिका

फिल्म का सर्व प्रमुख आकर्षण हीरो अथवा हीरोइन होती है, और आजकल फिल्म इनके नाम से ही बिकती और चलती है। आज की अधिकांश नई पीढ़ी जो मेरे पास आती है, उसमें से अधिकांश का यह तो प्रश्न होता ही है, कि क्या मैं हीरो या हीरोइन बन सकती हूँ—

अधिकांश पत्र ऐसे भी आते हैं, जिनमें यह अनुरोध होता है, कि मैं उनके लिए किसी निर्माता या निर्देशक को कहूं, या उनसे मिलवा दूं।

हीरो या हीरोइन की जन्म कुण्डलियों में निम्न ग्रह संयोग देखे जा सकते हैं—

१. लग्न में शुक्र स्वराशि या उच्च राशि का हो, तथा राहु मंगल का परस्पर दृष्टि सम्बन्ध हो।

२. राहु-चन्द्र साथ हो, तथा लग्नेश के साथ सूर्य शुक्र हों।

३. शुक्र बुध साथ हों, पर शुक्र स्वराशिस्थ या उच्च राशिस्थ हो, एवं लग्नेश केन्द्र में हो।

४. चन्द्र राहु लग्न में हों, तथा शुक्र स्वराशि या उच्च राशि का होकर केन्द्र में हो।

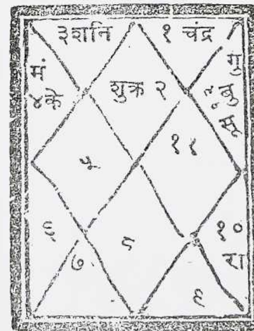
५. शुक्र द्वादश भाव में मंगल के साथ हो, तथा लग्नेश लग्न में हो।

६. लग्न में राहु-शुक्र हों, तथा लग्नेश केन्द्र में रहकर चन्द्रमा से सम्बन्ध स्थापित करता हो।

इनके अतिरिक्त भी कुछ योग सफल नायक बनाने में सहायक होते हैं।

अब मैं इस सम्बन्ध में कुछ उदाहरण दूं—

ग्रेगरी पैक हॉलीवुड के विख्यात अभिनेता हैं जो अभिनय के बल पर पूरे विश्व में जाने जाते हैं—



संबंधित जन्म कुण्डली ग्रेगरी पैक की है, जिनका जन्म ५ अप्रैल १९१६ को केलिफोर्निया में आठ बजकर ग्यारह मिनट पर हुआ। पाठक इस कुण्डली में ऊपर बताये ग्रह संयोगों में से नंबर एक देखें। लग्न में शुक्र स्वराशिस्थ है, तथा राहु नवम भाव में बैठकर तीसरे भाव में बैठे मंगल से पूर्ण दृष्टि सम्बन्ध स्थापित कर रहा है। शुक्र की ही दशा में सन् १९६२ में इन्होंने ऑस्कर पुरस्कार जीत कर अपने अभिनय पर प्रामाणिकता की मुहर लगाई।

आज के बहुचर्चित और अभिनय के क्षेत्र में सर्वोपरि नायक की

यह जन्मकुण्डली भी विचारणीय है, जिसने तुरत-फुरत विवाह कर फिल्म इण्डस्ट्री में सनसनी पैदा कर दी थी।



नियम संख्या दो इसमें देखी जा सकती है, लग्नेश के साथ सूर्य शुक्र केन्द्र में हैं तथा चन्द्र राहु दोनों एक स्थान पर हैं।

एक सामान्य स्तर से जिस क्षमता पूर्वक यह जन्म-कुण्डली ऊपर उठी है, वह देखने लायक है।

शिवाजी गणेशन मद्रास के जाने-माने अभिनेता हैं, जो उच्चस्तरीय अभिनेता हैं, तो श्रेष्ठस्तरीय दानवीर भी।

पाठक इस अभिनेता की जन्मकुण्डली का अध्ययन करें, नियम संख्या ३ स्पष्ट इसमें देखी जा सकती है। शुक्र स्व राशिस्थ है तथा बुध के साथ में है। लग्नेश शनि केन्द्र में है और मंगल की राशि पर होने से अत्यधिक बलवान है।

इनसे बात-चीत करने में ऐसा अनुभव होता है मानो एक स्व-जन के साथ बात कर रहे हैं।

राजकपूर जैसे अभिनेता कम होंगे जो न स्वयं अभिनय के कारण विदेशों में चर्चित रहा है, बल्कि आज भी नई पीढ़ी को ज्यादा

से ज्यादा अवसर देने में आगे रहता है।



नियम संख्या ४ इनकी जन्मकुण्डली में पाठक देख सकते हैं। लग्न में स्व-राशिस्थ चन्द्रमा के साथ राहु है तथा शुक्र भी स्वराशिस्थ होकर केन्द्र में स्थित है।

वास्तव में ही राजकपूर की जन्म-कुण्डली एक श्रेष्ठ जन्मकुण्डली कही जा सकती है।



मीनाकुमारी केवलमात्र अभिनेत्री ही नहीं थी, अभिनय की जीती-जागती मिसाल थी।

१ अगस्त १९३२ ई० में जन्म लेने वाली इस अभिनेत्री ने कम आयु में जो लाजवाब अभिनय किया है, वह उन्हें चिरायु बनाने के लिए पर्याप्त है।

नियम संख्या पांच यहाँ पूर्णतः लागू होती है। शुक्र बारहवें भाव में है तथा मंगल को साथ लिए हुए है, लग्नेश चन्द्रमा लग्न में है ही।

लगभग तीन साल पहले की घटना है, मैं एक निर्माता-निर्देशक के एयर कंडीशन्स कार्यालय में बैठा था, उस समय उन निर्माता ने एक संघर्षरत लड़के से परिचय कराया। पिता की मृत्यु हो चुकी थी, पर पिता का लाखों-करोड़ों का व्यवसाय फैला हुआ था, उसका मन उस व्यवसाय की अपेक्षा अभिनय में ज्यादा था, उसने जन्म-पत्रिका दिखाई आंखें डबडबा आईं, गला भर आया, बोला—

डॉ. साहिब ! मैं कल बम्बई छोड़ रहा हूं, संघर्ष करने में कसर नहीं रक्खी पर कहीं पटरी बैठती ही नहीं ।

जन्म कुण्डली में ग्रह पूर्णतः अभिनेता के थे, मैं बोला—मैं कहूंगा, वैसे करोगे ?

बोला—निस्सन्देह

मैं उसके आत्म-विश्वास पर दंग रह गया । मैंने कहा, तुम अभिनेता—श्रेष्ठ अभिनेता बनोगे, पर तुम अभिनय एवं व्यवसाय के बीच में फंस गए हो, कल जाकर पूरे व्यवसाय को बेच आओ, जो भी कीमत मिले ले लो ।

बहुत बड़ी जोखिम थी, बाप दादों का जमाया हुआ व्यापार व्यवसाय था, जिससे हजारों की आमदनी थी, अभिनय क्षेत्र में पांव टिके ही नहीं थे···विचार में पड़ गया ।

मैंने पूछा—क्या सोचने लग गए ?

बोला—सब बेच दूं···फैक्ट्री भी···फिर कुछ रुककर बोला—अच्छी बात है···और यह कह कर वह तीर की तरह कार्यालय से निकल गया ।

अगले पन्द्रह बीस रोज में औने-पौने मूल्य में सब बेच आया और अभिनय के क्षेत्र में ही कुछ कर गुजरना है यह दृढ़ रुख अपना लिया ।

आज वह माना हुआ हीरो है, उस व्यापार-व्यवसाय से कई गुना ज्यादा बैंक-बेलेन्स है । नौकर-चाकर हैं, कारें हैं, बंगले हैं और सुखमय जीवन है ।

श्रीमती नरगिस की जन्म कुण्डली में पाठक नियम संख्या छः देख सकते हैं । आज की बहुचर्चित नायिका हेमामालिनी की जन्म-कुण्डली में शुक्र स्वराशिस्थ होकर बुध के साथ है । मुमताज की जन्मकुण्डली में चन्द्र-राहु का परस्पर सम्बन्ध देखा जा सकता है,

विख्यात हालीवुड एक्ट्रेस मनरो के लग्न में शुक्र स्वराशि का चन्द्र बुध के साथ था, अभिनेता धर्मेन्द्र की कुण्डली में शुक्र बलवान होकर स्थित है । शत्रुघ्न सिन्हा की जन्मकुण्डली में राहु शुक्र का सम्बन्ध स्पष्ट देखा जा सकता है ।

इन सबकी ग्रह स्थितियाँ प्रबल हैं, भाग्योन्नति की तरफ अग्रसर हैं ।

सह कलाकार

नायक-नायिका के अतिरिक्त भी फिल्म में कई पात्र होते हैं जो कहानी की पूर्णता में सहायक होते हैं, इनके लिए भी वे ही ग्रहस्थितियाँ देखी जा सकती हैं जो नायक-नायिकाओं की जन्मकुण्डलियों में होती है ।

पर शुक्र या राहु या लग्नेश के क्षीणांश में होने के कारण उन्हें सह कलाकार बनकर ही सन्तोष करना पड़ता है ।

खलनायक अथवा खलनायिका

इनके लिए निम्न ग्रह संयोग विचारणीय है—

१. राहु-मंगल लग्न में हो ।
२. राहु मंगल शुक्र परस्पर केन्द्र में हो ।
३. शुक्र लग्न में हो तथा सप्तम भाव में चन्द्र राहु हो ।
४. मंगल केन्द्र में उच्च का या स्वराशि का होकर सूर्य के साथ हो ।

हास्य कलाकार

१. चन्द्र-बुध केन्द्र में हों ।
२. बुध-शुक्र छठे भाव में हों तथा राहु नवम भाव में हो ।
३. केतु लग्न में बुध के साथ हो ।

चरित्र कलाकार

१. गुरु लग्न में चन्द्रमा के साथ हो ।
२. शुक्र गुरु साथ में केन्द्र या त्रिकोण में हो ।
३. गुरु शुक्र सूर्य कहीं पर भी एक साथ हों ।

उपसंहार

फिल्म आज के जीवन का आवश्यक अंग बन गया है, समाज की मान्यताए बदल गई हैं। उच्च एवं प्रतिष्ठित घर के बच्चे इसमें काम करना अपना गौरव अनुभव करने लगे हैं। फिल्म में काम करना या सफल अभिनेता बनना हेय नहीं अपितु उच्चता का लक्षण माना जाने लगा है।

प्रत्येक वर्ष सैकड़ों नवयुवक नवयुवतियां भाग कर बम्बई जाते हैं, पर बिना पथ-प्रदर्शन के भटक कर वापिस घर लौटते हैं। पुरानी पीढ़ी को चाहिए कि वह नई पीढ़ी का मार्ग दर्शन करे, भावी जीवन को समझने के लिए ज्योतिष एक सशक्त माध्यम है। बच्चे की जन्मकुण्डली देखकर यह ज्ञात करें कि क्या उसकी कुण्डली में ऐसे ग्रह संयोग हैं कि वह इस क्षेत्र में सफल हो सकता है और यदि ऐसे योग हैं तो उसके राह में रुकावट मत बनिये अपितु उसे प्रोत्साहन दीजिए, कुछ कर बताने का मौका दीजिये।

आज की नई पीढ़ी सिनेमा जगत के ग्लैमर और चमक-दमक से प्रभावित है पर उसमें साहस नहीं, जहां चिपके हुए हैं उससे हट कर कुछ कर गुजरने का जोश नहीं, 'रिश्क' उठाने की क्षमता नहीं, समाज में अपने आपको प्रतिष्ठित करने की शक्ति नहीं···पर जड़ता मृत्यु है, आज ही अपनी जन्मकुण्डली टटोलिये···देखिये कि क्या उसमें फिल्म व्यवसाय से सम्बन्धित होने का पूर्ण योग है? किसी योग्य ज्योतिषी से परामर्श लीजिए···और यदि योग है तो इस संघर्ष स्थल में कूद पड़िए···कुछ करके बता दीजिए, हिम्मत आपके साथ है और आत्म-विश्वास आपका सहचर है तो विजय आपके हाथ में है, इसमें सन्देह नहीं।

॥ समाप्त ॥